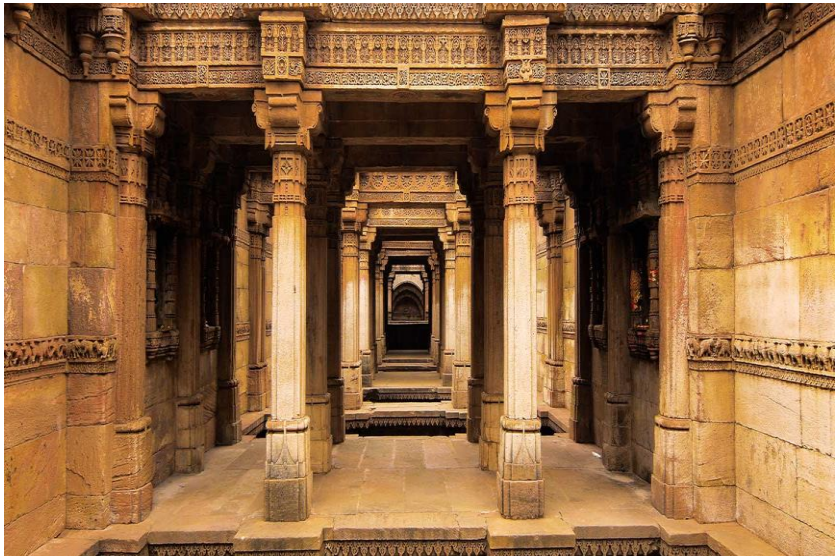
वर्ष : 2025-26
अंक- प्रथम

धरा गुर्जरी

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा – II)
गुजरात, अहमदाबाद

अडालज की बावड़ी

अडालज की बावड़ी (गुजराती : अडालजनी वाव) एक सीढ़ीदार कुँआ (बावड़ी) एक ऐतिहासिक और वास्तुशिल्प चमत्कार है, जो गुजरात के अडालज गाँव में है। यह वाव पाँच मंज़िला है और अष्टभुजाकार बना हुआ है। वास्तुकला का नायाब नमूना यह ढाँचा 16 स्तंभों पर खड़ा है। इसमें नक्काशीदार खंभे, दीवारें और पौराणिक कथाओं को दर्शाती मूर्तियां हैं। सूरज की रोशनी सीधा दीवारों पर सिर्फ़ थोड़े समय के लिए ही पड़ती है, इसीलिए बाहर से भीतर का तापमान 6 डिग्री कम रहता है। इसे मुख्य रूप से पानी की जरूरतों को पूरा करने, यात्रियों को विश्राम देने और एक आध्यात्मिक स्थल के रूप में बनाया गया था।

अडालज गाँव गांधीनगर जिले के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और गांधीनगर से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर है। अहमदाबाद से इसकी दूरी 18 किमी है। यह छोटा सा गाँव प्राचीन काल में 'दांडई देश' नाम से जाना जाता था। यह पहली मंज़िल पर लगे संमरमर के पत्थर पर संस्कृत में लिखे आलेख से मालूम होता है कि इस वाव का निर्माण 15वीं शताब्दी (1498-1499) में रानी रूदाबाई ने अपने पति राजा वीरसींह की स्मृति में करवाया था। इसलिये इसे **रूडाबाई का वाव** (गुजराती में : *रूडाबाईनी वाव*) भी कहते हैं। यह हिंदू-इस्लामिक वास्तुकला का एक बेहतरीन मिश्रण है।

धरा गुर्जरी परिवार

वर्ष: 2025-26 प्रथम अंक

प्रधान संरक्षक:

श्री रामावतार शर्मा, महालेखाकार

संरक्षक:

श्री सतीश नानाजी वासनिक, व. उपमहालेखाकर

संपादक:

श्रीमती बबिता, सहायक निदेशक (राजभाषा)

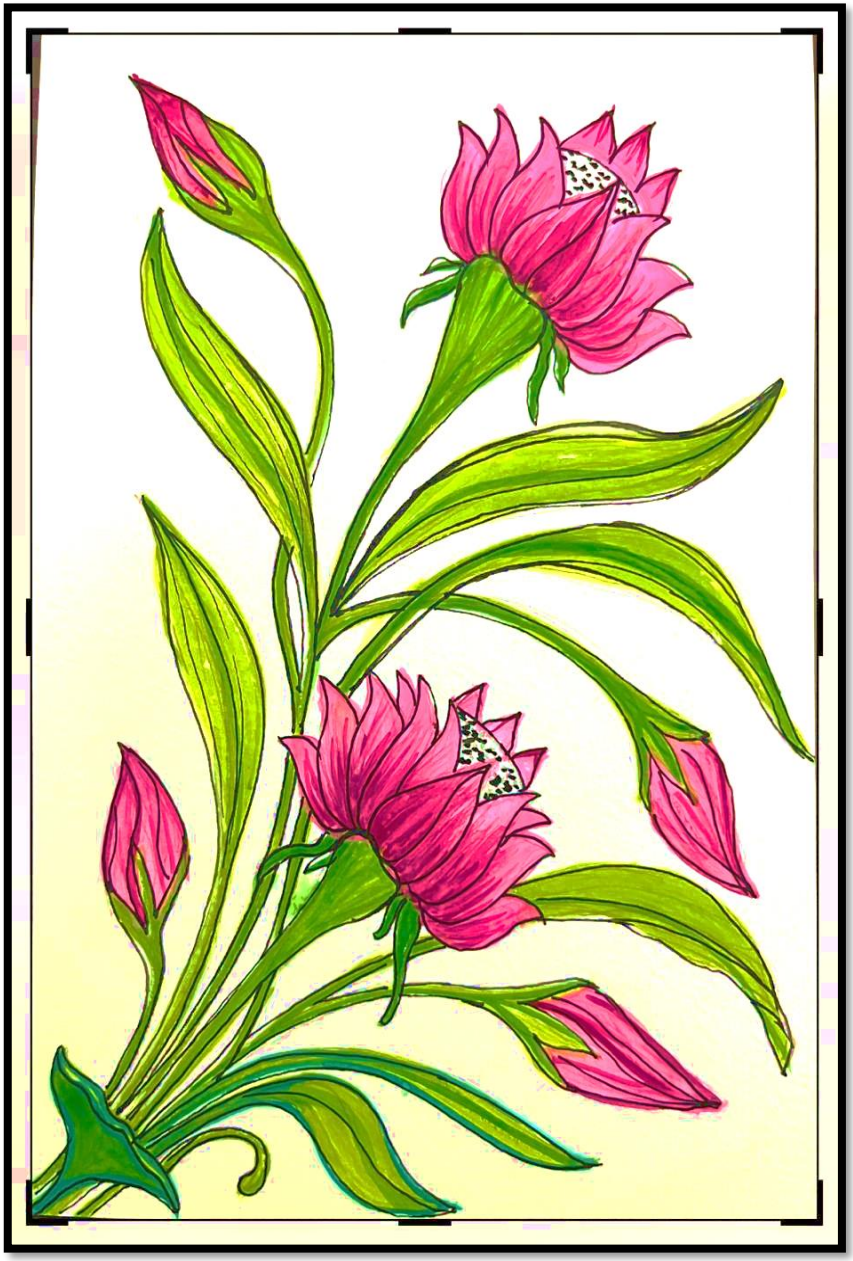
संपादक मंडल:

श्रीमती मोनिका दवे, व.ले.प.अ.
श्री संदीप बाजपेई, व.ले.प.अ.
श्री कमलेश कुमार वर्मा, व.ले.प.अ.

प्रकाशन सहयोग:

श्री ललित कुमार गुप्ता, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सुश्री हेमा प्रजापति, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री अनिल ओड़, डी.ई.ओ.

आवरण पृष्ठों के चित्र एवं विवरण - गुजरात टूरिज़्म से साभार



सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा निर्मित आलेखन

संपादकीय

सहायक निदेशक (राजभाषा) की कलम से

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद के कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" का वर्ष 2025-26 का प्रथम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

"धरा गुर्जरी" में हिंदी की रचनाओं के माध्यम से पत्रिका को गौरवान्वित करने वाले कार्यालय के सदस्यों ने अपने स्वरचित रचनाओं, संस्मरणों, विचारों, कविताओं के माध्यम से अपने अनुभवों व अपनी सृजनशीलता को पत्रिका में समाहित किया है।

मैं संपादक एवं संरक्षक मंडल की ओर से प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) कार्यालय के सदस्यों का धन्यवाद करते हुए आशा करती हूँ कि कार्यालय के कार्मिक भविष्य में भी अधिकाधिक संख्या में उत्कृष्ट स्वरचित रचनाएँ प्रदान करते रहेंगें और इस पत्रिका को उच्चतर, पठनीय, रुचिकर और हिंदी के विकास में अग्रसर बनाने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

अस्वीकरण - इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है जिन से संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रधान संरक्षक का संदेश



यह हर्ष का विषय है कि "धरा-गुर्जरी" का नवीन अंक प्रकाशित हो रहा है। प्रचीन काल से ही हिंदी हमारे देश में संवाद की प्रमुख भाषा रही है। किसी भी देश में राजभाषा का सम्मान उस भाषा को ही प्राप्त होता है जो देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली–समझी जाती है। इसीलिए संविधान सभा द्वारा हिंदी की महत्ता को देखते हुए 14 सितंबर,1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी न केवल हमारे देश अपितु विश्व के कई देशों में बोली व समझी जाती है। यह भारत सरकार की जन उपयोगी योजनाओं व कार्यक्रमों की जानकारी को जन-साधरण तक सुगमता से पहुँचाने का एस सशक्त माध्यम भी है।

इसी उद्देश्य के अनुसरण में कार्यालीन पत्रिका "धरा-गुर्जरी" का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है। कार्यालय के कार्मिकों के हिंदी में लगाव और कार्यशीलता में वृद्धि करने के उद्देश्य से पत्रिका में विभिन्न विषयों व रोचक जानकारी से संबंधित लेखों का प्रकाशन किया जाता रहा है।

मैं "धरा-गुर्जरी" पत्रिका के माध्यम से विभिन्न विषयों पर लिखित रचनाकारों के लेख पाठकों तक सुरुचिपूर्ण रूप से पहुँचाने के लिए पत्रिका के संपादन से जुड़े कार्मिकों के प्रयासों की प्रशंसा के साथ ही इसके उज्जवल भविष्य की कमाना करता हूँ।

श्री रामावतार शर्मा
प्रधान महालेखाकार एवं प्रधान संरक्षक "धरा –गुर्जरी"

वरिष्ठ उप महालेखाकार की कलम से



"धरा गुर्जरी" पत्रिका के नवीनतम अंक का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। जैसा कि हम जानते है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने सभी पहलुओं पर गहन विचार –विमर्श के पश्चात हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया था। हमारे देश की सभी भाषाओँ की अपने-अपने प्रान्तों में अहम भूमिका है लेकिन अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी ही वह भाषा है जो आम जन मानस के लिए संपर्क का माध्यम है। इसी भावना के साथ पत्रिका के वर्तमान अंक में हिन्दी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग करने हेतु कार्यालय के कार्मिकों से प्राप्त विशेष रचनाओं को "धरा-गुर्जरी" पत्रिका के माध्यम से आपके सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि "धरा-गुर्जरी" के इस अंक में प्रकाशित लेख रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान करेंगे और इसकी सामग्री कार्मिकों के साथ-साथ सभी हिन्दी प्रेमिओं के लिए भी उपयोगी साबित होगी। मैं पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य की कमाना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

श्री सतीश नानाजी वासनिक,
वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ सं.
1.	भारतीय नारी के मुक्तिदाता : डॉ. भीमराव अंबेडकर	श्री सतीश नानाजी वासनिक (व. उप महालेखाकार /प्रशा.)	लेख	1
2.	रेडिओ वार्ता – "खुद के व्यक्तित्व में माँ को तलाशती मैं	श्रीमती विकल्पा विश्वकर्मा (उप महालेखाकार)	लेख	6
3.	अधिगम संबंधी विकार	श्रीमती बबिता (सहायक निदेशक (राजभाषा)	लेख	12
4.	डिजिटल युग में हिंदी की बदलती भूमिका	सुश्री हेमा प्रजापति (क. अनुवाद अधिकारी)	लेख	14
5.	साधना	श्रीमती विद्या अय्यर (पर्यवेक्षक)	लेख	22
6.	उत्तराखंड के जागेश्वर धाम और कैंची धाम की यादें	श्री हिमांशु एस.वर्मा (सहायक पर्यवेक्षक)	लेख	24
7.	जनरेशन ज़ेड	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	लेख	36
8.	राजभाषा हिंदी स्थापना प्रयास और प्रगति	श्री सिद्धार्थ पाठक (आशुलिपिक)	लेख	41
9.	यादे बीते समय की-चौपाल	श्री जयन्त (स.ले.प.अ.)	लेख	52
10.	समाज में नारी का स्थान	श्री हरि सिंह (लेखापरीक्षक)	लेख	55

11.	मीटिंग: जहाँ आपत्तियाँ कम और चाय ज़्यादा गरम होती है	श्री दिपेश कुमार गुप्ता (व.ले.प.)	लेख	60
12.	मेरी घृष्णेश्वर यात्रा	श्री अमनदीप (लेखापरीक्षक)	लेख	67
13.	वक्त बलवान भी है और मूल्यवान भी	श्री नरेश सिंह (स.ले.प.अ.)	लेख	72
14.	खुद से मुलाकात	श्री अनिल ओड (डी.ई.ओ.)	लेख	78
15.	विस्मृति के साये में	श्री ऋषव कुमार मिश्रा (लेखापरीक्षक)	लेख	84
16.	एक ख़त पिता के नाम	श्रीमती बबिता (सहायक निदेशक-राजभाषा)	कविता	90
17.	शेयर मार्केट	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	कविता	91
18.	पिता	श्रीमती विद्या अय्यर (पर्यवेक्षक)	कविता	94
19.	आज नहीं कल से पक्का	श्री दिपेश कुमार गुप्ता (व.ले.प.)	कविता	96
20.	अंत अभी बाकी है	सुश्री मीनाक्षी कुमारी, (बहन श्री ऋषव कुमार मिश्रा (लेखापरीक्षक)	कविता	98
21.	प्यासी धरती की पुकार	श्री अनिल ओड (डी.ई.ओ.)	कविता	100

22.	चले जा रहे है	श्री चिंटू एम. गुप्ता (व.ले.प.)	कविता	102
23.	नारी ना होती तो क्या होता	श्री जयन्त (स.ले.प.अ.)	कविता	103
24.	जीवन की सीख	श्रीमती ममता, (पत्नी श्री राहुल वर्मा (स.ले.प.अ)	कविता	104
25.	बेटियों की जिंदगी...	श्रीमती लक्ष्मी कुमारी, पत्नी श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	कविता	105
26.	मेरा भारत: मेरा अभिमान	श्री नरेश सिंह (स.ले.प.अ.)	कविता	110

भारतीय नारी के मुक्तिदाता : डॉ. भीमराव अंबेडकर



श्री सतीश नानाजी वासनिक
(व. उप महालेखाकार)

डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय समाज में नारी मुक्ति के प्रबल समर्थक थे, उनका मानना था कि किसी समाज की प्रगति का मूल्यांकन महिलाओं की स्थिति से किया जाना चाहिए। उन्होंने नारी अधिकारों को प्राप्त कराने के लिए आजीवन संघर्ष किया। समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए डॉ. अंबेडकर जी ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं- उन्होंने शिक्षा, संपत्ति के अधिकार और संवैधानिक सुरक्षा के माध्यम से महिलाओं को उच्च वर्ग, पितृसत्ता और रूढ़िवादी परंपराओं से मुक्ति दिलाने के लिए व्यापक संघर्ष किया।

उन्होंने महिलाओं के लिए किए गए अपने संघर्ष के विषय में स्वंम कहा था- "मैं महिलाओं की उन्नति और मुक्ति के लिए लड़ने वाला महान सेनानी हूँ। मैंने स्त्री के स्थान को बढ़ाने के लिए पर्याप्त संघर्ष भी किया है। जिस पर मुझे गर्व है।"

डॉ. भीमराव अंबेडकर के नारी मुक्ति की अवधारणा के अनेक पहलु व स्तंभ रहे हैं जिनमे से मुख्य स्तंभ निम्न हैं:

- **शिक्षा और सशक्तिकरण:** डॉ. अंबेडकर का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा के बिना नारी मुक्ति असंभव है। उन्होंने महिलाओं को "शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो" का नारा दिया। अपने समाचार पत्रों 'मूकनायक' और 'बहिष्कृत भारत' के माध्यम से उन्होंने विशेष रूप से दलित महिलाओं के शोषण को उजागर किया। महिलाओं को शिक्षित व जागरूक करने के लिए डॉ. अंबेडकर जी ने अभूतपूर्व प्रयास किए। उन्होंने दलित महिलाओं के लिए अछूतोद्धार आन्दोलन किया और बहिष्कृत हितकारिणी सभा की

स्थापना की जिसका उदेश्य अस्पृश्यता निवारण व दलित बस्तियों में स्कूल तथा छात्रवासों की स्थापना करना था।

- **हिंदू कोड बिल (Hindu Code Bill):** महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिलाने के उदेश्य से उन्होंने हिंदू कोड बिल का प्रस्ताव रखा था। इस बिल को चार भागों में बाँट दिया गया –

1. हिन्दू बिबाह अधिनियम 1955,
2. हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956,
3. हिन्दू अल्प वयस्कता और संरक्षकता अधिनियम 1956,
4. हिन्दू दत्तक ग्रहण और जीवन-निर्वाह अधिनियम 1956

इसके माध्यम से उन्होंने: बहुविवाह प्रथा को समाप्त कर एक-विवाह को अनिवार्य बनाया। महिलाओं को तलाक लेने और संपत्ति में हिस्सा लेने का अधिकार दिलाने की वकालत की। बच्चा गोद लेने का समान अधिकार प्रदान किया। इन अधिकारों ने भारतीय नारी को और अधिक सशक्त बनाया।

- **संवैधानिक और कानूनी अधिकार:** डॉ.अंबेडकर ने भारतीय समाज में स्वतंत्रता और समानता स्थापित करने के उद्देश्य से स्वतंत्र भारत का संविधान निर्मित किया। संविधान निर्माता के रूप में, उन्होंने अनुच्छेद 14, 15 और 16 के तहत लैंगिक असमानता को समाप्त कर पुरुषों के समान अधिकार सुनिश्चित किए। उन्होंने महिलाओं के लिए प्रसूति अवकाश जैसे श्रम अधिकार भी सुनिश्चित किए। सार्जनिक रोजगार में अवसर की समानता प्रदान की। जो मूल अधिकार पुरुषों के लिए हैं वही समान अधिकार महिलाओं के लिए भी सुनिश्चित किए।

- **आर्थिक स्वतंत्रता:** डॉ.अंबेडकर ने इस पर बल दिया कि –'जब तक महिलाओं को सरकारी नौकरियों में नहीं लिया जाता तब तक उनका शिक्षा के प्रति अनुराग नहीं बढ़ेगा'। उनका मानना था कि आर्थिक आत्मनिर्भरता

ही नारी को समाज में सम्मानजनक स्थान दिला सकती है। डॉ.अंबेडकर का तर्क था कि समाज में अपनी आवाज बुलंद करने के लिए महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता अनिवार्य है। उन्होंने पुरूषों और महिलाओं दोनों के लिए "समान काम के लिए समान वेतन" की वकालत की। वर्ष 1938 में उन्होंने महिलाओं के स्वास्थ्य और बेहतर भविष्य के लिए जन्म नियंत्रण की सुविधाओं की सिफारिश की थी।

- **सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष:** डॉ.अंबेडकर ने देवदासी प्रथा और महिलाओं को प्रभावित करने वाली अन्य सामाजिक कुरीतियों का कड़ा विरोध किया। भारतवर्ष में महिलाओं व दलितों की स्थति को धर्म ने समय समय पर प्रभावित किया है। डॉ.अंबेडकर ने इसके निराकरण के लिए महिला वर्ग को अपना संगठन बानने और अपने अधिकारों की रक्षा करने का संकल्प लेने व महिला संगठन बनाकर महिलाओं को अपने अन्दोलनों का नेतृत्व स्वयं करने के लिए प्रेरित किया।

- **महिला सशक्तिकरण के अन्य क्षेत्र:** डॉ.अंबेडकर सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारतीय गणतंत्र के पहले दिन से ही महिलाओं को वोट देने का समान अधिकार मिले। उनका मानना था कि शासन में महिलाओं की भागीदारी के बिना सच्चा लोकतंत्र असंभव है। उन्होंने मानव कार्य दिवस को 14 घंटे से घटाकर 8 घंटे करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं को उपहार या विरासत में मिली संपति का पूर्ण मालिक माना गया,न केवल सीमितउपयोगकर्ता।

- **महिलाओं के लिए उपदेश:** महिलाओं को अपने बलबूते पर गाँव से लेकर शहर तक नारी संगठन बनाकर अपने हक़ के लिए संघर्ष करके देश में समता स्थापित करने का प्रयास करती रहें। "साफ –सुथरा रहना सिखों",सभी दुर्गुणों से दूर रहो। अपने बच्चों को शिक्षा दो, उनमे उच्च ध्येय स्थापित करो, उनके मन से हीनता की भावना निकल दो।उनके विवाह शीघ्र न करो,

परिवार मर्यादित रखो। विवाह छोटी उम्र में न करो। बच्चो को सुस्थिति में रखना माता –पिता का दायित्व है। विवाह के पश्चात् स्त्री को अपने पति के साथ उसकी दासी नहीं बल्कि उसकी सहयोगी बनना।

डॉ.अम्बेडकर के महिलाओं के बारे में कुछ प्रभावशाली और प्रमुख विचार:-

- **प्रगति का पैमाना:** मैं किसी समुदाय की प्रगति को उस प्रगति की डिग्री से मापता हूँ जो महिलाओं ने हासिल की है। महिलाओं की प्रगति से समुदाय की प्रगति मापते थे और उन्होंने कहा कि जीवन लंबा नहीं, महान होना चाहिए।
- **शिक्षा और संगठन का आह्वान:** "शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो"—सामाजिक सशक्तिकरण का मूलमंत्र हैं। महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए स्वयं आवाज उठानी चाहिए।
- **स्वतंत्रता और आत्मसम्मान:** "मैं ऐसे धर्म को मानता हूं जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाए"। “एक सुरक्षित और प्रगतिशील समाज वाही है जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है और उन्हें पुरुष के समान अधिकार प्राप्त होते है।"यदि आप एक सम्मानजनक जीवन जीने में विश्वास करते हैं, तो आप आत्म-सहायता में विश्वास करते हैं, जो सबसे अच्छी मदद है"।
- **अधिकारों के प्रति जागरूकता**: “शादी एक बंधन नहीं बल्कि एक साझेदारी होनी चाहिए, जहाँ महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने का पूरा हक़ हो”। "अधिकार छीने नहीं, बल्कि वसूले जाते हैं"।
- **बेटियों की शिक्षा पर जोर:** ‘यदि आप एक लड़के को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं लेकिन यदि आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं तो आप पुरे परिवार को शिक्षित करते है। प्रत्येक महिला

वर्ग की समाजिक प्रगति और उत्थान के लिए वो शिक्षा को सर्वोपरि मानते थे।



डॉ.अंबेडकर ने स्पष्ट किया था कि जब तक महिलाएं शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होंगी,तब तक वे सामाजिक दासता से मुक्त नहीं हो सकतीं। वे महिलाओं को अपनी समस्याओं के लिए निडर होकर लड़ने और सामाजिक बुराइयों को चुनौती देने के लिए प्रेरित करते थे। वास्तव में डॉ.अंबेडकर ने दृढ़ निश्चय करके अपने संकल्प को आजीवन निभाया और भारतीय नारी को परम्परागत सोच से,बन्धनों से सच्चे अर्थो में मुक्ति दिलाई, उसी कारण आज भारतीय स्त्री स्वाभिमानी और स्वावलंबी जीवन जी रही है।

रेडिओ वार्ता – "खुद के व्यक्तित्व में माँ को तलाशती मैं"



श्रीमती विकल्पा विश्वकर्मा
(उप महालेखाकार)

बहुत साल पहले, अपने स्कूल के दिनों में, जब मैं दिनभर की पढ़ाई, खेलकूद और न जाने कितनी गतिविधियों के बाद थकी-हारी घर लौटती थी, तब माँ ने पहले से ही '***विविध भारती*** लगा रखा होता था। '***सखी-सहेली***' कार्यक्रम चल रहा होता, जिसमें दो सहेलियाँ देश-दुनिया के खान-पान, सिनेमा, संस्कृति और परंपराओं पर बड़ी आत्मीयता से बातें करती थीं। उन समृद्ध चर्चाओं से मन भर जाता था और माँ के हाथ के स्वादिष्ट भोजन से पेट।

इसीलिए जब इस वर्ष ***Mother's Day*** के अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित '***साबरमती रेडिओ*** के एक रेडिओ कार्यक्रम के सीधे प्रसारण में भाग लेने का निमंत्रण मिला, तो बचपन की वही यादें एक बार फिर ताज़ा हो गईं। उद्देश्य था लोगों के जीवन में positivity और connectedness का संदेश पहुँचाना।

ऐसा अनुभव मेरे लिए बिल्कुल नया था। रेडियो की दुनिया से मेरा परिचय अब तक केवल ***Lage Raho Munna Bhai*** और ***Tumhari Sulu*** जैसी फिल्मों के माध्यम से ही था। रिकॉर्डिंग एक छोटे-से लगभग साउंड प्रूफ कमरे में हुई, जहाँ फुसफुसाहट भी साफ़ सुनाई देती थी। हेडफोन लगाकर अपनी ही आवाज़ सुनते हुए बातचीत करना अपने आप में एक अनोखा अनुभव था।

रेडिओ कार्यक्रम की संचालिका ने मुस्कुराकर मेरा स्वागत किया। चेहरे की हल्की झुर्रियाँ और आत्मीय मुस्कान उनके अनुभव की कहानी कह रही थीं।

बातचीत के दौरान पता चला कि वे एक सेवानिवृत्त विज्ञान शिक्षिका हैं और पिछले कुछ वर्षों से स्वेच्छा से यह सेवा कर रही हैं। उन्होंने लगभग स्वयं ही इस कला को सीखा और निखारा था।

मैं और मेरी माँ कभी भी पूरी तरह एक जैसी नहीं रहीं। हमारी सोच और काम करने के तरीके हमेशा अलग रहे। लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ रही है, मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे व्यक्तित्व का कितना बड़ा हिस्सा उन्हीं से आया है। उनके कई गुण, आदतें और जीवन को देखने का नज़रिया अनजाने में मुझमें उतर आया है। माँ का जीवन मुझे हमेशा एक नदी जैसा लगा है—युवावस्था और विवाह के शुरुआती वर्षों में तेज़, चंचल और संघर्षों से भरा हुआ; फिर धीरे-धीरे विस्तृत, शांत और गहरा होता हुआ। एक ऐसी नदी जो अपने किनारों को सींचती है, जीवन देती है, पोषण करती है और बिना किसी अपेक्षा के बहती रहती है। आज अपने जीवन के इस पड़ाव पर वे अनुभव, परिपक्वता और स्नेह का अद्भुत संगम हैं। उनसे होने वाली लगभग हर बातचीत कोई न कोई सीख दे जाती है, अक्सर बिना किसी उपदेश के।

जो बातचीत एक रेडियो इंटरव्यू के रूप में शुरू हुई थी, वह धीरे-धीरे एक पुरानी सहेली के साथ हुई दिल की बात जैसी लगने लगी।

रेडिओ संचालिका ने पूछा: ***"आज एक माँ का दिन है तो बेटी का दिन भी है। आपके नज़रिए में माँ का दिन केवल एक दिन होता है या फिर हर दिन किसी न किसी रूप में माँ का दिन हो सकता है?"***

मेरा उत्तर था: प्रत्येक दिन Mother's Day है। मेरी सुबह माँ से बात करके शुरू होती है और अक्सर दिन का अंत भी उन्हीं से बात करके होता है। मैंने क्या खाया, क्या पहना, दिन कैसा रहा या मन कैसा है—ये छोटी-छोटी बातें उनसे साझा करना मुझे एक अलग ही सुकून देता है।उनसे बात करके हर दिन यह भरोसा मिलता है कि चाहे कुछ भी हो जाए, दुनिया में एक व्यक्ति ऐसा है जो हमेशा मेरे साथ खड़ा है।

रेडिओ संचालिका ने आगे पूछा: ***"Working Mother और Homemaker Mother, दोनों की अपनी-अपनी चुनौतियाँ होती हैं। आप इन्हें किस प्रकार देखती हैं?"***

मेरा उत्तर था कि : समय के साथ महिलाओं की भूमिकाएँ भी बदली हैं। जब महिलाएँ घर से बाहर निकलकर अपने करियर और परिवार दोनों को साथ लेकर चलने लगीं, तब एक माँ की भूमिका भी और व्यापक हो गई। मेरी माँ एक full-time homemaker थीं। उस समय घर की जिम्मेदारियाँ अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप से विभाजित थीं। आज जब एक महिला को घर और कार्यस्थल—दोनों की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं, तो उसके लिए एक मजबूत *support system* होना बेहद आवश्यक है। यहाँ मैं घरेलू सहायिकाओं का विशेष उल्लेख करना चाहूँगी। वे सुबह जल्दी उठकर अपने घर का काम करती हैं, फिर कई घरों में जाकर दूसरों की मदद करती हैं। उनके अनुशासन, मेहनत और dedication को अक्सर उतनी पहचान नहीं मिलती, जितनी मिलनी चाहिए।

रेडिओ संचालिका ने फिर पूछा: ***"अपने बच्चे की ज़िंदगी में एक माँ की भूमिका किस उम्र तक रहती है?"***

मेरा उत्तर था : ***"मेरे लिए माँ की भूमिका ageless and timeless है।"*** वह जीवन के हर पड़ाव के साथ अपना स्वरूप बदलती रहती है। जब हम छोटे होते हैं, तब वह हमारी nurse होती है। स्कूल के दिनों में हमारे टिफिन, यूनिफॉर्म और दिनचर्या का ध्यान रखती है। किशोरावस्था में हमारे मन की उलझनों को समझने की कोशिश करती है। कॉलेज के दिनों में वही माँ हमें उड़ने की आज़ादी देती है और साथ ही हमारा सबसे मजबूत सहारा बनी रहती है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान वही रोज़ पूछती है—खाना खाया या नहीं, पानी पिया या नहीं, पर्याप्त नींद ली या नहीं—और हर दिन हमारा हौसला बढ़ाती है। आज, एक विवाहित और कामकाजी

महिला होने के नाते, मैं अपनी माँ को सिर्फ माँ के रूप में नहीं देखती। **वह मेरी *best friend*, *mentor* और सबसे भरोसेमंद *support system* हैं। वह हमेशा मेरे जीवन की '*North Star*' रही हैं।**

रेडिओ संचालिका: ***"जीवन के किस पड़ाव पर आपको यह एहसास हुआ कि 'माँ, अगर तुम न होतीं तो मैं, मैं न होती'?"***

मेरा जवाब था : बचपन में मैं अपने पिता से बहुत प्रभावित थी। उनकी बुद्धिमत्ता, जिज्ञासा और आत्मविश्वास मुझे हमेशा आकर्षित करते थे। रक्षा मंत्रालय में उनकी सेवा और उनके व्यक्तित्व ने मुझे सरकारी सेवा में आने की प्रेरणा दी। लंबे समय तक मुझे लगता रहा कि मेरे व्यक्तित्व को आकार देने में मेरे पिता ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ी और रिश्तों को समझने की मेरी क्षमता विकसित हुई, मुझे एहसास हुआ कि मेरे भीतर की resilience, empathy, patience और जीवन की अनिश्चितताओं का सामना करने की क्षमता माँ की ही देन है। आज मैं अपने भीतर जिन गुणों को सबसे अधिक महत्व देती हूँ, उनमें से अधिकांश माँ का ही प्रतिबिंब हैं।

रेडिओ संचालिका आगे पूछा: *"माँ के साथ बिताया गया कोई यादगार पल हमारे श्रोताओं के साथ साझा करें।"*

मेरा उत्तर: मुझे अपने शहर जबलपुर की गर्मियाँ आज भी याद हैं। हैंडपंप और कुओं से पानी भरना, ढेर सारे पके हुए आम खाना और नानी के घर भाई-बहनों के साथ मीठी चाय पीना—वे छुट्टियाँ जीवन के सबसे सुंदर दिनों में से थीं। हाल ही में हमने अपनी नानी को खो दिया।जो मेरे लिए बेहद दु:खद पल रहे। आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो लगता है कि माँ और नानी के रिश्ते को इतने करीब से देख पाना मेरे जीवन का सौभाग्य था। उस रिश्ते ने मुझे धैर्य, दूरी के बावजूद भावनात्मक रूप से जुड़े रहने और अपने प्रियजनों को हमेशा अपनी प्रार्थनाओं में रखने का महत्व सिखाया।

एक और याद मेरे लिए बेहद खास है। सरकारी सेवा में आने के बाद पहली बार मैं माँ को उन यात्राओं पर साथ ले जा सकी, जिनकी योजनाएँ वर्षों से बनती औरकिसी न किसी कारण से टलती रही थीं। मसूरी, हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून और शिमला जैसी जगहों पर उनके साथ यात्रा करना मेरे जीवन के सबसे सुखद अनुभवों में से एक रहा है। नए स्थानों को देखकर उनके चेहरे पर जो खुशी दिखाई देती थी, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है।

रेडिओ संचालिका ने आगे प्रश्न किया : ***"जब भी आप माँ बनेंगी, तो अपने बच्चों को कौन-से जीवन-मूल्य सिखाना चाहेंगी?"***

मेरा उत्तर था : सबसे पहले मैं उन्हें ***"दृढ़ता"(resilience)*** **सिखाना चाहूँगी** । दुनिया बहुत तेज़ी से बदल रही है और आने वाली पीढ़ियों के सामने चुनौतियाँ भी हमसे बिल्कुल अलग होंगी। ऐसे में परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने और लगातार सीखते रहने की क्षमता उन्हें आगे बढ़ने की शक्ति देगी। दूसरा, मैं चाहूँगी कि उनमें environment-friendly जीवनशैली की समझ हो। हमारे माता-पिता की पीढ़ी में sustainability कोई अलग से सिखाई जाने वाली चीज़ नहीं थी, बल्कि जीवन का स्वाभाविक हिस्सा थी। कपड़ों का पुनः उपयोग, कपड़े का थैला साथ रखना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना और कम से कम अपशिष्ट उत्पन्न करना—ये सब सामान्य व्यवहार थे। आज **उपभोक्तावाद (consumerism)** के इस दौर में यह और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है, लेकिन उतना ही आवश्यक भी।और सबसे महत्वपूर्ण—मैं चाहूँगी कि वे दयालु बनें। दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें और साथ ही अपनी भावनाओं और आवश्यकताओं को भी समझें।

बातचीत आगे भी जारी रही और कब एक घंटे का समय बीत गया पता ही नहीं चला। स्टूडियो से बाहर निकलते समय मैं केवल motherhood के

बारे में नहीं, बल्कि माँ बेटी के रिश्तों और प्रेम के उन शांत रूपों के बारे में भी सोच रही थी, जो धीरे-धीरे हमारे व्यक्तित्व को आकार देते हैं।

मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि माँ के साथ यह सफ़र अभी आगे भी बहुत वर्षों तक चलता रहे और हम सब, अपनी महत्वाकांक्षाओं और उपलब्धियों के बीच,उस "कोमलता,सौम्यता और करुणा (softness, gentleness & compassion" को कभी न खोएँ, जिसे माताएँ इतनी सहजता से इस दुनिया में लेकर आती हैं।



अधिगम संबंधी विकार (Learning disorders)



श्रीमती बबिता
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अधिगम अथवा सीखने से जुड़ी समस्याओं के कारण बच्चे को अक्सर पढ़ने, लिखने या आसान गणित करने में मुश्किल होती है। किसी बच्चे को सीखने से जुड़ी कोई समस्या है या नहीं इसके लक्षणों का पता लगाना मुश्किल हो सकता है । कुछ बच्चों में यह समस्या काफ़ी समय से मौजूद होती है, लेकिन इसका पता बाद में चलता है। इन बच्चों को स्कूल में इतनी ज़्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ता है कि उनका आत्मविश्वास और सफल होने की इच्छा-शक्ति कम हो जाती है।

मुख्य अधिगम संबंधी विकारों (Learning Disorders) की सूची:
• डिस्लेक्सिया (Dyslexia): पढ़ने, शब्दों को पहचानने और वर्तनी (spelling) से संबंधित विकार।
• डिसग्राफिया (Dysgraphia): लिखने से संबंधित विकार, जिसमें खराब लिखावट, वर्तनी की त्रुटियां और विचारों को कागज़ पर उतारने में कठिनाई होती है।
• डिसकैलकुलिया (Dyscalculia): गणितीय गणना करने, संख्याओं को समझने और समय/पैसों का प्रबंधन करने में कठिनाई।
• ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (Auditory Processing Disorder - APD): कानों द्वारा सुनी गई आवाज़ों को मस्तिष्क द्वारा सही ढंग से संसाधित न कर पाने की समस्या।

• लैंग्वेज प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (Language Processing Disorder): बोले गए शब्दों के अर्थ को समझने या व्यक्त करने में कठिनाई।
• नॉन-वर्बल लर्निंग डिसेबिलिटी (Non-verbal Learning Disabilities): अशाब्दिक संकेतों, जैसे शारीरिक भाषा (body language), सामाजिक संकेतों या स्थानिक संबंधों (spatial relationships) को समझने में परेशानी।
• डिस्प्रेक्सिया (Dyspraxia/Sensory Integration Disorder): शारीरिक समन्वय (coordination), संतुलन और सूक्ष्म मोटर कौशल (fine motor skills) में कठिनाई।

इसलिए, माता-पिता के साथ साथ अध्यापकों के लिए सीखने से जुड़ी समस्याओं के लक्षणों को जानना और समझान आवश्यक है। माता –पिता जितनी जल्दी इन लक्षणों को पहचान लेंगे, उतनी ही शीघ्रता से अपने बच्चे को समझेंगे और स्कूल में अध्यापकों से भी अपने बच्चे से जुडी समस्याओं पर सार्थक बात कर उनकी समस्याओं का निदान करने में सहायक होंगे तथा बच्चे के सफल होने में सहायता कर पाएँगे। इस संबंध में अधिगम संबंधी कुछ विकार निम्नप्रकार हैं :-

उपरोक्त विकारों को जानने और समझने के साथ साथ सभी माता –पिता व अध्यापकों को बच्चे की योग्यता और सामर्थ्य को जानने और समझने की आवश्यकता है। हर बच्चा अलग होता है हर बच्चे की सोचने और समझने की क्षमता अलग होती है कभी भी अपने बच्चे की तुलना किसी भी बच्चे से नकारात्मक रूप में ना करें सकारात्मक ढंग से बच्चे को प्रोत्साहित करने का प्रयास करें। बच्चे के साथ प्रेम और स्नेह के साथ किया गया व्यवहार हर समस्या का समाधान कर सकता हैं।

डिजिटल युग में हिंदी की बदलती भूमिका



सुश्री हेमा प्रजापति
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

आज का युग डिजिटल युग है जिसने मानव जीवन के लगभग हर पहलु को गहरे रूप में प्रभावित किया है और भाषा भी इससे अछूती नहीं रही। हिंदी, जो हमारे देश में सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषाओं में से एक है, जो डिजिटल युग में एक अनूठे स्वरुप में हमें दिखाई देती है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, एक भाव है -जो जनमानस की आत्मा में बसी है। वर्षों तक हिंदी ने पत्र, पुस्तकों, संवादों और वाणी के माध्यम से अपने अस्तित्व को संजोया, लेकिन जैसे-जैसे संसार डिजिटल युग की ओर अग्रसर हुआ, हिंदी भी अपने रूप, माध्यम और प्रसार में परिवर्तन अनुभव करने लगी।

आज हिंदी केवल काग़ज़ों तक सीमित नहीं, बल्कि की-बोर्ड, स्क्रीन, एप्लीकेशन और सोशल मीडिया के माध्यम से तकनीक के कंधों पर सवार होकर आगे बढ़ रही है। इंटरनेट की शुरुआत के साथ, हिंदी साम्रगी का प्रसार पहले की तुलना में कही अधिक व्यापक हो गया है। बीते वर्षों में जब दुनिया डिजिटल दिशा में तीव्र गति से अग्रसर हुई, तब हिंदी भाषा की भूमिका भी मात्र संवाद तक सीमित न रहकर तकनीक और नवाचार की दिशा में विस्तार लेने लगी। डिजिटल युग ने हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की एक नई आशा और अवसर प्रदान किया है।

डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को एक नई उड़ान दी है। कभी जो भाषा गांव, कस्बों और स्कूलों तक सीमित थी, वह आज यूट्यूब चैनल्स, ब्लॉग्स, ऑनलाइन समाचार पोर्टलों और सोशल मीडिया पर व्यापक रूप में छाई हुई है। इंटरनेट के प्रसार के साथ हिंदी भाषा का उपयोग भी तेजी से बढ़ा है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है और इनमें से बड़ी संख्या हिंदी भाषी लोगों की है। इस कारण इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की मांग भी बढ़ी है। आज हिंदी में समाचार वेबसाइटें, ब्लॉग, ई-पुस्तकें, ऑनलाइन पत्रिकाएं, शैक्षिक सामग्री और विभिन्न प्रकार की जानकारी आसानी से उपलब्ध है। गूगल और अन्य सर्च इंजनों ने भी हिंदी को समर्थन देकर इसे डिजिटल दुनिया में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। अब उपयोगकर्ता हिंदी में खोज कर सकते हैं, हिंदी में पढ़ सकते हैं और हिंदी में अपनी सामग्री साझा भी कर सकते हैं।

सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा के प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे मंचों ने आम लोगों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया है। पहले लेखन और प्रकाशन का कार्य सीमित लोगों तक ही था, लेकिन अब कोई भी व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों और रचनाओं को लाखों लोगों तक पहुंचा सकता है। सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी में कविताएं, कहानियां, लेख, विचार और सूचनाएं बड़ी तेजी से साझा की जाती हैं। इससे हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। आज हिंदी **"जन की जुबान"** बन चुकी है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी में व्यंग्य, कविता, शायरी, विचार और राजनीतिक टिप्पणियाँ दिनों दिन लोकप्रिय हो रही हैं।

डिजिटल युग में हिंदी भाषा के स्वरूप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन “हिंग्लिश” के रूप में देखने को मिलता है। हिंग्लिश हिंदी और अंग्रेज़ी के मिश्रण से बनी

भाषा है, जिसमें हिंदी शब्दों को अंग्रेज़ी लिपि में लिखा जाता है या हिंदी और अंग्रेज़ी शब्दों का एक साथ प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में लोग अक्सर लिखते हैं—"आज बहुत busy हूँ", "कल meeting है", "आज mood off है" आदि। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से सोशल मीडिया और मैसेजिंग ऐप्स में अधिक दिखाई देती है। कुछ लोग इसे हिंदी की शुद्धता के लिए चुनौती मानते हैं, जबकि कुछ इसे भाषा के विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया मानते हैं।

डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल पुस्तकालयों ने ज्ञान प्राप्ति को अधिक सरल और सुलभ बना दिया है। हिंदी भाषा में भी बड़ी मात्रा में शैक्षिक सामग्री उपलब्ध होने लगी है। यूट्यूब, ऑनलाइन कोर्स और शैक्षिक वेबसाइटों के माध्यम से विभिन्न विषयों की जानकारी हिंदी में दी जा रही है। इससे उन छात्रों को विशेष लाभ हुआ है जो अंग्रेज़ी में सहज नहीं हैं। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी भाषी छात्रों के लिए शिक्षा के नए अवसर प्रदान किए हैं।

सरकार द्वारा ई-गवर्नेंस की योजनाओं के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों को डिजिटल रूप दिया जा रहा है। सरकारी वेबसाइटें, ऑनलाइन सेवाएं और डिजिटल दस्तावेज अब हिंदी में भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इससे आम नागरिकों के लिए सरकारी सेवाओं तक पहुंच अधिक आसान हो गई है। हिंदी के माध्यम से सरकारी योजनाओं और सूचनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचाया जा सकता है। इस प्रकार प्रशासनिक क्षेत्र में भी हिंदी की भूमिका मजबूत हो रही है।

डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य को भी एक नया मंच प्रदान किया है। पहले साहित्यिक रचनाओं को प्रकाशित कराने के लिए पत्र-पत्रिकाओं या

प्रकाशकों पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन अब ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाओं और सोशल मीडिया के माध्यम से लेखक सीधे पाठकों तक पहुंच सकते हैं। ई-बुक और ऑडियोबुक के माध्यम से साहित्य का प्रसार तेजी से हो रहा है। इससे नए लेखकों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला है और पाठकों को विविध प्रकार की साहित्यिक सामग्री आसानी से प्राप्त हो रही है।

"भाषा वह नहीं जो किताबों में बंद हो, भाषा वह है जो जीती जाए" -और हिंदी ने इस सिद्धांत को सोशल मीडिया के माध्यम से सिद्ध कर दिखाया है। पिछले एक दशक में हिंदी पत्रकारिता ने भी डिजिटल रूप में क्रांतिकारी विस्तार किया है। दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, आजतक, जैसे मीडिया हाउस अब डिजिटल रूप में हिंदी समाचार प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनकी पहुँच करोड़ों पाठकों तक हो गई है। ऑनलाइन हिंदी पत्रकारिता ने विषयों में गंभीरता, विश्लेषण और तत्कालता का समावेश कर आधुनिक पाठकों को जोड़ने में सफलता पाई है।

जहाँ पहले हिंदी साहित्य पढ़ने के लिए पुस्तकालय या किताब की ज़रूरत होती थी, आज प्रेमचंद, हरिशंकर परसाई, शिवानी, महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों की रचनाएँ एक क्लिक में मोबाइल पर उपलब्ध हैं। हिंदी कविता मंच, प्रतिलिपि, कहानी क्लब, पोएट्री लाइव, जैसे प्लेटफॉर्म्स हिंदी साहित्य को नई पीढ़ी से जोड़ रहे हैं। डिजिटल युग ने पढ़ने और लिखने वाले दोनों वर्गों को एक नए मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है।

हालाकिं हिंदी की डिजिटल यात्रा चुनौतियाँ से रहित नहीं है । जहाँ एक ओर डिजिटल युग ने हिंदी को नया विस्तार दिया है, वहीं दूसरी ओर भाषायी शुद्धता और मानकीकरण की चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। डिजिटल युग

में हिंदी के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सोशल मीडिया पर अक्सर भाषा की शुद्धता और व्याकरण का ध्यान नहीं रखा जाता, जिससे हिंदी का मानक रूप प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण कई बार हिंदी शब्दों की जगह अंग्रेज़ी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। विज्ञान और तकनीक से जुड़े अनेक शब्द अभी भी अंग्रेज़ी में अधिक प्रचलित हैं, जिससे हिंदी में तकनीकी लेखन को विकसित करना एक चुनौती बन जाता है। हिंग्लिश की बढ़ती प्रवृत्ति ने हिंदी की शुद्धता को चुनौती दी है। गूगल अनुवाद जैसे टूल्स अक्सर भावार्थ से चूक जाते हैं। तकनीकी शब्दों के हिंदी रूपांतरण अब भी सहज नहीं हैं।

इन सबके बावजूद यह भी सत्य है कि भाषा का स्वरूप समय और उपयोग के साथ बदलता है, और हिंदी इस बदलाव के साथ चलना सीख रही है। इन चुनौतियों के बावजूद डिजिटल युग हिंदी के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है और इनमें हिंदी भाषी लोगों की संख्या बहुत अधिक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और वॉयस टाइपिंग जैसी तकनीकों के विकास से हिंदी का प्रयोग और अधिक आसान हो गया है। गूगल ट्रांसलेट और वॉयस असिस्टेंट जैसी सुविधाओं ने हिंदी को डिजिटल दुनिया में और अधिक सशक्त बनाया है। भारत सरकार की "डिजिटल इंडिया" योजना के तहत ई-गवर्नेंस, हिंदी वेबसाइट्स, और राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं ने हिंदी को तकनीकी मंचों पर मज़बूत किया है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल युग में हिंदी की भूमिका निरंतर बदल रही है और इसका महत्व भी बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से हिंदी ने एक नया स्वरूप और व्यापक मंच प्राप्त किया है। यदि हिंदी को तकनीक के

साथ संतुलित रूप से विकसित किया जाए और इसके मानक स्वरूप को बनाए रखा जाए, तो यह भाषा न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी सशक्त पहचान बना सकती है। हिंदी भारतीय संस्कृति, परंपरा और विचारों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है, और डिजिटल युग में यह भाषा नए अवसरों और संभावनाओं के साथ निरंतर आगे बढ़ रही है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, विचार और पहचान की अभिव्यक्ति है। डिजिटल युग में इसका स्वरूप भले ही बदल रहा हो, लेकिन इसकी मूल आत्मा और महत्व आज भी उतना ही सशक्त है। यदि हम हिंदी को तकनीक के साथ जोड़कर आगे बढ़ाएं, तो यह भाषा आने वाले समय में वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकती है।

डिजिटल युग में हिंदी ने न केवल अपने अस्तित्व को बचाया है, बल्कि नए कलेवर में निखर कर सामने आई है। यह अब केवल परंपरा की भाषा नहीं, बल्कि संभावनाओं की भाषा बन गई है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि वह डोरी है जो हमें संस्कृति, परंपरा, विचार और समाज से जोड़ती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी भाषा एक ऐसा सूत्र है, जो विभिन्न भाषिक क्षेत्रों को जोड़कर एक भावनात्मक एकता प्रदान करती है। हमारा हिंदी से जुड़ाव केवल भाषा तक सीमित नहीं, वह हमारी पहचान, संवेदना, और स्वाभिमान का प्रतिबिंब है।

कार्यालय में आयोजित संयुक्त ऑडिट सप्ताह 2025



ऑडिट सप्ताह 2025 की झलकियाँ।



ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित हेरिटेज वाक में सम्मिलित सभी कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी।



ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित हेरिटेज वॉक में सम्मिलित कार्मिक।



ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओ को पुरस्कार प्रदान करते हुए महानिदेशक महोदय।

साधना



श्रीमती विद्या अय्यर
(पर्यवेक्षक)

आध्यात्मिक मार्ग की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि साधक को बहुत बार संदेह और शंका हो जाती है। उनको आत्मविस्मृति हो जाती है। अगर यह सभी समस्याओं का समाधान न किया जाए तो साधक को शंकाशील और श्रद्धाहीन बना देती है, फिर वह अच्छी तरह से साधना नहीं कर सकता। साधना का अर्थ है की खुद के मन को और निर्मल बनाना और खुद के आंतरिक दोषों को मूल से नष्ट करना और जो दोष अपने जीवन को पतित और निकृष्ट बनाते है उनको पूरी तरह से जड़ से उन्हें दूर करना। साधना के द्वारा खुद के विचारों को शुद्ध करके अंतर्मन की सफाई करना और उसको पवित्र तथा दिव्य करना चाहिए। दोष, दुर्गुणों और बुराईयों को दूर करके खुद के चिंतन को उत्कृष्ट बनाना और उत्कृष्ट निर्माण करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ते रहना..... का नाम साधना है। मनुष्य को साधना के द्वारा खुद की आत्मा को उच्च करके खुद के आंतरिक उत्कृष्टता के द्वारा खुद के जीवन का निर्माण करना चाहिए और श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा परमार्थ परायण बनना चाहिए।

जबकि साधना का पथ बहुत कठिन तो है, पर जो साधक खुद को समर्पित कर देता है और निश्चित भाव से परमात्मा को प्रसन्न करने को इच्छुक है उसके लिए ये मार्ग बहुत मुश्किल नहीं रहता है। सच्चे साधक को खुद की आंतरिक महानता का विकास करके परम संतोष और शांति के मार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। ऐसे साधक खुद के अंदर छुपी हुई शक्तियों का

साधना द्वारा विकास करके नवनिर्माण की दिशा में आगे बढ़ते है और खुद का एवं लोगों का जीवन उत्कृट बना देते हैं।

जब तक हम अपने मनःस्थिति को संपूर्ण शांत रखते नहीं, तब तक हमारी आध्यात्मिक प्रगति नहीं हो सकती। अध्यात्म के क्षेत्र में हम हमेशा से विश्व गुरु रहे है। सदियों से हमारे देश के ऋषियों, महर्षियों ने संपूर्ण विश्व को आध्यात्मक उपदेश दिया है और मानवता के विकास में योगदान दिया है। पिछले कुछ वर्षों से लोगों के मन में अध्यात्म के प्रति रुचि बढ़ रही है. इस का कारण भौतिक सुविधाओं भी मनुष्यों को खुशी नहीं दे पा रही है।

इच्छा सब दुःखो की जननी है। इच्छाओं पर काबु पाकर ही एक अध्यात्म के मार्ग पर बहुत आसानी से आगे बढ़ सकते हैं। जो मानवी इच्छाओं पर नियन्त्रण नहीं कर पाता, उसकी जिन्दगी नर्क से भी खराब हो जाती है। वह हमेशा दुःखी ही रहता है। मजबूत आत्मबल ही इच्छाओं को नियंत्रित कर सकता है। मनुष्य के मन का आध्यात्मिक विकास अच्छा होता है और मनुष्य स्वर्ग का अनुभव कर सकता है। मनुष्य जब संपूर्ण निष्ठा से साधना से मार्ग पर आगे बढ़ता रहता है तब उसका उत्कृष्ट व्यक्तित्व का निर्माण होता है और उसका जीवन दिव्य बन जाता है और ये भवसागर को भी आसानी से पार कर जाता है।

उत्तराखंड के जागेश्वर धाम और कैंची धाम की यादें



श्री हिमांशु एस. वर्मा
(सहायक पर्यवेक्षक)

इस लेख मे, मैं आपको उत्तराखंड के कुछ धार्मिक स्थलों के बारे में अपने अनुभव साझा करना चाहता हूँ। इससे पहले भी मैंने माता वैष्णोंदेवी की यात्रा की अदभुत यादें आप सभी के साथ साझा की हैं।

मैं पहले से ही घुम्मकड तरह का और नये-नये धार्मिक स्थल जो कि पहाड़ों की गोद में बसे हुए हैं कि खोज में रहता हूँ। जहाँ कुदरत के सानिध्य में जा कर मानसिक शांति, स्वच्छ वातावरण और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कर सकुँ।

दिवाली की छुट्टीयाँ शुरू होने वाली थी, क्योंकि दिवाली की छुट्टियों में नाना-नानी के घर जाना बच्चों को बहुत पसंद होता है क्योंकि साल भर मम्मी-पापा, स्कुल में टिचर की डाँट खाकर बच्चे उब जाते हैं, हम भी बचपन में छुट्टियों की राह तकते थे की कब वेकेशन हो और नाना-नानी के घर जाकर मामा के बच्चों के साथ खेलेंगें और मस्ती करेंगे।

मेरी ससुराल और बच्चों का ननीहाल बरेली, उत्तर प्रदेश में हैं और अहमदाबाद से उत्तर प्रदेश की तरफ जाने वाली सभी ट्रेनों में दिवाली की टिकट करवाना काफी मुश्किल होता है। सारी योजना तीन महीने पहले ही बनानी होती है क्योंकि कम छुट्टियों में बहुत लंबा सफर तय करके वापस लौटना होता है।

दिवाली कि छुट्टियों में बरेली जाने का आयोजन किया गया और अहमदाबाद से बरेली तथा बरेली से अहमदाबाद की आने-जाने की रेल्वे टिकट बुक

करवायी गयीं और यात्रा के समय की राह देखते-देखते आखिर कार वो दिन आ ही गया जिस दिन की टिकट थी।

अहमदाबाद से बरेली का सफर खुशी-खुशी शुरू हुआ रात की 10 बजे की ट्रेन थी और लगभग 22 घंटे का रेल का सफ़र करने के बाद लगभग 1200 किलोमीटर रेल मार्ग से तय करने के बाद दूसरे दिन लगभग रात को 9 बजे बरेली पहुँचे। ट्रैन से इतना लंबा सफर करने के बाद ट्रैन से उतरने के बाद भी शरीर हिल रहा था लग रहा था कि अभी भी ट्रैन में ही सफर कर रहे हों। घर पहुँच कर स्नान, भोजन करने के बाद बच्चे अपने खेल में लग गये, बाकि सदस्य अपनी गप-सप में लग गये।

देर रात तक बातचीत होती रही फिर अचानक ही मेरे साले ने बात-बात में जागेश्वर धाम, कैंची धाम (बाबा नीम करौली) और गोलू जी देवता धार्मिक स्थलों के बारे में बताया जो कि उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में स्थित हैं और बरेली से लगभग 230 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं और मात्र दो दिन में इन स्थानों के दर्शन किये जा सकते हैं।

अगले ही दिन सुबह चाय-नास्ता करते समय हमने जागेश्वर धाम, कैंची धाम और गोलू जी देवता धार्मिक स्थलों के दर्शन करने की योजना बनायी और दो दिन के लिये एक सात सीटर कार के साथ घुमावदार रास्तों के अनुभवी ड्राईवर की टेक्सी बुक करवायी और नवम्बर माह में उत्तराखंड में ज्यादा ठंडी होने के कारण गर्म कपड़े व अन्य सामान की पैकिंग वगेरह करते करते कब शाम हो गयी पता ही नहीं चला क्योंकि ठंड की ऋतु में उत्तर प्रदेश में लगभग शाम के पाँच बजे अंधेरा हो जाता है।

दूसरे दिन हम सब सुबह सात बजे बरेली से उत्तराखंड की अपनी यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में चाय-नास्ता करने बाद कोहरे को काटते हुए कार हरे-भरे पर्वतों के घुमाव वाले रास्तों का मजा लेते हुए लगभग चार घंटे में 130 किलोमीटर का सफर तय कर पहले पड़ाव “कैंची धाम” पहुँचे।



उत्तराखंड के नैनीताल के पास स्थित कैंची धाम (नीम करौली बाबा का आश्रम) अपनी अलौकिक शांति, आध्यात्मिक ऊर्जा और हनुमान जी के अवतार माने जाने वाले बाबा नीम करोली की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यह स्थान भक्तों को मानसिक शांति, प्रेम और भक्ति का अनुभव कराता है। इस भूमि पर पाँव रखते ही चार घंटों के सफर की थकावट जैसे छुमंतर हो गयी और शरीर में एक अलग तरह की ऊर्जा का संचार होने लगा।

यह आश्रम 1960 के दशक में स्थापित हुआ था और बाबा नीम करौली की दिव्य उपस्थिति से जुड़ा है, जिन्हें मुख्य रूप से हनुमान जी को समर्पित, यहाँ की पूजा और वातावरण भक्तों को एक अद्वितीय दिव्य अनुभव प्रदान करते हैं। यह स्थान न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी, विशेष रूप से सिलिकॉन वैली के दिग्गजों (जैसे मार्क जुकरबर्ग, स्टीव जॉब्स) के माध्यम से, सादगी और निस्वार्थ सेवा के लिए प्रसिद्ध है।

ज्यादा देर नहीं करते हुए हम तुरंत दर्शन की कतार में लग गये और भगवान का नाम जाप करते करते पंद्रह मिनट में ही दर्शन करने का मौका मिल गया। दर्शन करने के बाद प्रसाद ग्रहण कर कुछ देर तक आश्रम की भूमि तथा पवित्र वातावरण का अनुभव करने के लिये कुछ देर तक मन्दिर के प्रांगण में ही बैठे और मानसिक शांति का अनुभव किया। प्रसाद ग्रहण करने के बाद यादगारी के लिये थोड़े फोटो वगेरह लिये और मंदिर के निकट की नदी के मधुर कल-कल को दिल में बसाकर आगे की यात्रा के लिये निकल पड़े।



हम लोग दोपहर लगभग दो बजे अपने अगले धार्मिक स्थल यानि की "जागेश्वर धाम" की तरफ निकल पड़े। क्योंकि अभी तक का रास्ता इतना घुमावदार नहीं था जितना अब होने वाला था, इसलिए हमने खाना नहीं खाकर हलका फुलका नास्ता करने में समजदारी समझी क्योंकि बच्चों को पहाड़ों के इन घुमावदार रास्तों में सफर करने में ज्यादा दिक्कतें होती हैं।

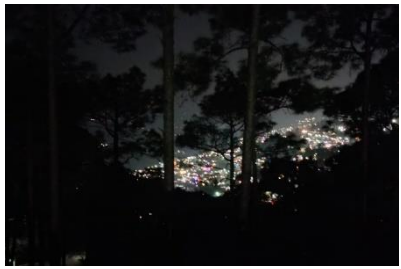


अल्मोड़ा से घुमावदार पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए जब हम देवदार के घने जंगलों के बीच पहुँचें, तो ऐसा लगा मानो प्रकृति स्वयं भगवान शिव के स्वागत में खड़ी हो। बहुत ही रमणीय नजारा था और साथ में डर भी, डर इसलिये था कि मैं कार में आगे बैठा था और घुमानदार रास्तों अपनी पकड़ बनाये हुए ड्राईवर पर उसकी गाड़ी चलाने की कलाकारी पर भरोसा नहीं कर पा रहा था।

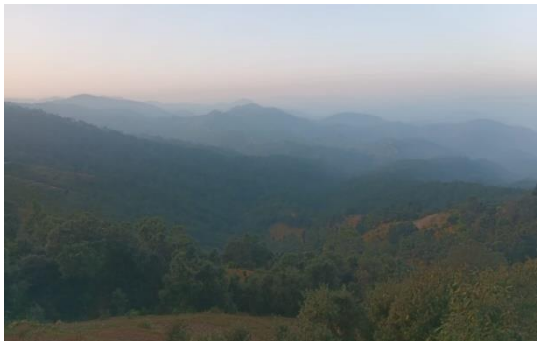
अल्मोड़ा से "जागेश्वर धाम" की दूरी केवल 80 किलोमीटर थी और यह रास्ता तय करने में लगभग तीन घंटो का समय लग जाता है। हमने रास्ते का मजा लेने चाय-नास्ता, बच्चों के लिये मैगी, मकई भुट्टा वगेरह खाने का जायका लेने और फोटोग्राफी के लिये कार रोकी और लगभग एक घंटा

बिताने के बाद सुर्यास्त देखते-देखते अंधेरा छा गया था, बच्चों ने केम्प फायर का भी आनंद लिया।ठंड़ भी बढ़ने लगी थी,हम आगे का सफर करने के लिए



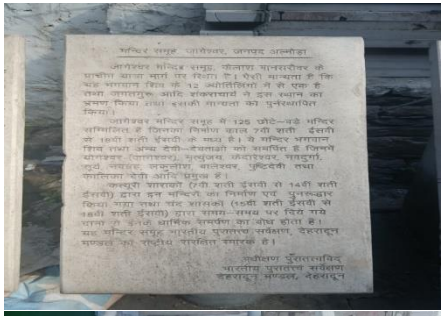


तैयार थे और लगभग दो घंटे अंधेरे में घुमावदार पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए रात को आठ बजे मंदिर से करीब पाँच-छः किलोमीटर दूरी पर एक होटल में ठहरे और थोड़ा आराम करने के बाद खाना खाकर बहुत ज्यादा ठंड होने के कारण और ज्यादा आवाजाही नहीं होने के कारण सो जाना ही मुनासिब समझा। रात के लगभग दस बजे वहाँ का तापमान 4 डिग्री था। बिस्तर पर लेटते ही थकान के कारण पाँच-दस मिनट में सभी लोग गहरी नींद में सो गये थे।



अगले दिन सुबह छहः बजे ही आँख खुल गयी और कमरे से बाहर निकलते ही ठंडी-ठंडी हवा, प्राकृतिक सौंदर्य और शांति के अद्‌भुत संगम का अनुभव करते ही शरीर में नयी ऊर्जा का संचार हो रहा हो ऐसा लग रहा था।

योजना के हिसाब से सब लोग तैयार हो कर कार में बैठकर चल पड़े मंदिर की ओर. पंद्रह-बीस मिनट का रास्ता तय करके हम पहुँचे अपने मुख्य धार्मिक स्थल "जागेश्वर धाम". कार पार्क कर फूल-प्रसाद लेकर पहुँच गये मंदिर में।





जागेश्वर धाम उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में घने देवदार के जंगलों के बीच स्थित एक प्राचीन और पवित्र शिव तीर्थ है। इस मंदिर समूह में 100 से अधिक छोटे-बड़े पत्थर के मंदिर हैं। प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक शांति का अद्भुत संगम यहाँ देखने को मिलता है। जागेश्वर धाम का निर्माण मुख्यतः 7वीं से 12वीं शताब्दी के बीच माना जाता है। कत्यूरी और चंद राजाओं के काल में यहाँ मंदिरों का निर्माण हुआ। मंदिरों की स्थापत्य शैली नागर शैली की है, जो उत्तर भारत के प्राचीन मंदिरों की पहचान है।

यह स्थान भगवान शिव को समर्पित है। मुख्य मंदिर में स्थापित शिवलिंग को "जागेश्वर महादेव" कहा जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ मृत्युंजय मंदिर, दंडेश्वर मंदिर और कुबेर मंदिर भी स्थित हैं।

जागेश्वर धाम चारों ओर से ऊँचे देवदार के वृक्षों से घिरा हुआ है। शांत वातावरण, कलकल बहती जटा गंगा नदी और हिमालय की ठंडी हवा मन को अद्भुत शांति प्रदान करती है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु आध्यात्मिक अनुभव के साथ-साथ प्रकृति का भी आनंद लेते हैं।सुबह की हल्की ठंडी हवा, पक्षियों की मधुर आवाज़ और दूर से आती मंदिर की घंटियों की ध्वनि मन को भीतर तक शांति से भर रही थी। जैसे ही मैंने मंदिर परिसर में प्रवेश

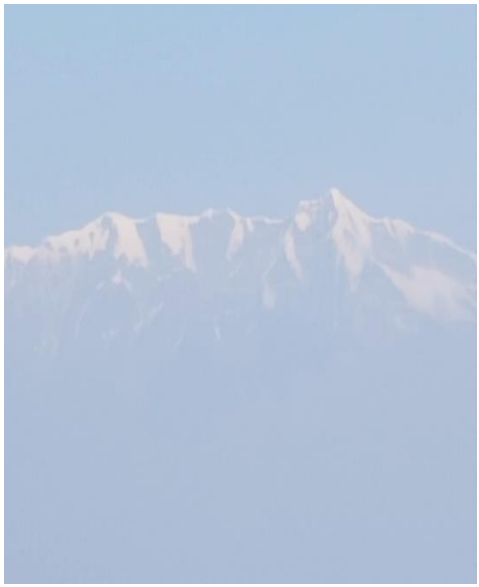


किया, प्राचीन पत्थर के बने सैकड़ों छोटे-बड़े मंदिरों को देखकर मन श्रद्धा से झुक गया। हर मंदिर मानो अपनी अलग कहानी कह रहा था।



सबसे पहले हम मुख्य मंदिर में स्थापित शिवलिंग "जागेश्वर महादेव" के दर्शन की लाइन में लग गए। पैरों के निचे पत्थर इतने ठंडे थे मानो की बरफ पर चल रहे हों, इस धार्मिक स्थान की ज्यादा लोगों को जानकारी नहीं होने के कारण ज्यादा भीड़ नहीं होने का फायदा हुआ और लगभग दस मिनट में मुख्य शिवलिंग के दर्शन हो गये। मंदिर के अंदर जाकर मन को शांति, आत्मा को संतोष और जीवन को नई ऊर्जा मिली हो ऐसा लगने लगा। मैं अभी तक केदारनाथ धाम-बद्रीनाथ धाम तो नहीं गया किन्तु उत्तराखंड की देवभूमि में स्थित यह "जागेश्वर धाम" पवित्र स्थल मेरे लिये केदारनाथ धाम-बद्रीनाथ धाम जैसा ही अनुभव था।

मुख्य मंदिर में स्थित शिवलिंग के दर्शन का अनुभव अत्यंत दिव्य था। पूजा के समय जब "ॐ नमः शिवाय" का जाप गूंज रहा था, तो वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो समय थम गया हो और



आत्मा सीधे ईश्वर से जुड़ गई हो। मुख्य मंदिर के दर्शन करने के बाद वहीं स्थित अन्य मंदिरों में भी दर्शन किये और ये मंदिर देवदार के घने जंगलों के बीच में जैसे स्वर्ग की अनुभूति करवा रहे थे। वहीं मंदिर के प्रागंण में थोडी उँचाई पर कुबेरजी का मंदिर स्थित हैं वहाँ दर्शन करने के बाद थोडी फोटोग्राफी करने के बाद मंदिर के पास ही चाय-अल्पाहार किया और रास्ते में दूर हिमालय के पहाड़ो का नजारा देखते-देखते निकल पड़े अगले पड़ाव "गोलू देवता मंदिर"। एकाद घंटे का सफर तय कर हम पहुँच गये चितई स्थित "गोलू देवता मंदिर"।

अल्मोडा से लगभग दस किलोमीटर दूर स्थित चितई "गोलूजी देवता मंदिर" उत्तराखंड का एक प्रसिद्ध मंदिर है। गौर भैरव के रूप में भगवान शिव के अवतार गोलू जी देवता के चितई मंदिर को इसके परिसर में लटकी तांबे की घंटियों से आसानी से पहचाना जा सकता है। गोलू जी को न्याय का देवता माना जाता है और यह आम धारणा है कि जब कोई उत्तराखंड के इस

मंदिर में उनकी पूजा करता है, तो गोलू देवता न्याय प्रदान करते हैं और अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं।

इस मंदिर में पैर रखते ही एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। अनगीनत छोटी-बड़ी घंटियाँ लटकते हुए देखने को मिलीं और कई पर्चे और अर्जी या तो लिगल पेपर और स्टाम्प पेपर पर लिखी थीं और गोलूजी देवता से न्याय की गुहार लगाने हेतु श्रद्धालुओं द्वारा लगायी गयी थीं। मंदिर परिसर में हर जगह पर घंटियाँ और श्रध्धालूओं द्वारा बाँधी गयी अर्जियाँ देखी जा सकती हैं। हम सभी ने मंदिर में दर्शन किये और दो बार दर्शन का मौका मिलने की कामना करते हुए अब हम निकल पड़े घर की ओर बरेली। लगभग दोपहर को 2 बजे यह सफर शुरू हुआ और रात के करीब 10 बजे हम बरेली पहुँच गये।

इस तीर्थयात्रा ने मुझे सिखाया कि सच्ची शांति बाहरी सुखों में नहीं, बल्कि भीतर की आस्था और विश्वास में छिपी होती है। जागेश्वर धाम और कैंचीधाम की यह यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं थी, बल्कि आत्मिक जागरण का अनुभव थी। क्योंकि इन धार्मिक स्थानों के बारे में ना तो मैनें कहीं कभी कुछ पढ़ा था या किसी ने इस बारे में बताया था। खासकर कैंचीधाम के बारे में।

आज भी जब मैं उस यात्रा को याद करता हूँ, तो देवदार के वृक्षों की खुशबू, मंदिर की घंटियों की ध्वनि और शिव और राम नाम का जाप मेरे मन में गूंज उठता है। सचमुच, जागेश्वर धाम और कैंची धाम की यह तीर्थयात्रा मेरे जीवन की अमूल्य और अविस्मरणीय धरोहर बन गई।

जागेश्वर धाम और कैंची धाम जाने के लिये निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम के लिये दिल्ली से ट्रैन द्वारा जाया जा सकता है और काठगोदाम

से आपको बस और टैक्सी भी उपलब्ध हो जायेंगी। हवाईमार्ग से निकटतम पंतनगर की फ्लाइट भी ली जा सकती है।

अहमदाबाद से जागेश्वर धाम और कैंची धाम जाने के लिये निकटतम हवाईअड्डा पंतनगर की फ्लाईट मिल जायेगी और यदि आप रेल मार्ग से जाना चाहते हैं तो काठगोदाम के लिये आपको वाया दिल्ली और बरेली से ट्रैन उपलब्ध हो जायेंगी। इन धार्मिक स्थानों के अलावा आप उत्तराखंड में नैनीताल घूमने का भी आनंद ले सकते हैं।

इस लेख से आपको उत्तराखंड के धार्मिक स्थलों के बारे में अपने अनुभव साझा किये हैं और आशा है कि आप लोगों को यह लेख जरूर पसंद आयेगा और अगली छुट्टीयों में आप भी इन स्थानों में घुमने की योजना बनाओगे।

गणतंत्र दिवस समारोह की कुछ झलकियां



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रगान गाते हुए प्रधान महानिदेशक महोदय एवं प्रधान महालेखाकार महोदय।



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर सम्मिलित अधिकारीगण एवं कार्मिक।



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर उपस्थित प्रधान महानिदेशक महोदय, प्रधान महालेखाकार महोदय, वरिष्ठ उपमहालेखाकार एवं अन्य उप महालेखाकार।



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का संचालन एवं प्रस्तुति देते कार्मिक।

जनरेशन ज़ी



श्री बिनय कुमार
(लेखापरीक्षक)

वैसे तो मैं मिलेनियल जनरेशन (Gen Y) का हूँ क्यूंकि मेरा जन्म वर्ष 1981 से वर्ष 1996 के बीच में हुआ है। लेकिन आज की दुनिया में यदि किसी जनरेशन की सबसे अधिक चर्चा होती है, तो वह है Gen Z। यह वह पीढ़ी है जिसका जन्म लगभग 1997 से 2012 के बीच माना जाता है। पिछले कुछ समय से यह काफी चर्चा में रहा है। फिर चाहे बांग्लादेश में इनके द्वारा वहां की सरकार को तख्ता पलट करना हो या फिर नेपाल में इनके द्वारा प्रदर्शन करके वहां अपनी मनपसन्द सरकार को सत्ता सौपना हो। पूरी दुनिया में इनके ही चर्चे फैले हुए हैं।

यह पीढ़ी पूरी तरह डिजिटल युग में पली-बढ़ी है। जहाँ मिलेनियल या उससे पिछली पीढ़ियों ने तकनीक को धीरे-धीरे अपनाया, वहीं Gen Z ने तकनीक के साथ ही जन्म लिया। स्मार्टफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इनके जीवन का स्वाभाविक हिस्सा हैं।

आज का Gen Z केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता (creator) भी है। यह पीढ़ी समाज, राजनीति, शिक्षा और व्यवसाय के क्षेत्र में नई सोच और नई दिशा लेकर आई है।

- डिजिटल युग में जन्म लेने के कारण Gen Z के लिए इंटरनेट कोई सुविधा नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे Instagram, YouTube, Netflix और Snapchat इनके दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। ये प्लेटफॉर्म केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि पहचान बनाने और करियर बनाने का माध्यम भी बन चुके हैं।

आज कई युवा कंटेंट क्रिएटर, ब्लॉगर, गेमर और इन्फ्लुएंसर के रूप में लाखों रुपये कमा रहे हैं। पहले जहाँ पारंपरिक नौकरियों को प्राथमिकता दी जाती थी, वहीं Gen Z फ्रीलांसिंग, डिजिटल मार्केटिंग और स्टार्टअप्स की ओर अधिक आकर्षित है।

- Gen Z की सोच पारंपरिक विकल्पों तक सीमित नहीं है। इनके लिए इंजीनियर, डॉक्टर या सरकारी नौकरी को ही सफलता का पैमाना नहीं माना गया है। आज का युवा स्किल-आधारित शिक्षा को अधिक महत्व देता है। इनमें ऑनलाइन कोर्स द्वारा डिजिटल सर्टिफिकेट और स्वयं सीखने (Self-learning) की प्रवृत्ति है। कई युवा कॉलेज के साथ-साथ अपना व्यवसाय शुरू कर रहे हैं। स्टार्टअप संस्कृति में इनकी भागीदारी बढ़ी है। ये जोखिम लेने से नहीं डरते और असफलता को सीखने का अवसर मानते हैं।
- सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता Gen Z सामाजिक मुद्दों को लेकर काफी जागरूक है। पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य और मानवाधिकार जैसे विषय इनके लिए महत्वपूर्ण हैं। यह पीढ़ी सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी आवाज़ उठाती है और अभियानों को समर्थन देती है। Gen Z जलवायु परिवर्तन, प्लास्टिक उपयोग और टिकाऊ जीवनशैली जैसे मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है।
- पहले जहाँ मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर चर्चा नहीं होती थी, वहीं Gen Z ने इस विषय को सामान्य बना दिया है। डिप्रेशन, एंग्जायटी और तनाव जैसी समस्याओं पर खुलकर बात की जा रही है। हालाँकि, सोशल मीडिया की तुलना और "परफेक्ट लाइफ" दिखाने की प्रवृत्ति कभी-कभी मानसिक दबाव भी पैदा करती है। लाइक्स और फॉलोअर्स की दौड़ आत्मसम्मान को प्रभावित कर सकती है।
- आज का Gen Z केवल उत्पाद नहीं खरीदता, बल्कि ब्रांड की सोच और मूल्यों को भी देखता है। यदि कोई कंपनी पर्यावरण या सामाजिक

जिम्मेदारी का ध्यान नहीं रखती, तो यह पीढ़ी उसका बहिष्कार भी कर सकती है। ऑनलाइन शॉपिंग, डिजिटल पेमेंट और UPI का उपयोग इनके लिए सामान्य है। कैशलेस लेन-देन और त्वरित सेवाएँ इनको पसंद आती हैं।

- पारिवारिक और सामाजिक संबंध जुड़ाव: Gen Z अपने परिवार से जुड़ा रहता है, लेकिन स्वतंत्रता को अधिक महत्व देता है। यह पीढ़ी पारंपरिक मान्यताओं को आँख बंद करके स्वीकार नहीं करती। दोस्ती और रिश्तों में भी डिजिटल माध्यमों की भूमिका बढ़ गई है। ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स और सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म के जरिए नए संबंध बन रहे हैं।
- रचनात्मकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता Gen Z की सबसे बड़ी ताकत उसकी रचनात्मकता है। वीडियो एडिटिंग, ग्राफिक डिजाइन, म्यूजिक प्रोडक्शन और कोडिंग जैसी स्किल्स कम उम्र में ही विकसित हो रही हैं। शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म और रील्स संस्कृति ने इन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच दिया है। आज कई युवा छोटे-छोटे गाँवों और शहरों से निकलकर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं।
- भविष्य की दिशा Gen Z आने वाले वर्षों में कार्यस्थलों, राजनीति और समाज का नेतृत्व करेगा। यह पीढ़ी विविधता (Diversity), समावेशन (Inclusion) और नवाचार (Innovation) को प्राथमिकता देती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल अर्थव्यवस्था के युग में Gen Z की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । ये तकनीक को केवल उपयोग नहीं कर रहे हैं, बल्कि उसे दिशा भी प्रदान कर रहे हैं ।

हालाँकि Gen Z की अनेक खूबियाँ हैं, लेकिन इनके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं, जो निम्नानुसार हैं :-

- **सोशल मिडिया का प्रेशर:** Gen Z के लोग सोशल मीडिया का बहुत अधिक उपयोग करते हैं। दूसरों से लगातार खुद की तुलना करना और

लाइक, शेयर और सब्सक्राइबर की चिंता के कारण तनाव और आत्मविश्वास की कमी हो सकती है।

- **मानसिक स्वास्थ्य की समस्या** : जो स्क्रीन टाइम का अत्यधिक बढ़ना ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, धैर्य की कमी, तुरंत सफलता की अपेक्षा के कारण कई बार यह पीढ़ी जल्दी निराश भी हो जाती है। सोशल मीडिया और प्रतिस्पर्धा मानसिक दबाव बढ़ा सकती है। जिसके कारण इन्हें चिंता (anxiety) और अवसाद (depression) जैसी समस्याएँ का भी सामना करना पड़ता है।
- **करियर की अनिश्चितता** : चूँकि आज के समय में नौकरी के अवसर में तेजी से बदलाव हो रहे हैं। नई तकनीकों और प्रतिस्पर्धा के कारण Gen Z के सामने स्थायी और सुरक्षित करियर चुनना एक बड़ी चुनौती बन गया है।
- **सेहत सम्बन्धित परेशानियाँ** : अपने चारों तरफ डिजिटल उपकरणों से घिरे होने का कारण एवं इस पर अत्यधिक निर्भर होने के कारण शारीरिक गतिविधि कम हो जाती है जिसके कारण सेहत सम्बन्धित कई समस्याएं होने लगती है जैसे की समय से पहले आँखों पर चश्मा लग जाना, कम उम्र में ही मोटापा आ जाना इत्यादि।
- **सूचना की अधिकता :** इंटरनेट पर अथाह जानकारी उपलब्ध होने के कारण कौन सी जानकारी सही है और कौन सी गलत, इसलिए कभी-कभी गलत जानकारी को ही सही मान कर पूरी दुनिया में फ़ैलाने से स्थिति गंभीर हो जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। इसलिए कभी-कभी इन Gen Z के लिए सही और गलत में अंतर करना काफी चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है।

निष्कर्ष

आज का Gen Z आत्मविश्वासी, जागरूक और तकनीकी रूप से सक्षम है। यह पीढ़ी बदलाव से डरती नहीं, बल्कि बदलाव लाने में विश्वास रखती है। जहाँ एक ओर डिजिटल दुनिया ने इन्हें असीम अवसर दिए हैं, वहीं चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। यदि Gen Z अपनी ऊर्जा को सही दिशा में

लगाए और संतुलन बनाए रखे, तो यह समाज को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकता है। अंततः, Gen Z केवल एक पीढ़ी नहीं, बल्कि एक परिवर्तन की लहर है - जो भविष्य को नए रंगों से सजा रही है।



राजभाषा हिंदी स्थापना प्रयास और प्रगति



श्री सिद्धार्थ पाठक
(आशुलिपिक)

सादर प्रणाम ! हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाने का सफर महज एक कानूनी या प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह स्वतंत्र भारत की आत्मा को खोजने और उसे एक सूत्र में पिरोने का एक भावुक प्रयास था। यह कहानी है उस संघर्ष की, जहाँ एक ओर सदियों की गुलामी के बाद अपनी सांस्कृतिक पहचान को वापस पाने की तड़प थी, तो दूसरी ओर भारत की भाषाई विविधता और क्षेत्रीय अस्मिताओं के बीच एक संवेदनशील संतुलन बनाए रखने की चुनौती।

यह केवल शब्दों या व्याकरण का चयन नहीं था, बल्कि यह निर्णय लेना था कि एक नव-स्वतंत्र राष्ट्र अपनी वैश्विक पहचान किस भाषा में गढ़ेगा। इस यात्रा में राष्ट्रीय एकता का सपना, राजनीतिक दूरदर्शिता, तीखी संसदीय बहसें और आम जनता की भावनाएं—सब कुछ एक साथ गुंथा हुआ था। यह सफर हमें बताता है कि कैसे भारत ने अपनी विविध बोलियों और भाषाओं के सम्मान को सुरक्षित रखते हुए हिंदी को 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार कर 'विविधता में एकता' के सिद्धांत को धरातल पर उतारा।

हिंदी की राजभाषा के रूप में स्थापना

हिंदी भाषा को आज जिस मुकाम पर हम देख रहे हैं, उसकी नींव आजादी मिलने से बहुत पहले ही रख दी गई थी। 19वीं सदी के महान समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने यह बात समझ ली थी कि अगर

समाज में कोई बदलाव लाना है, तो जनता से उनकी अपनी भाषा में बात करनी होगी। वे खुद गुजराती थे, लेकिन उन्होंने अपनी सबसे प्रसिद्ध किताब 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में लिखी। उनका मानना था कि हिंदी में पूरे भारत को एक साथ लाने की ताकत है।

समय के साथ हिंदी का कारवां आगे बढ़ा और 20वीं सदी में महात्मा गांधी इसके सबसे बड़े समर्थक बने। गांधीजी के लिए हिंदी सिर्फ बोलने का जरिया नहीं, बल्कि हमारे देश के सम्मान की बात थी। 1918 में इंदौर में हुए एक सम्मेलन में उन्होंने खुले दिल से कहा था कि हिंदी ही वह भाषा है जो भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है। गांधीजी चाहते थे कि हिंदी एक ऐसी भाषा हो जिसमें संस्कृत और फारसी दोनों के शब्द हों, ताकि वह हर धर्म और समुदाय के लोगों को अपनी लगे। उस समय हिंदी आजादी की लड़ाई की सबसे बुलंद आवाज बन गई थी।

जब देश आजाद हुआ और संविधान बनाने की बारी आई, तो हमारे नेताओं के सामने एक बड़ी चुनौती थी। वे चाहते थे कि देश की अपनी भाषा का सम्मान भी हो और सरकारी काम में भी कोई रुकावट न आए। 1947 से 1949 के बीच इस पर काफी चर्चा हुई। के.एम. मुंशी और एन. गोपालस्वामी आयंगर जैसे विद्वानों ने एक समझदारी भरा रास्ता निकाला, जिसे 'मुंशी-आयंगर फॉर्मूला' कहा जाता है। उन्होंने हिंदी को 'राष्ट्रभाषा' कहने के बजाय 'राजभाषा' (Official Language) का नाम दिया, ताकि किसी दूसरी भाषा को बुरा न लगे। इसी वजह से 14 सितंबर 1949 को हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में अपनाया गया, जिसे आज हम 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाते हैं।

हमारे संविधान में हिंदी के विकास के लिए कुछ खास नियम भी बनाए गए हैं। जैसे कि अनुच्छेद 343 कहता है कि हिंदी देश की आधिकारिक भाषा होगी। वहीं, अनुच्छेद 351 सरकार को यह जिम्मेदारी देता है कि वह हिंदी का प्रचार करे ताकि यह भारत की मिली-जुली संस्कृति को दिखा सके। संविधान बनाने वाले लोग काफी समझदार थे। वे जानते थे कि सालों से अंग्रेजी में चल रहे अदालती और दफ्तरी काम को अचानक नहीं बदला जा सकता। इसीलिए उन्होंने 15 साल (1965 तक) का समय दिया ताकि धीरे-धीरे कामकाज को हिंदी में ढाला जा सके।

इस दौरान सरकार ने कई संस्थाएं बनाईं, जैसे 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय', ताकि विज्ञान और कानून जैसे कठिन विषयों के लिए हिंदी के सरल शब्द तैयार किए जा सकें। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने सच ही कहा था कि अपनी भाषा की उन्नति ही सब उन्नतियों की जड़ है। आज हिंदी न सिर्फ हमारे घरों की भाषा है, बल्कि यह विज्ञान और तकनीक की तरफ भी कदम बढ़ा रही है। हिंदी को प्रोत्साहित करने का असली मकसद यही है कि हम अपनी भाषा को गर्व के साथ अपनाएं और उसे आधुनिक युग की जरूरतों के हिसाब से तैयार करें।

हिन्दी को आगे बढ़ाने के हमारे प्रयास

आज के समय में भाषा सिर्फ बात करने का एक ज़रिया नहीं रह गई है, बल्कि यह हमारी पहचान बन गई है। भारत जैसे देश में जहाँ इतनी सारी भाषाएँ बोली जाती हैं, वहाँ हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सबको जोड़ने का काम करती है। हमारे देश में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए बहुत पहले से कोशिशें शुरू हो गई थीं। जब हमारा संविधान बना, तभी 14 सितंबर 1949 को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था। इसी वजह से हम हर साल 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस'

मनाते हैं। स्कूल, कॉलेज और सरकारी दफ्तरों में इस दौरान कई प्रतियोगिताएं होती हैं, ताकि लोग अपनी भाषा को लेकर गर्व महसूस करें और उसे ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल करें।

सरकार के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी को लेकर काफी बदलाव आए हैं। पहले माना जाता था कि अगर डॉक्टर या इंजीनियर बनना है तो सिर्फ अंग्रेजी ही पढ़नी पड़ेगी, लेकिन अब धीरे-धीरे हालात बदल रहे हैं। नई शिक्षा नीति में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा और हिन्दी में पढ़ाया जाए, ताकि उन्हें चीज़ें जल्दी समझ आएं। कई बड़ी किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया जा रहा है ताकि गाँव-देहात के बच्चे भी ऊँची शिक्षा हासिल कर सकें। जब पढ़ाई अपनी भाषा में होती है, तो सीखने का मज़ा ही कुछ और होता है।

आजकल की डिजिटल दुनिया में भी हिन्दी का बोलबाला बढ़ रहा है। पुराने ज़माने में कंप्यूटर पर हिन्दी टाइप करना बहुत मुश्किल होता था, लेकिन अब मोबाइल और इंटरनेट की वजह से सब आसान हो गया है। अब हम बोलकर भी हिन्दी टाइप कर सकते हैं। गूगल, फेसबुक और व्हाट्सएप पर अब ज़्यादातर लोग हिन्दी में ही चैटिंग करना पसंद करते हैं। यहाँ तक कि विदेशों में भी लोग अब हिन्दी सीखना चाहते हैं। दुनिया के कई बड़े विश्वविद्यालयों में हिन्दी सिखाई जा रही है, जो हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। अब तो संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसे बड़े मंचों पर भी हिन्दी की आवाज़ गूँजने लगी है।

लेकिन इन सबके बीच कुछ चुनौतियां भी हैं। आजकल के युवा अंग्रेजी बोलने में शान समझते हैं और हिन्दी बोलने में कभी-कभी हिचकिचाते हैं। हमें यह समझना होगा कि कोई भी दूसरी भाषा सीखना बुरा नहीं है, लेकिन अपनी भाषा को भूल जाना सही नहीं है। हमें 'हिंग्लिश' (हिन्दी और अंग्रेजी का

मिला-जुला रूप) के बजाय शुद्ध और अच्छी हिन्दी बोलने की कोशिश करनी चाहिए। अगर हम चाहते हैं कि हिन्दी पूरी दुनिया में नाम कमाए, तो सबसे पहले हमें खुद हिन्दी का सम्मान करना होगा। जब हम अपनी भाषा में बात करेंगे और उसे प्यार देंगे, तभी हिन्दी का सही मायने में विकास होगा।

वर्तमान समय में हिंदी: प्रगति और नई उपलब्धियाँ

आज का समय हिंदी के लिए एक नए और सुनहरे युग जैसा है। एक समय था जब लोग सोचते थे कि हिंदी सिर्फ साहित्य या कविता की भाषा है, लेकिन आज हिंदी ने इस सोच को पूरी तरह बदल दिया है। वर्तमान समय में हिंदी केवल हमारे घरों या बोलचाल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तकनीक, व्यापार और मनोरंजन की वैश्विक भाषा बनकर उभरी है। आज दुनिया के कोने-कोने में हिंदी की गूँज सुनाई दे रही है और यह देखकर गर्व होता है कि हमारी भाषा कितनी तेजी से प्रगति कर रही है।

हिंदी की सबसे बड़ी प्रगति 'डिजिटल दुनिया' में देखने को मिलती है। आज इंटरनेट पर हिंदी सामग्री (Content) की माँग इतनी बढ़ गई है कि गूगल, फेसबुक और यूट्यूब जैसे बड़े प्लेटफॉर्म्स को हिंदी को प्राथमिकता देनी पड़ रही है। आज एक आम आदमी अपने मोबाइल पर बोलकर हिंदी टाइप कर सकता है और इंटरनेट पर अपनी भाषा में जानकारी हासिल कर सकता है। आंकड़ों की मानें तो इंटरनेट पर हिंदी इस्तेमाल करने वालों की संख्या अंग्रेजी से भी तेजी से बढ़ रही है। ई-कॉमर्स कंपनियाँ जैसे अमेज़न और फ्लिपकार्ट भी अब हिंदी में अपनी सेवाएँ दे रही हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि भारत के बड़े बाजार तक पहुँचने के लिए हिंदी ही सबसे सशक्त माध्यम है।

शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में भी हिंदी ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है। हाल के वर्षों में भारत सरकार ने चिकित्सा (MBBS) और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी में शुरू करने की ऐतिहासिक पहल की है। यह उन छात्रों के

लिए एक वरदान जैसा है जो अंग्रेजी की वजह से इन विषयों को कठिन मानते थे। इसके अलावा, अंतरिक्ष विज्ञान हो या रक्षा क्षेत्र, हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। अब हमारे वैज्ञानिक और शोधकर्ता अपने शोध पत्र हिंदी में भी साझा कर रहे हैं, जिससे विज्ञान आम लोगों तक पहुँच पा रहा है।

मनोरंजन और सिनेमा की बात करें तो 'बॉलीवुड' ने हिंदी को सात समंदर पार पहुँचाया है। **आज रूस, चीन, और अरब देशों में लोग हिंदी गानों और फिल्मों के दीवाने हैं।** ओटीटी प्लेटफॉर्म्स (जैसे नेटफ्लिक्स और हॉटस्टार) के आने से हिंदी की पहुँच और भी गहरी हुई है। केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि 'विश्व हिंदी सम्मेलन' जैसे आयोजनों ने इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दी है। **आज दुनिया के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है, जो यह साबित करता है कि विदेशी लोग भी भारत की इस भाषा और संस्कृति को समझने के लिए उत्सुक हैं।**

हिंदी की ऊँची उड़ान: कुछ महत्वपूर्ण बातें और उपलब्धियाँ

आज के दौर में हिंदी सिर्फ हमारे देश की सीमा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सात समंदर पार भी अपना झंडा गाड़ रही है। अगर हम इसके रिकॉर्ड्स और तरक्की पर नज़र डालें, तो कुछ ऐसी बातें सामने आती हैं जो हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा कर देती हैं।

दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी भाषा क्या आप जानते हैं कि पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी अब **तीसरे नंबर** पर आती है? पहले लोग सोचते थे कि सिर्फ अंग्रेजी या चीनी भाषा का ही बोलबाला है, लेकिन आज दुनिया भर में लगभग **61 करोड़** से भी ज्यादा लोग हिंदी

बोलते और समझते हैं। यह आंकड़ा हमें बताता है कि हिंदी अब एक 'ग्लोबल' भाषा बन चुकी है।

इंटरनेट पर हिंदी का जलवा आजकल हम सब मोबाइल और इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं। पहले इंटरनेट पर सिर्फ अंग्रेजी का राज था, लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। एक ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक, इंटरनेट पर हिंदी पढ़ने और देखने वालों की संख्या हर साल **94%** की रफ़्तार से बढ़ रही है। आज गूगल पर लोग अपनी भाषा यानी हिंदी में सर्च करना ज्यादा पसंद करते हैं। यूट्यूब हो या फेसबुक, हर जगह अब हिंदी का दबदबा है।

अंग्रेजी डिक्शनरी में 'देसी' शब्दों की एंट्री यह सुनकर बहुत अच्छा लगता है कि अब अंग्रेज भी हिंदी के शब्दों का इस्तेमाल अपनी पढ़ाई में कर रहे हैं। मशहूर 'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' में हर साल हिंदी के कई शब्द शामिल किए जाते हैं। **'स्वदेशी', 'आधार', 'नारी शक्ति', 'चटनी'** और **'नमस्ते'** जैसे शब्द अब पूरी दुनिया में मशहूर हो गए हैं। इसका मतलब है कि हिंदी अब दूसरी भाषाओं को भी अपना रंग चढ़ा रही है।

विदेशों में भी हिंदी की धूम हिंदी का असर अब सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी खूब दिख रहा है। क्या आप जानते हैं कि **फिजी** जैसे देश में हिंदी को सरकारी भाषा का दर्जा मिला हुआ है? इसके अलावा मॉरीशस, सूरीनाम और नेपाल जैसे देशों में तो हिंदी सुनी ही जाती है, लेकिन अब अमेरिका और लंदन जैसे शहरों के स्कूलों में भी विदेशी बच्चे हिंदी बोलना सीख रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र और विज्ञान में हिंदी की गूँज हाल ही में एक बड़ी उपलब्धि यह मिली कि **संयुक्त राष्ट्र (UN)**, जो दुनिया की सबसे बड़ी संस्था है, उसने अब हिंदी में खबरें और जानकारी देना शुरू कर दिया है।

निष्कर्ष व सावधान:- अंत में, हम यह कह सकते हैं कि हिंदी का सफर बहुत ही गौरवशाली रहा है। आजादी के आंदोलन में एकजुटता का हथियार बनने से लेकर आज डिजिटल युग की आधुनिक भाषा बनने तक, हिंदी ने हर कदम पर अपनी ताकत को साबित किया है। सरकारी और संवैधानिक प्रयासों ने इसे एक मजबूत आधार दिया, तो वहीं आज की युवा पीढ़ी और तकनीक ने इसे पंख दिए हैं।

आज जब हम देखते हैं कि दुनिया के बड़े-बड़े देशों में हिंदी पढ़ी जा रही है और इंटरनेट पर हमारी भाषा का डंका बज रहा है, तो मन गर्व से भर जाता है। हिंदी को प्रोत्साहित करने का असली मतलब केवल नियम बनाना या दिवस मनाना नहीं है, बल्कि इसे अपने रोजमर्रा के जीवन में सम्मान देना है। जिस तरह से आज विज्ञान, डॉक्टरी और तकनीक की पढ़ाई हिंदी में शुरू हुई है, वह इस बात का संकेत है कि आने वाला समय हिंदी का ही है।

हमें यह समझना होगा कि कोई भी भाषा तभी जीवित रहती है जब उसके बोलने वाले उस पर गर्व करते हैं। हमें अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा से परहेज नहीं करना चाहिए, लेकिन अपनी 'निज भाषा' को कभी कमतर नहीं आंकना चाहिए। जब हम खुद हिंदी को आत्मविश्वास के साथ बोलेंगे, तभी पूरी दुनिया इसे वह ऊँचा स्थान देगी जिसकी यह हकदार है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, हम सबका साझा गौरव है, और इसकी प्रगति ही वास्तव में भारत की प्रगति है।

हिंग्लिश का बढ़ता चलन: हिंदी के लिए एक छिपी हुई चुनौती

आजकल हम देखते हैं कि शुद्ध हिंदी बोलना जैसे पुराना फैशन हो गया है। हम अपनी बातचीत में इतने ज्यादा अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल करने लगे हैं कि अब उसे 'हिंदी' कहना भी मुश्किल लगता है। इसी मिलावट को हम 'हिंग्लिश' कहते हैं। सुनने में तो यह बहुत आधुनिक और आसान लगती है,

लेकिन धीरे-धीरे यह हमारी प्यारी हिंदी भाषा की जड़ों को कमजोर कर रही है। जब हम हर बात में अंग्रेजी शब्दों का सहारा लेते हैं, तो हम हिंदी के उन खूबसूरत शब्दों को भूलते जा रहे हैं जो हमारी भाषा की असली जान हैं।

हिंग्लिश का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि हमारी नई पीढ़ी शुद्ध हिंदी बोलना और लिखना भूल रही है। आज के बच्चों को 'कठिन' (Difficult), 'प्रयास' (Effort) या 'प्रगति' (Progress) जैसे साधारण हिंदी शब्दों का अर्थ भी नहीं पता होता। वे 'थैंक्यू' और 'सॉरी' तो आसानी से कह देते हैं, लेकिन 'धन्यवाद' और 'क्षमा' कहने में उन्हें हिचकिचाहट होती है। इससे भाषा की वह गहराई और गंभीरता खत्म होती जा रही है जो साहित्य और संस्कृति के लिए जरूरी है। जब भाषा अपनी शुद्धता खो देती है, तो उसके साथ जुड़ी परंपराएं भी धुंधली पड़ने लगती हैं।

इसके अलावा, हिंग्लिश के कारण हिंदी का अपना व्याकरण (Grammar) भी बिगड़ रहा है। लोग सोशल मीडिया पर हिंदी को अंग्रेजी की लिपि (Roman Script) में लिखते हैं, जिससे देवनागरी लिपि का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है। 'Namaste' लिखना 'नमस्ते' लिखने से ज्यादा आसान लगने लगा है, जो हमारी पहचान के लिए सही नहीं है। अगर हम इसी तरह अपनी भाषा में मिलावट करते रहे, तो आने वाले समय में हिंदी सिर्फ एक 'खिचड़ी भाषा' बनकर रह जाएगी।

माना कि समय के साथ बदलना जरूरी है और दूसरी भाषाएं सीखना भी अच्छी बात है, लेकिन अपनी मूल भाषा की कीमत पर नहीं। हमें यह समझना होगा कि हिंग्लिश एक सुविधा तो हो सकती है, पर यह हमारी मातृभाषा का विकल्प नहीं है। अगर हम चाहते हैं कि हिंदी का गौरव बना

रहे, तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम कम से कम बातचीत में सरल और शुद्ध हिंदी शब्दों का प्रयोग करें। अपनी भाषा को बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है, क्योंकि भाषा बचती है तभी संस्कृति बचती है।

“भारत की विभिन्न भाषाओँ की मोतियों की माला में हिंदी को सूत्र रूप में अपनाना हमारा कर्तव्य है और आवश्यकता भी”



कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका "धरागुर्जरी" के वर्ष 2025-26 के प्रथम अंक का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य अधिकारीगण





यादे बीते समय की- चौपाल



श्री जयन्त
(स.ले.प.अ.)

"चौपाल" यह शब्द सुनते ही बहुत से लोगों के मन में कितनी ही पुरानी यादें उनके मन के पटल पर दौड़ने लगती हैं। किसी को वो बरगद, आम,पीपल, शिरीष या अर्जुन के पेड़ों की घनी छाँव याद आ जाती है, तो किसी को मिट्टी की वो भीनी-सी सुगंध, किसी को वो ठंडी-ठंडी पवन के झोंके याद आ जाते हैं, तो किसी के मन को चौपाल की वो हंसी-ठिठोली करते लोग, परन्तु ऐसा कतई नहीं है कि चौपाल केवल हंसी मजाक का स्थान हुआ करता था। गंभीर से गंभीर मामले जैसे की जमीनी विवाद, आपसी झगड़ा एवं अन्य मुद्दा इन चौपालों पर गाँव , कस्बों के माननीय पंचायत के सदस्यों एवं अन्य सम्मानित व समझदार व्यक्तियों द्वारा बिना किसी रोष और आपत्ति के सुलझा लिए जाते थे।

ऐसा नहीं है कि चौपाल केवल मिट्टी के चबूतरे या केवल एक इमारत मात्र रहे हैं। बल्कि ये तो हमे देश की संस्कृति एवं विरासत को समेटे हुए हमें स्वर्णिम इतिहास की गवाही देती हैं। चौपाल इस बात का जीता जगता उदाहरण है कि हम भारतीय प्राचीन काल से ही सभी, सामाजिक और शांतिप्रिय रहे हैं ना कि असभ्य, बर्बर और अशिक्षित जैसे कि अंग्रेजो ने हमारे इतिहास को विकृत करने एवं स्वयं को उत्कृष्ठ एवं सर्वोच्च दर्शाने के लिए हमें निरुपित किया है। यह हमारी संस्कृति और हमारा पुरातन इतिहास ही है कि हमने हमारी इस स्वर्णिम धरोहर को अंग्रेजो के जाने के बाद भी भुलाया नहीं, बल्कि इसी चौपाल की बैठकों में अंग्रेजो से लड़ने के

लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने आम जनता को एकजुट हो कर उनके साथ हो रहे अन्याय एवं शोषण से उन्हें अवगत करवाया। यही चौपाल थी जहाँ से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सत्याग्रह, स्वदेशी एवं अंग्रेजो भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों में स्वास भरी व उनके विचारों को स्थानीय नेताओं ने आम जनमानस तक पहुँचाया। यही चौपाल गोपनीय बैठकों एवं स्थानीय प्रतिरोध के केंद्र बने और बड़े गर्व और गौरव से इन्हीं चौपालों से आम जनमानस को भारत की आजादी की सुनहरी एवं गौरवान्वित करने वाली खबर मिली।

यही चौपाल थे जहाँ से नए भारत ने उड़ान भरी, यही चौपालें थी जिनकी महत्वता को समझ कर आज़ाद भारत की सरकारों नें 74वें संविधान संशोधन के साथ जमीनी स्तर से शासन की घोषणा की एवं भारत में समावेशी एवं सतत विकास को नई दिशा एवं नई गति प्रदान की।

वर्तमान में ऐसा कतई नहीं है कि चौपाले आज के आधुनिकृत समाज में विलुप्त हो गयी हैं। किन्तु इन्होंने समय की धारा के साथ बदलाव का समावेश कर स्वयं का भी आधुनिकीकरण कर लिया है, इसके साथ ही आज भी जब भी कोई शहर से गाँव आता है तो उसकी सबसे पहली दौड़ चौपाल की ही और होती है। गाँव की उन पुरानी यादों की खुशबु आज भी उन दरारों वाली दीवारों में बसी है। गाँवों में आज भी बुजुर्गों को पुरातन काल की भांति चौपालों पर बैठ कर हंसी ठिठोली करते, बातचीत करते एवं राजनितिक मुद्दों पर चर्चा करते देखा जा सकता है। गाँव के शिक्षित युवाओं गैर-सरकारी संगठनों, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग से जुड़े व्यक्तियों व कर्मचारियों को इन्हीं चौपालों पर गांवों की जनता के हित एवं गाँव के विकास से जुड़ी महत्वपूर्ण व सामान्य जानकारी एवं योजनाओं/परियोजनाओं के बारे में बताते समझाते देखा जा सकता है।

राज्य सरकार हो या केंद्र सरकार ये भी इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं है कि वर्तमान में चौपाल जमीनी स्तर पर शासन जो की लोकतंत्र का तीसरा स्तर भी है उसके लिए अत्यंत आवश्यक है, इसीलिए आई.टी.सी ने विभिन्न सरकारों के साथ मिलकर वर्ष 2000 में ई-चौपाल की शुरुआत की जो की एक अग्रणी ग्रामीण डिजिटल बुनियादी ढांचा है। । ई-चौपाल की पहुँच वर्तमान में भारत के 10 राज्यों में है और इस पहल में अब लगभग 6,100 संस्थापन शामिल हैं, जिनकी 35,000 से अधिक गांवों तक पहुँच है और 40 लाख से अधिक किसानों को सेवा प्रदान करते हैं।

चौपाल के बारे में एक बात तो है कि चाहे भूतकाल में साँझा संस्कृति, न्याय का केंद्र एवं मनोरंजन का मंच होने के नाते यह हमारी धरोहर रहीं हो या फिर वर्तमान में आधुनिकता की आहट एवं बदलते स्वरुप में चौपालों ने डिजिटल रूप लेकर राजनितिक चेतना और भावनात्मक जुडाव पैदा किया, यह तो स्पष्ट है कि भविष्य में भी चौपाल तकनीक और परम्परा का संगम बनकर ज्ञान का केंद्र बनेंगी., लोगों को वर्चुअल कनेक्टिविटी प्रदान करेंगी तथा सामुदायिक उर्जा का केंद्र भी बनेंगी। चौपाल हमारे संस्कारों की पाठशाला है जहाँ हमने 'स्वयं' से पहले 'सर्व' को रखना सीखा। आज भले ही सीमेंट की जंगलों मधुमक्खी के छत्ते नुमा घर हों जिन्हें आजकल फ्लैट या अपार्टमेंट कहा जाता है ने हमें अपने अपने कमरों में कैद कर दिया हो, लेकिन एक स्वस्थ समाज के लिए आज भी 'साँझा संवाद' ही प्राण वायु हैं।

"गाँव की चौपाल पुकारती है आज भी, जहाँ रिश्तों की गर्माहट चाय की चुस्कियों से ज्यादा हुआ करती थी।"

समाज में नारी का स्थान



श्री हरि सिंह (लेखापरीक्षक)

नारी का स्थान भारतीय समाज में सदा से ही महत्वपूर्ण रहा है। भारत जैसा देश, जहाँ संस्कृति और परंपराओं का विशेष महत्व है, वहीं नारी केवल परिवार की आत्मा ही नहीं, बल्कि समाज की रीढ़ भी है। नारी के बिना समाज की कल्पना अधूरी लगती है। उसका स्थान केवल घर तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा रही है। जिस प्रकार एक नारी अपने जीवन में भिन्न-भिन्न भूमिकाओं को निभाती है, उसी प्रकार नारी ने भारतीय समाज की भिन्न-भिन्न समयावधि में भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को देखा है। मानव जाति के शुरुआत से ही नारी ने अपने सामाजिक अस्तित्व को प्रमाणित किया है। आगे इस लेख में हम प्राचीनकाल से आधुनिक युग तक नारी की अस्तित्व यात्रा की चर्चा करेंगे।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

प्राचीन काल में महर्षि मनु द्वारा रचित उपरोक्त पंक्ति प्राचीन काल में नारी के स्थान के संदर्भ में सहज परिलक्षित होती है जहाँ नारी को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था। वेदों में नारी को 'ऋषिकेयी' कहा गया है, जिसका अर्थ है, ज्ञान और शक्ति की धनी। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में भी नारी के आदर्श स्वरूप को दर्शाया गया है। रामायण जैसे भारतीय साहित्यों में उल्लेखित, राजा दशरथ के साथ रानी केकई के युद्ध में जाने की घटना और उनकी वीरता की कहानी प्रचलित है, कि कैसे उन्होंने युद्ध में राजा दशरथ के घायल होने के पश्चात उन्होंने अपना कौशल दिखाते हुए उनके प्राणों की रक्षा की। प्राचीन काल में रोमशा और लोपमुद्रा जैसी विदुषियों का भी वर्णन मिलता है, ऐसा भी माना जाता है इन्होने ऋषियों के साथ

मिलकर कई ऋचाओं (Hymns of the Rigveda) की रचना भी की थी। उपरोक्त उल्लेख से ज्ञात होता है, कि प्राचीन काल में नारी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलकर समाज में अपना योगदान सुनिश्चित करती थीं, लेकिन समय के साथ-साथ कुछ सामाजिक रूढ़ियाँ और परंपराएं नारी के स्थान को सीमित करने लगीं।

मध्यकाल में नारी की स्थिति निरंतर संघर्षमय रही। नारी पूर्ण मध्यकाल में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती ही प्रतीत होती है। मध्यकाल में व्याप्त कई सामाजिक कुरीतियों ने नारी की भूमिका को अत्यंत सीमित किया। मध्यकाल में बाहरी आक्रमण, आपसी संघर्ष ने जितना भारतीय राजनैतिक स्तिथियों को प्रभावित किया उतना ही प्रभावित नारी की स्तिथि को भी किया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा जैसी कुरीतियों ने प्राचीनकाल की सबल नारी को दुर्बल बना दिया। उल्लेखनीय है कि, इस काल में कुछ अद्वितीय कौशल और वीरता का प्रदर्शन करने वाली नारियां भी उभर कर आयीं। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल और महान शिवभक्त महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया।

मध्यकाल से आधुनिक काल आते-आते नारी स्थिति में काफी सुधार हुए। कई समाज सुधारकों ने नारी के अस्तित्व को पहचाना और उसके उत्थान के लिए कई प्रयास किये। इन समाज सुधारकों ने उस समय की कुरीतियों – जैसे कि सती प्रथा, बाल विवाह, शिक्षा का अभाव और स्त्रियों के अधिकारों की कमी इत्यादि को खत्म करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुछ प्रमुख समाज सुधारकों की भूमिका इस प्रकार है :-

1. **राजा राममोहन राय:** इन्होने सती प्रथा के खिलाफ गहन आंदोलन चलाया जिसके परिणामस्वरूप सन् 1829 में क़ानूनी रूप से सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया गया।

2. **ईश्वर चंद्र विद्यासागर:** इनके प्रयासों द्वारा ही बाल विवाह के विरोध में एवं विधवा विवाह के समर्थन में
सन् 1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून लाया गया।

3. **ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले:** बात जब लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोलना हो या फिर दलित और महिलाओं की शिक्षा पर जोर देना हो एवं इन्हें मुख्यधारा में लाने में ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले के प्रयासों को नकारा नहीं जा सकता।

4. **महात्मा गांधी:** राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने भी महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, आत्मनिर्भर बनाया एवं समाज में समान अधिकार दिलाने पर बल दिया।

5. **डॉ. भीमराव आंबेडकर:** बाबा साहब ने महिलाओं के अधिकारों के लिए कानून बनाए तथा हिंदू कोड बिल के माध्यम से महिलाओं को संपत्ति और विवाह संबंधी अधिकार दिलाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

आधुनिक काल नारी ने अपनी क्षमताओं को समझा और समाज में आपनी भूमिका सुनिश्चित की साथ ही भारतीय समाज को भी ज्ञात हुआ कि मानव समाज की प्रगति हेतु नारी की भूमिका पुरुषों जितनी ही महत्वपूर्ण है। आज की नारी शिक्षा, रोजगार, राजनीति, खेल, विज्ञान और कला सहित हर क्षेत्र में पुरुषों के समान ही अपना योगदान दे रही है। महिला सशक्तिकरण के कारण महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई हैं। उन्होंने अपने हक के लिए संघर्ष किया है और समाज में अपनी एक नई पहचान बनाई है।

वर्तमान में नारी ने शिक्षा, व्यवसाय, राजनीति, खेल और सामाजिक क्षेत्र में अपना प्रभावी स्थान बनाया है। महिलाएं डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, अधिकारी, नेता और कलाकार बन कर समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। नारी ने साबित किया है कि वह किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है।

समाज में नारी का सही स्थान तभी संभव है जब उसे समान अधिकार, सम्मान और सुरक्षा मिले। नारी के बिना परिवार और समाज की कल्पना अधूरी है। नारी माँ है, बहन है, बेटी है, पत्नी है और वह जीवन के हर क्षेत्र में अपने योगदान से समाज को सशक्त बनाती है। इसलिए हमें नारी को वह सम्मान देना चाहिए जिसकी वह हकदार है और उनके अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। नारी का सम्मान समाज के विकास का आधार है। जब नारी सुरक्षित और सशक्त होगी तभी समाज में समरसता और प्रगति संभव होगी ।

अंत में कहा जा सकता है कि नारी जीवन की आधारशिला है। उसका सम्मान और सशक्तिकरण समाज को सुंदर, समृद्ध और विकसित बनाता है। हमें नारी के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलकर उसे समान अधिकार और सम्मान देना चाहिए ताकि समाज में उसकी प्रतिभा और शक्ति का सही उपयोग हो सके। समाज में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। नारी के सम्मान और सशक्तिकरण से ही समाज में सही बदलाव आ सकता है। हमें नारी को पुरानी परंपराओं की बेड़ियों से मुक्त कर उसे उसकी वास्तविक पहचान दिलानी चाहिए ताकि वह समाज का सशक्त स्तंभ बन सके और इसके कई उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी रूढ़िवादी सोच से बाहर निकलकर दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। रानी लक्ष्मीबाई, कल्पना चावला, पी. वी. सिन्धु, इंदिरा गाँधी, किरन बेदी एवं मैरी कॉम उनमें से कुछ ऐसी हस्तियाँ हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल करके महिलाओं के प्रति समाज की सोच को पूरी तरह से बदल दिया है। आज सरकार द्वारा भी महिलाओं के हित में कई सारी योजनाएँ चलाई जा रही है। बेटी बचाओ-बेटी पढाओ, सुकन्या समृधि योजना एवं अलग-अलग क्षेत्रों में महिलाओं को आरक्षण भी दिया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक महिलाएं खुद के विकास के साथ-साथ देश के विकास में भी अपना योगदान दे सके।

अंत में नारी के सम्मान में सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं :-

“नारी नहीं केवल सखी है,
नारी नहीं केवल ममता है,
यह जग का आधार है नारी”

मीटिंग: जहाँ आपत्तियाँ कम और चाय ज़्यादा गरम होती है



श्री दिपेश कुमार गुप्ता
(व.ले.प.)

सरकारी लेखापरीक्षा कार्यालय में अगर किसी एक शब्द का सबसे अधिक उच्चारण होता है, तो वह है — **"मीटिंग"**। और अगर किसी एक शब्द से सबसे अधिक भावनाएँ जुड़ी होती हैं, तो वह भी — **"मीटिंग"** ही है। जैसे ही यह सूचना मिलती है कि *आज दोपहर 3 बजे समीक्षा बैठक है*, पूरे अनुभाग में ऐसी हलचल मच जाती है मानो किसी ने अचानक "विशेष ऑडिट निरीक्षण" की घोषणा कर दी हो।

कोई अपनी फाइलें ऐसे सहेजने लगता है जैसे परीक्षा से पहले छात्र अपनी किताबें व्यवस्थित करता है, कोई पुराने नोट्स और नियमावलियाँ पलटने लगता है, तो कोई चुपचाप अपने मन से पूछता है — *कहीं आज मेरी ऑडिट आपत्ति पर विशेष चर्चा तो नहीं होनी?* कई अनुभवी कर्मचारी मन ही मन यह भी जोड़ लेते हैं — *और अगर हो भी गई, तो चाय तो मिलेगी ही।*

सरकारी लेखापरीक्षा कार्यालय की मीटिंग आम ऑफिस मीटिंग से बिल्कुल अलग होती है। यहाँ केवल विचारों का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि **नियम, उपनियम, अनुच्छेद, वित्तीय संहिता, परिपत्र और पूर्व उदाहरण** — सब मिलकर एक अद्भुत बौद्धिक संगम बना देते हैं। कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम मीटिंग में नहीं, बल्कि संविधान, वित्तीय नियमावली और ऑडिट मैनुअल की संयुक्त संगोष्ठी में बैठे हैं।

मीटिंग का पहला चरण होता है — **पिछली बैठक की कार्यवाही की समीक्षा**। यह वह पल होता है जब सभी अधिकारी अचानक अत्यंत गंभीर, सजग और जिम्मेदार दिखाई देने लगते हैं। हर कोई यह साबित करने में लगा रहता है कि उसने अपने हिस्से का काम *"लगभग पूरा"* कर लिया है। "लगभग" शब्द यहाँ इतना लचीला होता है कि उसमें एक दिन से लेकर एक महीना तक आराम से समा जाता है।कुछ लोग अपनी फाइलों को इस प्रकार पलटते हैं मानो उनमें ब्रह्मांड के रहस्य छिपे हों, तो कुछ ऐसे आत्मविश्वास से बोलते हैं जैसे पूरा अनुभाग उन्हीं के कंधों पर टिका हो। इसी दौरान किसी वरिष्ठ अधिकारी की हल्की-सी खाँसी पूरे कक्ष को अचानक गंभीर मौन में बदल देती है।इसके बाद आता है मीटिंग का सबसे रोचक, रोमांचक और कभी-कभी भयावह हिस्सा — **ऑडिट आपत्तियों पर चर्चा**। यहाँ एक-एक शब्द को ऐसे तोला जाता है जैसे जौहरी हीरे की परख करता है। छोटी-सी त्रुटि भी कभी-कभी इतनी बड़ी प्रतीत होती है मानो बजट में सेंध लग गई हो।

कई बार कोई फाइल वर्षों पुरानी निकल आती है, जिसे देखकर लगता है कि यह दस्तावेज़ नहीं, बल्कि कार्यालय की विरासत है। ऐसे में चर्चा नियमों से निकलकर इतिहास, परंपरा और अनुभवों तक पहुँच जाती है। वरिष्ठ अधिकारी अपने पुराने निरीक्षणों के किस्से सुनाते हैं और युवा अधिकारी उन्हें बड़े ध्यान से सुनते हैं — कभी सीखने के लिए, तो कभी भविष्य की मीटिंगों से भय कम करने के लिए।

मीटिंग के इस गंभीर वातावरण में अचानक वह क्षण आता है, जिसकी प्रतीक्षा पूरे सभागार को होती है — **चाय का आगमन**। जैसे ही चाय की ट्रे कक्ष में प्रवेश करती है, वातावरण में एक जादुई परिवर्तन हो जाता है। गंभीर चेहरे मुस्कान ओढ़ लेते हैं, आवाज़ों में मिठास आ जाती है और चर्चाओं में मानवीय गर्माहट घुल जाती है।

कई बार तो ऐसा लगता है कि मीटिंग का असली उद्देश्य ही चाय था और बाकी सब औपचारिकताएँ। चाय की पहली चुस्की के साथ ही थकान थोड़ी कम हो जाती है, और दिमाग़ फिर से तरोताज़ा महसूस करने लगता है। बिस्कुट की संख्या पर हल्की-सी नज़र डाली जाती है — कहीं कम तो नहीं पड़ जाएँगे!

चाय के साथ-साथ बातचीत भी नियमों की सीमाओं को पार कर जीवन-दर्शन, पुरानी पोस्टिंग, स्थानांतरण अनुभव, ऐतिहासिक ऑडिट निरीक्षण और "उस समय की मीटिंग" तक पहुँच जाती है। कई बार चर्चा इतनी रोचक हो जाती है कि घड़ी की सुइयाँ भी जैसे थम-सी जाती हैं।

सरकारी लेखापरीक्षा कार्यालय की मीटिंग का एक विशेष गुण है — **संतुलन**। यहाँ उद्देश्य केवल कमियाँ निकालना नहीं, बल्कि पूरी प्रणाली को बेहतर बनाना होता है। इसलिए आलोचना के साथ-साथ समाधान भी खोजे जाते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल व्यवस्था को मजबूत करता है, बल्कि कर्मचारियों में जिम्मेदारी और स्वामित्व की भावना भी विकसित करता है।

मीटिंग का एक और रोचक पहलू होता है — **तकनीकी शब्दावली**। कई बार चर्चाओं में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है कि नए कर्मचारी मन ही मन शब्दकोश ढूँढने लगते हैं पर समय के साथ यही शब्द उनके रोज़मर्रा की भाषा का हिस्सा बन जाते हैं और वे भी पूरे आत्मविश्वास से इन्हें प्रयोग करने लगते हैं।

जैसे-जैसे मीटिंग आगे बढ़ती है, समय की गंभीरता भी बढ़ती जाती है। अब सभी की निगाहें घड़ी पर टिकने लगती हैं। लेकिन ठीक इसी समय कोई नया बिंदु सामने आ जाता है और चर्चा फिर से विस्तार पकड़ लेती है। यह

वह क्षण होता है जब मन कहता है — *बस अब समाप्त हो जाए*, लेकिन नियम कहते हैं — *अभी तो बहुत कुछ बाकी है।*

मीटिंग का अंतिम चरण होता है — **निष्कर्ष और कार्य योजना**। यहाँ यह तय किया जाता है कि आगे क्या कदम उठाए जाएँ, कौन जिम्मेदार होगा और समय-सीमा क्या रहेगी। कुछ निर्णय तुरंत ले लिए जाते हैं, तो कुछ विषय अगली बैठक के लिए सुरक्षित रख लिए जाते हैं।

कई बार डेढ़-दो घंटे की गहन चर्चा के बाद जब यह निर्णय होता है कि *"इस विषय पर अगली मीटिंग में विस्तार से विचार किया जाएगा"*, तब कुछ चेहरे ऐसे हो जाते हैं मानो उनकी पूरी मेहनत को रिसाइक्लिंग प्रक्रिया में डाल दिया गया हो। फिर भी मन में यह संतोष रहता है कि बात टली है, टली नहीं है।

फिर भी, सरकारी लेखापरीक्षा कार्यालय की मीटिंग का महत्व अत्यंत गहरा है। यह केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि **पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और वित्तीय अनुशासन की जीवंत प्रयोगशाला** है। यही मीटिंग हमें यह एहसास कराती है कि हमारा कार्य केवल फाइलों तक सीमित नहीं, बल्कि देश की आर्थिक व्यवस्था की सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है।

यहाँ लिया गया प्रत्येक निर्णय, प्रत्येक टिप्पणी और प्रत्येक सुझाव भविष्य की नीतियों और कार्यप्रणालियों को प्रभावित करता है। यही कारण है कि मीटिंग को केवल समय की बर्बादी समझना, इसके महत्व को कम आंकना होगा।

अंततः कहा जा सकता है कि मीटिंग हमारे कार्यालय जीवन की वह धुरी है, जिसके चारों ओर नियम, प्रक्रिया, अनुभव, सीख और संबंध घूमते हैं। यह हमें न केवल पेशेवर रूप से सशक्त बनाती है, बल्कि मानवीय रूप से भी समृद्ध करती है।

और हाँ, अगली बार जब मीटिंग की सूचना मिले, तो मन ही मन यह मत कहिए — ***"फिर वही..."***

बल्कि मुस्कुरा कर सोचिए — **"चलो, आज फिर नियमों के बीच चाय कीखुशबू घुलेगी, और शायद कोई नई सीख भी मिलेगी!"**



कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की कुछ झलकियां





इस अवसर पर पुरुष कार्मिकों द्वारा विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ठ व्यंजन बनाए गए एवं महिला कार्मिकों को परोसे गए।





मेरी घृष्णेश्वर यात्रा



श्री अमनदीप
(लेखापरीक्षक)

जीवन में लगातार एक ही तरह की दिनचर्या के कारण किसी को भी बोरियत होने लगती है | मैं भी इसी परिस्थिति का मारा हूँ | रोज सुबह जागकर अपने लिए भोजन पकाना, कार्यालय आना, अपने दैनिक कार्यों को पूरा करना, शाम को वापस जा कर पुनः भोजन पकाना, भोजन के पश्चात कुछ किताबें पढना या दोस्तों से बातें करना, मोबाइल चलाना फिर सो जाना | ये मेरी रोज की दिनचर्या हो गयी थी | लगातार इस तरह की दिनचर्या के कारण मन में उदासीनता आने लगी थी तथा कार्यालय के कार्य में भी अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रहा था | इन्हीं परिस्थितियों से उबरने के लिए मानव ने त्योहारों को मनाना शुरू किया होगा या कही सैर करने का विचार किया होगा, ऐसा मेरा मानना है |

किसी ने सच ही कहा है, एक अच्छा मित्र जीवन की कई सारी परेशानियों को हल कर देता है या उन्हें हल करने में सहायक होता है | इस परिस्थिति से भी मुझे मेरे एक मित्र ने बाहर निकाला जो अभी हैदराबाद के लेखापरीक्षा कार्यालय में कार्यरत हैं | एक शाम कार्यालय से जाने के बाद मुझे उनका फ़ोन आया, कुशल-क्षेम पूछने के बाद उन्होंने मेरे समक्ष अब छत्रपति संभाजी नगर (महाराष्ट्र), जो पहले औरंगाबाद के नाम से जाना जाता था, चलने का प्रस्ताव रखा | उन्होंने कहा कि वहाँ स्थित घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग, जो 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, के दर्शन कर लेंगे साथ ही साथ एलोरा की गुफाएं भी देख लेंगे | वहां स्थित बीबी का मकबरा, जिसे छोटा ताजमहल भी कहते हैं, वहाँ भी हो आयेंगे |

उनके शब्दों में जैसे किसी नई ऊर्जा का संचार था। उस समय वह प्रस्ताव मुझे जंच गया और बिना किसी विलंब के मैंने सहमति दे दी। | मैंने सोचा कि शनिवार-रविवार में घूमना भी हो जाएगा एवं दिनचर्या में बदलाव हो जाएगा , नई जगह की सैर हो जायेगी तथा पुराने मित्र से मिलना भी हो जाएगा | यदि कहीं घूमने का अवसर मिल जाए तथा कोई अवकाश न लगाना पड़े, इसकी एक अलग ही ख़ुशी होती है | मुझे उम्मीद है कि मेरे सभी सहकर्मी मेरी इस बात से अवश्य सहमत होंगे |

यात्रा की योजना बनाना भी अपने आप में एक रोमांच होता है। खैर, योजना बन जाने के बाद सबसे पहला चरण होता है कि गंतव्य पर पहुँचे कैसे? अहमदाबाद से दो माध्यम सुलभ हैं, बस एवं ट्रेन | हमने योजना बनाने के अगले हफ्ते ही वहाँ जाना तय किया था जिसके कारण ट्रेन में सीट उपलब्ध नहीं थी | एक परिस्थिति और थी कि अहमदाबाद से छत्रपति संभाजी नगर डायरेक्ट ट्रेन नहीं जाती और बसों में सीट उपलब्ध थी परन्तु बस अधिक समय लेती जिसके परिणामस्वरूप हमारे पास घूमने का समय कम हो जाता | मुझे व्यक्तिगत रूप से बसयात्रा की अपेक्षा रेलयात्रा ज्यादा पसंद है |

इस परिस्थिति में भी मेरे मित्रों ने मेरी बहोत सहायता की जिसके लिए वो सदा धन्यवाद के पात्र रहेंगे | सलाह के उपरांत यह तय किया गया कि अहमदाबाद से जलगाँव की ट्रेन में टिकट तत्काल में कर ली जाए | वहां से आगे की 150 कि.मी की यात्रा बस से तक की जायेगी | वापसी की योजना भी इसी क्रम में बनी |

कार्यालय के मित्रों की सहायता से मेरे आने और जाने के तत्काल टिकट की व्यवस्था हो गयी | शुक्रवार की शाम कार्यालय की कार्यावधि समाप्ति के पश्चात मैंने कॉमर्स सिक्स रोड मेट्रो स्टेशन से कालूपुर रेलवे स्टेशन मेट्रो स्टेशन के लिए मेट्रो पकड़ी तथा समयानुसार रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया | मन में नयी जगह पर घूमने का उत्साह तथा पुराने मित्र से मिलने की ख़ुशी थी |

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से शाम 06:50 बजे मैं ट्रेन में सवार हुआ, सौभाग्य से एक अन्य सहकर्मी भी मिल गये जिन्हें सूरत जाना था | बातें करते करते

सूरत आ गया | उनके जाने के बाद शेष यात्रा मैंने सो कर गुजारी | अगली सुबह 04:00 बजे मैं जलगाँव स्टेशन उतरा | उस समय अँधेरा था तो मैंने थोडा उजाला होने का इंतज़ार किया | वहां मैंने पूछताछ की तो एक सज्जन ने बताया कि यहाँ से बस द्वारा औरंगाबाद जाने में लगभग 5 घंटे लग जायेंगे और फिर औरंगाबाद से वेरुल, जहाँ घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है, वहाँ वापस आना पड़ेगा जिसमे एक घंटे और लगेंगे | उन्होंने कहा की जलगाँव जंक्शन से चालीसगाँव जंक्शन ट्रेन से चले जाओ जिसमे एक घंटे लगेंगे फिर वहाँ से बस से चले जाना जिसमे 02 घंटे और लगेंगे | इस प्रकार तुम्हारे पैसे एवं समय दोनों की बचत होगी |इस सुझाव के लिए मैंने उस सज्जन का धन्यवाद किया और ट्रेन का पता किया परन्तु दुर्भाग्य से उस समय कोई ट्रेन नहीं थी जो चालीसगांव जाये | अगली ट्रेन 04 घंटे के बाद आने वाली थी | अतः मैंने बस से आगे जाने का फैसला लिया | मैंने जलगाँव जंक्शन से जलगाँव बस स्टैंड जाकर चालीसगांव की बस ली तथा चालीसगांव से घृष्णेश्वर मंदिर की बस ली जिसमे मुझे कुल 04:30 घंटे लगे |

वहाँ पहुचकर मैंने अपने मित्र से मुलाकात की तथा रुकने की व्यवस्था करने लगे | अगले दिन शिवरात्रि होने के कारण सभी होटल वालों ने किराया बढ़ा रखा था परन्तु मेरे मित्र की बारगेनिंग स्किल्स के कारण हमें हमारे बजट में कमरा मिल गया | मेरा सुझाव है कि ऐसे पर्यटन स्थलों/ तीर्थ स्थलों पर होटल वालों से बारगेनिंग अवश्य करनी चाहिए |

हमारा होटल मंदिर के नजदीक ही था तो नहाकर हम दोनों दर्शन के लिए निकल गए | यह मंदिर ज्योतिर्लिंगों के मंदिरों में सबसे छोटा है तथा यह ज्योतिर्लिंग 12वा ज्योतिर्लिंग है | दर्शन करके बाहर आने में हमें एक घंटा लग गया | इस मंदिर में दर्शन के लिए जाने वाले पुरुष श्रद्धालुओं को उपरी वस्त्र उतारने होते हैं जो मुझे एक अनूठी परंपरा लगी | दर्शनोपरांत प्रसाद के रूप में इस मंदिर में रुद्राक्ष दिए जाते हैं जो अपने आप में अद्वितीय है | इसके पश्चात हमने एलोरा गुफाओं का रुख किया जो मंदिर से एक किलोमीटर की दूरी पर है | ये गुफाएं 600-1000 ईस्वी के दौरान बनायी गयी हैं | ये सभी गुफाएं एक पत्थर/ पहाड़ को काटकर बनायीं गयी है | यहाँ बनाया गया भव्य कैलाश मंदिर उस समय की स्थापत्य कला का जीवंत

उदहारण है | यहाँ पत्थरों पर उकेरी गयी कृतियाँ किसी भी कलाप्रेमी को मंत्रमुग्ध करने के लिए पर्याप्त हैं | यह UNESCO द्वारा घोषित एक विश्व धरोहर स्थल है |

मेरे मित्र का मानना है कि भारत में कहीं घुमने जाने के दौरान हमें पर्यटक की तरह न जाकर तीर्थयात्री की तरह जाना चाहिए ताकि गंतव्य स्थान के साथ-साथ रास्तों का भी आनंद आता रहे | मैं भी उनके इस विचार से सहमत हूँ | इसी सोच के अनुसार काम करते हुए शाम तक जब हम दोनों थक कर होटल पहुचे तब तक हम 15 किलोमीटर पैदल चल चुके थे, थक गए थे पर थकान में भी एक अजीब-सी तृप्ति थी | होटल आकर हमने हाथ-मुंह धोकर खाना खाया एवं जल्दी सो गए |

अगली सुबह चिड़ियों की आवाज से मेरी नींद खुली | होटल की छत से सामने पहाड़ दिख रहा था जिसकी ओट से सूरज आकाश को केसरी रंग में रंगते हुए निकल रहा था | चिड़ियों का चहकना, पहाड़ की तलहटी के खेतों में लगी गेहूं की फ़सल, उनके किनारे लगे पेड़ और फूलों की खुशबू, ये सब मिलकर सुबह को मनोरम बना रहे थे | बहुमंजिला इमारतों में रहते हुए, ज्यादा आबादी वाले इलाकों और प्रदूषण में रहने वाले लोगों के लिए वैसी जगह स्वर्ग से कम नहीं है |

हम जल्दी ही तैयार हो गए एवं जलपान करने के बाद हमने सबसे पहले नजदीक स्थित अहिल्याबाई होलकर शिवालय तीर्थकुंड के दर्शन किये फिर छत्रपति संभाजी नगर (औरंगाबाद) के लिए बस ली| एक घंटे की यात्रा के बाद हम छत्रपति संभाजी नगर बस अड्डे पर पहुचे | वहां से 3 किलोमीटर पैदल यात्रा कर हम बीबी का मकबरा पहुचे | इसे मुग़ल शासक औरंगजेब ने अपनी बेगम राबिया दुर्रानी के लिए बनवाया था | यह इमारत सफ़ेद संगमरमर की बनी है एवं इसे ताजमहल की तरह बनाया गया है | हालाँकि यह ताज महल की अपेक्षा काफी छोटी है परन्तु यह भी देखने योग्य स्थान है |ये इमारत अपने आप में एक शांत और सुसंस्कृत सौंदर्य का प्रतीक लगी। वापसी में हमने वहाँ का प्रसिद्ध वड़ापाव खाया और मैंने अपने मित्र से विदा ली | उनकी ट्रेन छत्रपति संभाजी नगर स्टेशन से थी | मैंने वहां से

चालीसगांव की बस ली जिसने मुझे लगभग दो घंटे में चालीसगांव पहुंचा दिया| वहां से चालीसगांव जंक्शन लगभग एक किलोमीटर की दुरी पर था | चालीसगांव जंक्शन बहुत सुन्दर रेलवे स्टेशन है | क्षेत्रफल अधिक होने के कारण वहां भीड़ कम प्रतीत हो रही थी और स्टेशन की साज-सज्जा और सफाई भी बहुत अच्छी थी | मैंने जलगाँव जंक्शन की ट्रेन पकड़ी जिसने एक घंटे में मुझे जलगाँव जंक्शन पहुंचा दिया | जलगाँव जंक्शन से अहमदाबाद के लिए मेरी ट्रेन के आने में अभी वक़्त था तो मैंने वहां आस-पास के बाजार की सैर की और खाना खाया |

वहां से ट्रेन ले कर मैं अगले दिन सुबह 06:30 बजे अहमदाबाद जंक्शन पर पहुंचा | इस यात्रा के बाद मैं काफी तरोताजा महसूस कर रहा था| कार्यालय आकर मै पूरे मन से अपने काम में लग गया और मैंने स्वयं को पहले से अधिक ताज़गी और उत्साह से भरा हुआ पाया | मेरा सुझाव है कि हम सभी को अपने व्यस्त जीवन से समय निकाल कर थोड़े अन्तराल के लिए ही सही कहीं घूमने अवश्य जाना चाहिए | इससे हमारे जीवन की नीरसता दूर होती है, आत्मविश्वास सुदृढ़ होता है एवं नए अनुभव मिलते हैं जो हमारे जीवन को सरस एवं सुखद बनाते हैं| प्रकृति,संस्कृति और अध्यात्म के सानिध्य में ही जीवन का वास्तविक रस छिपा है |

वक्त बलवान भी है और मूल्यवान भी



श्री नरेश सिंह
(स.ले.प.अ.)

अक्सर जब हम आपस में मिलते हैं जब किसी न किसी मुद्दे पर चर्चा आरम्भ हो ही जाती है। यह अक्सर नहीं होता कि पहले मुद्दे को पक्का किया जाए और बाद में मिलकर उस पर चर्चा की जाए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घर की बात करते करते पड़ोसियों के बारे में बात करने लगते हैं और अचानक एक विदेशों के मुद्दों को शामिल कर लेता है और सभी अपनी राय उस पर शुरू कर देते हैं। फिर अचानक एक ने बात काटी और दूसरे मुद्दे को शामिल कर दिया।

एक बात अक्सर मैंने देखी है कि जब चर्चा मंडली ख़त्म होती है और बाद में उस एक घंटे या दो घंटे या जितना भी समय किसी विषय की चर्चा की गई हो, उसका निचोड़ नहीं निकलता या ऐसा कहें कि उस चर्चा का सार क्या रहा या यूँ कहें कि उस चर्चा का क्या फ़ायदा हुआ ? इन सवालों के जवाब को पाना बहुत कठिन है। यदि किसी तरह ने कोई तुक्के वाला सार या फायदा गिनाया भी, तब उसको समझना और भी मुश्किल होगा। जहाँ तक मैं इस विषय को समझ कर कहूँ तो सार या फायदा गिनाना असंभव है, क्योंकि वह सिर्फ समय पास करने तक ही सीमित रहा और किसी ने इसके सार और फायदे के बारे में सोचना महत्वपूर्ण समझा ही नहीं। उसने यह नहीं सोचा कि जो समय इस पर जाया किया जाएगा उसका भी अपना मूल्य है। यह ठीक है कि कभी-कभी हल्के-फुल्के अंदाज़ से मन हल्का करने के लिए समय का आनंद भी लेना चाहिए लेकिन दुखद यह है कि यह विषय कभी-कभी यहीं तक कभी सीमित नहीं रहा और अमूमन एक रवैया सा हो गया है। मैं इस बात के खिलाफ नहीं हूँ लेकिन मैं यह सोचता हूँ कि समय को बलवान और मूल्यवान समझते हुए हमें समय की कद्र करनी चाहिए

और समय का सदुपयोग करना चाहिए। हमें यह मान लेना चाहिए कि समय बलवान भी है और समय मूल्यवान भी है।

एक दिन अपने कार्यालय के साथियों के साथ मैं भी पहले से जारी चर्चा में शामिल हो गया। चर्चा कहाँ से शुरू हुई यह मैं नहीं जानता पर मैंने जब चर्चा में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई तब चर्चा का विषय था कि ऑडिट कॉलोनी के जहाँ फ्लैट बने हैं वहाँ कभी नदी बहती थी। मैंने आम चर्चा के रवैये को अपनाते हुए कहा कि चलो एक बात बताओं कि सबसे बलवान क्या है और जो मूल्यवान भी जो ? किसी ने सूरज को कहा किसी ने अमेरिका को कहा किसी ने जवानी को कहा किसी ने हिम्मत को बताया और कोई हिम्मत को ही हौसला कह कर अपनी बात कहने लगा। बात इतनी-सी थी लेकिन सभी अपने तर्क को बेहतर बताने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे और दूसरे को गलत साबित करने में पूरा जोर लगा रहे थे। जब कभी ऐसा लगा की बात नहीं बन रही है तब दो-दो का समूह बन गया और एक और एक ग्यारह को बनाते हुए अपनी बात को मनवाने की दौड़ में इस तरह शामिल हुए जैसे मानों कि आज यदि अपनी बात को सिद्ध कर दिया तो वह सिकंदर होगा और शेष जीवन आसान हो जाएगा। हो सकता हो किसी ने यह भी सोचा हो कि यदि कभी इसके लिए पुरस्कार की घोषणा हुई तो तमगा भी हासिल होगा और रूतबा भी बढ़ेगा। खैर, जब ऐसे ही कि कुछ समय निकल गया और किसी की दाल नहीं गली तो सभी ने सामंजस्य के साथ कहा अब खुद ही बताओं और एक दूसरे ने आँखों ही आँखों में ईशारा किया जैसे वो मुझे चर्चा में बकरा बनाने वाले हो। लेकिन उम्र के अनुसार मेरा अनुभव कह रहा था कि मैं इस वक्त चाहे सही भी रहूँगा तब भी मेरी बात को काटने की कोशिश होगी। मैंने कहा कि मैं जब ही अपना विचार बताऊंगा जब मुझे बात को सिद्ध करने का मौका भी मिलेगा। बात तय हो गई और मैंने अपनी बात रखनी शुरू कर दी।

मैंने कहा कि वक्त से बलवान कुछ भी नहीं है। जैसे ही मैंने कहा तभी एक टेलीविज़न की चर्चा करवाने वाले एंकर की तरह बीच में तुरंत कूदते हुए कहा कि यह कैसे। उन्हें शायद यह उम्मीद थी कि मैं इस कथन के साथ ही विराम देने वाला हूँ। मैंने कहा आप पहले मेरी बात को ख़त्म होने दे, जब

ही आप सवाल करना। एक बार फिर तय हुआ और मैंने अपनी बात को आगे बढ़ाना शुरू किया।

मैंने कहा यह वक्त ही है जिसने अपने फेर में कि दुनिया के सबसे शक्तिशाली योद्धाओं में से कोई भी अपनी पत्नी की रक्षा नहीं कर पाने के लिये असहाय बना दिया। मेरा ईशारा महाभारत के एक किस्से से था। मैंने कहा कि इसी वक्त के फेर ने कौरव, जिनके पास श्री कृष्ण की विशाल नारायणी सेना सहित कुल 11 अक्षौहिणी सेना और भारत के बड़े-बड़े योद्धा थे, पांडव की मात्र 7 अक्षौहिणी सेना के आगे बेबस रहे। यही पांडव जो भरी सभा में वक्त के फेर के कारण असहाय रहे, अब कौरव पर भारी पड़े और उनका वजूद मिटा दिया। मैंने आगे कहा कि जिस अर्जुन के तीर के आगे कोई नहीं टिक पाता था वही एक दिन बेबस था। तुलसी ने भी समय के महत्व और प्रभाव के समझते हुए कहा है कि मनुष्य बड़ा नहीं होता, समय बलवान होता है। तुलसी ने अपने दोहे में अर्जुन की बात करते हुए कहा है कि :

"तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान।

भीलां लूटी गोपियाँ, वही अर्जुन वही बाण॥"

अर्थात नर का क्या बड़ा होना, समय ही बड़ा है, समय ही बलवान है। भील जब गोपियों को लूट रहे थे तब वही अर्जुन और वही बाण कुछ नहीं कर पाया। साधारण शब्दों में व्यक्ति स्वयं शक्तिशाली नहीं होता, बल्कि उसका **'समय'** उसे शक्तिशाली बनाता है। जब समय अनुकूल था, तब अर्जुन ने कुरुक्षेत्र जीत लिया, लेकिन समय बीत जाने पर वे साधारण लुटेरों से भी नहीं जीत सके।

मैंने अपनी बात को रामायण से जोड़ते हुए कहा कि रावण जिसके पास तीनों लोक का साम्राज्य था, जिसके सभी भाई और बेटे बड़े योद्धा थे, वह भी वक्त के कारण धराशायी हो गया और कुछ नहीं कर पाया।

मैंने इतना कहा ही था तभी एक ने कहा कि यह तो श्रीकृष्ण और श्री राम की देव शक्ति थी। मुझे अंदेशा था कि यह बात जरुर उठेगी और उठी भी। तब मैंने अपनी बात को बढ़ाते हुए कहा कि सम्राट सिकंदर जो विश्वविजेता बनने के लिए मात्र बीस वर्ष की आयु में अपने अभियान में लग गया और

बारह वर्ष तक युद्ध पर युद्ध जीतता रहा, वह भी मात्र बत्तीश वर्ष की उम्र में चल बसा। इतिहास में ऐसा कहा गया है कि जब उसे अपनी मौत का एहसास हुआ तब उसने कहा था कि मेरी अर्थी में से हाथ बाहर निकाल कर रखना और मेरी अर्थी को बड़े-बड़े वैद्य ही कंधा देगें ताकि लोगो को पता लग सके जब वक्त आया तब सिकंदर खुद को भी नहीं बचा पाया और ना ही उसे उसके वैद्य। वक्त के आगे सब चारों खाने चित हो गए। मैंने सभी की तरफ देखा और सोचा शायद कोई कुछ कहेगा, लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा।

मैंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि खालिद इब्न अल-वालिद जो एक अरेबियन योद्धा था, उसने इतिहास में 100 से ज्यादा युद्ध लड़े लेकिन कभी नहीं हारा और उसे ही उसके राजा ने सभी पदों से हटा दिया और अगले साल वह भी मिट्टी में मिल गया, वह भी बिना लड़ें। जिसे 100 से ज्यादा युद्धों में मौत अपने आवेश में नहीं ले सकी वह युद्ध के मैदान के बाहर अपनी जिन्दगी की लड़ाई हार गया।

एक और तथ्य के साथ मैंने कहा कि राजा हरिश्चंद्र के बारे में तो जानते ही होंगे जो कभी इतना बड़ा राजा था और वक्त ने ऐसा दिन दिखाया कि वह श्मशान घाट पर नौकरी करने लगा। राजा नल के बारे में तो सुना ही होगा कि राजा होकर वक्त के फेर में अपने भाई से जुए में सब कुछ हार गया। वक्त ने फिर ऐसा पलटा कि वही दरिद्र राजा नल जो रथ का सारथी बनकर जीवन जीने लगा था, बाद में पुन: राजा बन गया।

अपने तथ्यों को और शामिल करते हुए मैंने आगे कहा किसी समय में अंग्रेजों के राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था, बड़े से बड़े देश उसके गुलाम थे। आज ब्रिटेन विश्व की महाशक्ति नहीं है। वह आज अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस, जैसी शक्तियों की कतार में पीछे है। सच कहूँ तो ग्लोबल फायरपावर की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली सैन्य ताकत है, यानी हम ब्रिटेन से अभी आगे हैं जिसके हम 1947 तक गुलाम थे। यह वक्त ही है जब करवट बदलता है, तब दिशा और दशा सब बदल जाता है। बड़ी से बड़ी शक्ति भी विहीन हो जाती है। जो धन के भंडार हैं, वे भी खाली हो जाते हैं। मैंने कहा कि जहाँ हम खड़े है, वहाँ पहले नदी थी ,

जिसके उफान के आगे कोई कुछ नहीं कर पाता था। आज हम यहाँ पर खड़े हैं , उसी जगह पर उस नदी का अस्तित्व ही नहीं रहा। वक्त को कोई मात नहीं दे सका और ना ही कोई इसे मुट्ठी में कर सका। घड़ी वक्त बताती है, लेकिन वह भी वक्त को नहीं रोक सकती। वक्त ही है जिसने सूरज के ताप को कम किया। यह वक्त ही है जिसने धरती, जो पहले आग का गोला थी, उसके ताप को भी ठंडा किया, नहीं तो हम नहीं होते।

मैं अचरज कर रहा था कि मुझे बीच में रोका नहीं जा रहा। अब मैंने कहा किसी को कुछ कहना है तो कहो। एक ने कहा यह वक्त नहीं बल्कि किस्मत का खेल है। मैंने उसकी बात को आगे बढ़ाते हुए सभी से पूछा कि क्या इसे किस्मत कह सकते हैं ? मिले-जुले मंद-मंद स्वरों से अहसास हुआ कि सभी एकमत नहीं थे। मैंने कहा यदि यह किस्मत है तो किस्मत बलवान तो हो सकती है लेकिन मूल्यवान कैसे ? लेकिन फिर मैंने अपनी बात को ही काटते हुए कहा कि यदि यह किस्मत है तो धरती की किस्मत किसने लिखी ? सूरज की किस्मत किसने लिखी ? जब भी बुरा वक्त आता है या अच्छा वक्त आता है, हम अक्सर किस्मत का सहारा लेकर अपने मन को बहलाने की कोशिश करते हैं। यह आधा सत्य हो सकता है लेकिन पूर्ण रूप से है इसके तर्क खोजने होंगे। चर्चा जो अब तक हल्के अंदाज में थी वह थोड़ी गंभीर हो चुकी थी। एक ने कहा बुरे वक्त में सभी का ही ये हाल होता है। मैंने कहा वक्त बुरा है तब सभी का ये हाल होता है या जब बुरा हाल होता है तब बुरा वक्त होता है। मेरी बात को काटते हुए एक ने कहा कि यह सही है कि वक्त को काबू में नहीं किया जा सकता। मैंने उसकी बात को बढ़ाते हुए कहा जिसे काबू में नहीं किया जा सकता तो वह बलवान ही है। धीरे-धीरे सभी ने इस बात को माना कि वक्त बलवान भी है और मूल्यवान भी है।

रहीम जी ने अपने एक दोहे में कहा कि:-

"समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय।

सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछिताय" ॥

इसका अर्थ है कि उचित समय आने पर ही वृक्षों में फल लगते हैं, और समय बीत जाने पर वे झड़ भी जाते हैं। परिस्थितियाँ हमेशा एक जैसी नहीं

रहतीं, इसलिए समय के बदलाव पर पछताना या दुखी होना व्यर्थ है। यहाँ भाव यही है कि पहले ही समय के मूल्य को पहचान लेना चाहिए।
लेख के आगे का भाव यहाँ पर अब यही है कि मात्र मानने से ही वक्त बलवान और मूल्यवान है, कार्य सिद्ध नहीं होते। कार्य सिद्धि के लिए, सफलता के लिए, मानवमूल्यों के लिए, जीवन में श्रेष्ठता और शान्ति के लिए निरंतर सच्चे मन से प्रयास और परिश्रम पल-पल जारी रखना होगा। यह हमेशा याद रखना होगा कि शायद हर खोई वस्तु पाई जा सकती है या उसके बदले कुछ अन्य वस्तु को प्रयोग में लाया जा सकता है या यूँ कहें कि कोई विकल्प खोजा जा सकता है, लेकिन खोए हुए वक्त को पाना असंभव है। दूसरे अर्थ में यह एक अपूरणीय क्षति है। हर दिन नही, बल्कि हर पल का सदुपयोग होना बेहतर, सुरक्षित, शांत, खुशहाल, मर्यादित, सफल जीवन के मूल आधार को मजबूती प्रदान करता है। समय ही एक मात्र पूंजी है जिसे ना तो कमाना किसी के वश में है और ना ही बचाना। यह ऐसी पूंजी है जिसे हम ना तो बीते हुए पलों को वापस ला कमा सकते हैं और ना ही भविष्य के समय को आज पहले ही उधार लेकर खर्च कर सकते हैं, और ना ही इसकी बचत करके इकठ्ठा किया जा सकता है। यह हर किसी का, जिसमे आप पढ़ने वाले भी शामिल हैं, उनका व्यक्तिगत निर्णय है कि वह इस पूंजी का सदुपयोग करें या व्यर्थ करें, इसके महत्व को समझे या न समझे। वक्त की सबसे बड़ी खूबी यही है कि यह रुकता नहीं, लेकिन इसकी सबसे बड़ी विडंबना यह है कि यह लौटता भी नहीं।

खुद से मुलाकात



श्री अनिल ओड
(डी.ई.ओ.)

हम जीवन भर लोगों से मिलते रहते हैं — परिवार, दोस्त, सहकर्मी, नए-पुराने चेहरे।
पर क्या कभी हम **"खुद "** से भी मिले हैं?आज का इंसान बहुत कुछ जानता है दुनिया की खबरें, बाजार की चाल, दूसरों की सोच...पर **अपनी आत्मा की आवाज़** उसे सुनाई नहीं देती।**"खुद से मुलाकात"** कोई होटल की चाय नहीं,यह एक ऐसी ताज़गी है,जो आत्मा को भीतर से धो देती है।

खुद से मिलना क्यों ज़रूरी है?

हम दूसरों की अपेक्षाओं में उलझ जाते हैं और भूल जाते हैं कि ***हम खुद क्या चाहते हैं***। **हम दिखावे में मुस्कुराते हैं**,लेकिन अंदर कहीं टूटे होते हैं और कोई पूछता नहीं, कि *तुम सच में कैसे हो ?* **हम जीवन जीते हैं 'बचने' के लिए, 'महसूस' करने के लिए नहीं।** और फिर थक कर एक दिन पूछते हैं —"मैं कौन हूँ?"

खुद से मुलाकात कैसे हो?

कुछ समय खुद के साथ बिताइए बिना फोन, बिना शोर... बस आप और आपकी आत्मा। दर्पण में आंखों में झांकिए,वहां कोई और नहीं, *आपका सच्चा रूप* छिपा है।पुरानी यादों में लौटिए,देखिए कि आप क्या खो चुके हैं और क्या पाना बाकी है।खुद से सवाल पूछिए

"क्या मैं वाकई खुश हूँ?"

"क्या मैं वही बन रहा हूँ जो बनना चाहता था?"

"क्या मेरी आत्मा शांत है?"

खुद को पाना ही असली सफलता है,जब आप खुद को समझते हैं,तो दुनिया की बातें कम असर करती हैं। जब आप अपने मन से दोस्ती कर लेते हैं,तो अकेलापन भी सुंदर हो जाता है।खुद से मिलना एक बार नहीं,हर दिन की **एक नई यात्रा** है।जहाँ न मंज़िल है, न भीड़ —बस आप हैं... और आपका *असली "मैं"*।

"जो व्यक्ति खुद से मिल ले, उसे फिर किसी और की तलाश नहीं रहती।"

मनुष्य अपने जीवन में अनेक लोगों से मिलता है। वह रिश्ते बनाता है, संवाद करता है, भीड़ का हिस्सा बनता है और समाज के साथ कदम मिलाकर चलता है। लेकिन इस पूरी यात्रा में एक मुलाकात ऐसी होती है, जो अक्सर अधूरी रह जाती है—**खुद से मुलाकात।** यह मुलाकात किसी आईने के सामने खड़े होने से नहीं होती, बल्कि अपने भीतर उतरने से होती है। यह वह क्षण होता है जब मनुष्य बाहरी शोर से दूर होकर अपने भीतर की आवाज़ को सुनता है।

आज का समय गति का समय है। हर व्यक्ति किसी न किसी दौड़ में शामिल है—सफलता की दौड़, पहचान की दौड़, या दूसरों से आगे निकल जाने की दौड़। इस दौड़ में वह इतना व्यस्त हो जाता है कि उसे यह सोचने का अवसर ही नहीं मिलता कि वह वास्तव में क्या चाहता है। वह दूसरों की अपेक्षाओं, समाज की परिभाषाओं और परिस्थितियों के दबाव में जीने लगता है। धीरे-धीरे वह स्वयं से दूर होता चला जाता है। उसकी मुस्कान में सच्चाई कम और

औपचारिकता अधिक रह जाती है। ऐसे में खुद से मुलाकात केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक अनिवार्यता बन जाती है।

खुद से मुलाकात का अर्थ है अपने भीतर झाँकना। अपने डर, अपनी कमजोरियों, अपने सपनों और अपनी सच्चाइयों को स्वीकार करना। यह आसान नहीं होता, क्योंकि अक्सर हम अपने ही सत्य से बचना चाहते हैं। हम अपने भीतर छिपे दर्द को अनदेखा करते हैं, अपनी असफलताओं को भूलने की कोशिश करते हैं और अपनी अधूरी इच्छाओं को समय के हवाले कर देते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि जब तक हम अपने भीतर के इन पहलुओं को स्वीकार नहीं करते, तब तक हम स्वयं को पूरी तरह समझ नहीं सकते।

कभी-कभी जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब व्यक्ति अकेला होता है—भीड़ में होकर भी अकेला। यही वह समय होता है, जब खुद से मुलाकात संभव होती है। यह मुलाकात शब्दों में नहीं, बल्कि अनुभव में होती है। यह वह एहसास है, जब व्यक्ति अपने भीतर की आवाज़ को सुनता है, जब उसे यह समझ में आता है कि उसकी असली पहचान क्या है। इस मुलाकात में कोई दिखावा नहीं होता, कोई झूठ नहीं होता—केवल सत्य होता है।

खुद से मुलाकात व्यक्ति को बदल देती है। यह उसे मजबूत बनाती है, क्योंकि वह अपनी कमजोरियों से भागना छोड़ देता है। यह उसे शांत बनाती है, क्योंकि वह बाहरी स्वीकृति की आवश्यकता से मुक्त होने लगता है। जब व्यक्ति स्वयं को स्वीकार कर लेता है, तब उसे दूसरों से स्वीकृति की आवश्यकता कम महसूस होती है। वह अपने अस्तित्व के साथ सहज हो जाता है।

आज के समय में, जब हर व्यक्ति दूसरों की नजरों में अच्छा दिखने की कोशिश कर रहा है, खुद की नजरों में अच्छा दिखना अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। खुद से मुलाकात व्यक्ति को यह सिखाती है कि उसकी सबसे बड़ी पहचान उसकी सच्चाई है, न कि दूसरों की राय। यह मुलाकात उसे यह समझने में मदद करती है कि जीवन का उद्देश्य केवल बाहरी उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और संतोष भी है।

यह मुलाकात अक्सर खामोशी में होती है—किसी शांत रात में, किसी अकेली यात्रा में, या किसी ऐसे क्षण में जब व्यक्ति स्वयं के साथ होता है। यह मुलाकात उसे उसके असली स्वरूप से परिचित कराती है। वह समझने लगता है कि वह केवल एक भूमिका नहीं है, बल्कि एक चेतना है, एक अनुभव है, एक सतत् यात्रा है।

अंततः, खुद से मुलाकात जीवन की सबसे सच्ची और सबसे गहरी मुलाकात है। यह वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने बाहरी आवरणों को हटाकर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है। जब यह मुलाकात हो जाती है, तब व्यक्ति को जीवन में एक नया दृष्टिकोण मिलता है। वह बाहरी दुनिया में रहते हुए भी अपने भीतर स्थिर रहना सीख जाता है।

मत ढूँढिए खुद को भीड़ में,मत खोइए खुद को दूसरों की परछाइयों में। थोड़ा समय अपने नाम भी लिखिए।
क्योंकि—
दिल की सबसे शांत जगह पर आज भी कोई बैठा है चुपचाप, जो सिर्फ आपका इंतज़ार कर रहा है... वह कोई और नहीं, वह खुद आप हैं।

कार्यालीय पत्रिका "धरा-गुर्जरी" प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओ के लिए प्रमाण पत्र एवं मानदेय प्रदान करते हुए उप महालेखाकार।





कार्यालीय पत्रिका "धरा-गुर्जरी" प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओ के लिए प्रमाण पत्र एवं मानदेय प्रदान करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं उप महालेखाकार।





विस्मृति के साये में



श्री ऋषव कुमार मिश्रा
(लेखापरीक्षक)

ट्रेन सात मिनट देर से थी। उसी कारण मैं अपनी कनेक्टिंग बस से चूक गया और सामान्य समय 8 बजे के बजाय 8:30 बजे पहुँचा। मैंने वृद्धाश्रम के परिसर में प्रवेश किया। रिसेप्शन पर बैठी महिला ने मुझे पहचान लिया और शांत भाव से मेरी ओर देखा। मैंने जेब से एक लिफाफा निकाला और उसकी ओर बढ़ा दिया।

“आप जानते हैं, इसकी ज़रूरत नहीं है… यह व्यर्थ है,” उसने धीमे स्वर में कहा।

“कृपया इसे रख लीजिए,” मैंने उत्तर दिया।

मैं लिफ्ट से दूसरी मंज़िल पर पहुँचा। जिस कमरे की मुझे तलाश थी, वह 208 नंबर था। मैंने धीरे से दरवाज़ा खटखटाया और अंदर चला गया। एक वृद्ध व्यक्ति बिस्तर पर लेटे हुए थे, उनका चेहरा दूसरी ओर था। मुझे पता ही नहीं चला था कि बाहर बारिश शुरू हो चुकी है, और वर्षा की आवाज़ से उनकी नींद खुल गई। वे उठकर बैठ गए और मेरी ओर देखने लगे।
मैं उनके पास गया और उन्हें एक पार्सल थमाया।

“मैं आपके लिए वह किताब लाया हूँ, जिसे आप पढ़ना चाहते थे।”
उन्होंने उलझन भरी नज़र से मेरी ओर देखा।
“क्या मैं आपको जानता हूँ?”
मैं उनके सामने बैठ गया और हल्की मुस्कान के साथ बोला,
“मैं आपका बेटा हूँ, और आप मेरे पिता। आपको अल्ज़ाइमर है।”
यह बात सैकड़ों बार समझाना अब मेरी दिनचर्या बन चुका था।

"ओह!" उन्होंने कहा—पहचान की एक क्षीण झलक आई और फिर तुरंत ही फीकी पड़ गई।

"क्या आप वही व्यक्ति हैं जो मेरी दवाइयाँ लाते हैं? शायद नहीं, क्योंकि आप उनसे अधिक लंबे हैं।"

"हाँ, मैं लंबा हूँ—बिल्कुल आपकी तरह, क्योंकि आप मेरे पिता हैं।"

"मुझे आपकी बात स्वीकार करनी ही होगी। मेरी याददाश्त के लिए क्षमा कीजिए।"

"आपको क्षमा माँगने की कोई आवश्यकता नहीं है, पिताजी।"

उन्होंने कुछ क्षणों तक मुझे ध्यान से देखा और फिर बोले, "आप बहुत सुन्दर युवक हैं। लगता है मेरे अच्छे जीन हैं।"

मैं मुस्कुरा पड़ा।

"निस्संदेह हैं। आप स्वयं भी बहुत सुन्दर हैं।"

"पर अब बूढ़ा हो गया हूँ। बुढ़ापा मुझ पर अच्छा नहीं लगता।"

"हाँ, यह आप पर अच्छा नहीं लगता," मैंने धीमे स्वर में कहा।

"मुझे अपनी पत्नी के बारे में बताओ।"

"वह दुनिया की सबसे सुन्दर स्त्री थीं, और सबसे अधिक खुश आप और मेरे साथ ही रहती थीं।"

"मैं उन्हें क्यों याद नहीं कर पाता? क्या इस बीमारी ने उन्हें मुझसे दूर कर दिया?"

उनकी आँखें भर आईं। मैंने उन्हें अपने गले से लगा लिया। वे कुछ देर तक सिसकते रहे और फिर धीरे-धीरे शांत हो गए।

"तुम एक अच्छे बेटे हो," उन्होंने धीमे स्वर में कहा।

मैंने कुछ नहीं कहा। बस उनके झुर्रियों भरे हाथों को थामे रहा।

कुछ देर बाद मैंने कहा,"मैं फिर आऊँगा, ठीक है पिताजी? अभी मुझे हेमिंग्टन की ट्रेन पकड़नी है।"
उन्होंने मेरी ओर देखा और बोले,"तुम कब लौटोगे? और अगर मैं तुम्हें भूल जाऊँ तो मुझे याद दिला देना। मैं भूलना नहीं चाहता, पर यह बीमारी..."
"मैं आपको हमेशा याद दिलाऊँगा कि मैं कौन हूँ, पिताजी। आपका मुझे भूल जाना यह नहीं दर्शाता कि मैं अस्तित्व में नहीं हूँ—और न ही हमारा रिश्ता समाप्त हो जाता है।"
उन्होंने हल्की मुस्कान के साथ अपना चश्मा उठाया और किताब खोलकर पढ़ने लगे।

मैं कमरे से बाहर निकला और दरवाज़े पर एक मिनट ठहर गया। फिर लिफ्ट की ओर बढ़ते हुए मैंने अपना बटुआ निकाला। उसमें माँ और पिताजी की एक तस्वीर थी—मेरे सुन्दर माता-पिता की। पिताजी को अल्ज़ाइमर होने के कुछ समय बाद ही माँ का निधन हो गया था। मुझे अक्सर लगता है कि यह विचार कि पिताजी उन्हें जल्द ही भूल जाएँगे, उनके हृदय के लिए असहनीय था। वे पिताजी से अत्यधिक प्रेम करती थीं।

मैंने पिताजी को वृद्धाश्रम में तब भर्ती कराया था, जब मैं उन्नीस वर्ष का था और उच्च शिक्षा के लिए घर छोड़ना पड़ा था। वे महीनों तक अकेले रहे, और मैं केवल सेमेस्टर अवकाश में, छह-छह महीने के अंतराल पर उनसे मिलने आता था। धीरे-धीरे उन्होंने मुझे भूलना शुरू किया, फिर माँ को, और अंततः लगभग सब कुछ।

जब मैं स्थायी रूप से पास के एक फ्लैट में रहने लगा, तो मैंने डॉक्टर से निवेदन किया कि क्या पिताजी मेरे साथ रह सकते हैं। डॉक्टर ने मना कर दिया और कहा कि उनकी देखभाल के लिए विशेष व्यवस्था आवश्यक है।

तब मैंने एक सलाहकार के रूप में नौकरी शुरू की और प्रतिदिन उनसे मिलने जाने लगा। फीस और अन्य सभी ज़िम्मेदारियाँ मैं ही निभाता था।

समय के साथ मेरी मुलाकातें कम होने लगीं—पहले एक दिन छोड़कर, फिर सप्ताह में तीन बार। हर बार मुझे उन्हें सब कुछ फिर से समझाना पड़ता था, फिर भी वे मुझे पहचान नहीं पाते थे; केवल मेरी बातों पर विश्वास कर लेते थे।

धीरे-धीरे मेरी मुलाकातें सप्ताह में दो बार रह गईं। इसी दौरान मेरी मुलाकात चेरोन कार्टर से एक पुस्तकालय में हुई। उसका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था और हमारी रुचियाँ भी समान थीं। मैं उससे मिलने लगा और धीरे-धीरे उससे प्रेम करने लगा। पिताजी से मिलना मेरे लिए एक कर्तव्य भर रह गया। मेरी मुलाकातें घटकर सप्ताह में एक बार हो गईं।

डॉक्टर ने एक बार कहा कि मुझे अत्यधिक नियमित रहने की बाध्यता नहीं है; मैं युवा हूँ और मुझे अपना जीवन भी जीना चाहिए। बाद में चेरोन मेरे साथ रहने लगी। इसी बीच मैंने अपनी कहानी लिखनी शुरू की, जो प्रकाशित हुई और सराही गई। मुझे दूसरी पुस्तक लिखने का प्रस्ताव भी मिला।

अब मेरी मुलाकातें मासिक हो गईं—मुख्यतः शुल्क जमा करने के लिए। जब भी मैं उनसे मिलता, वे मुझे जिज्ञासा से देखते और मैं उन्हें अपने जीवन की कुछ बातें बताता। अंत में वे हमेशा कहते, “क्षमा कीजिए, मैं आपको पहचान नहीं पा रहा।” और धीरे-धीरे मैंने उन्हें समझाना भी छोड़ दिया।

तीन वर्ष के संबंध के बाद, चेरोन और मैंने विवाह करने का निर्णय लिया। विवाह से पूर्व हमने ग्रीस की यात्रा की योजना बनाई। मैंने एक माह की छुट्टी ली और वृद्धाश्रम में तीन महीने का अग्रिम शुल्क जमा कर दिया।

13 सितम्बर की सुबह पिताजी अचानक चिल्लाने लगे। अस्पताल के कर्मचारियों ने उन्हें शांत करने का प्रयास किया, पर वे लगातार अपने बेटे और पत्नी के बारे में पूछते रहे। उन्होंने मुझसे संपर्क करने की अनेक बार

कोशिश की, पर मैं उपलब्ध नहीं था। वे रोते-रोते सो गए और फिर कभी नहीं जागे।

मैं 2 अक्टूबर को लौटा—विवाह की तिथि और स्थान तय करके। फोन देखा तो वृद्धाश्रम से कई मिस्ड कॉल थे। मैंने तुरंत वापस फोन किया।

"श्रीमान स्मिथ," दूसरी ओर से आवाज़ आई, "हमने आपसे कई बार संपर्क करने का प्रयास किया, पर आपके पिता का 17 दिन पूर्व निधन हो गया। हमें स्वयं ही उनका अंतिम संस्कार करना पड़ा। उनका समाधि स्थल सेंट विलियम चर्च में है। हमें अत्यंत खेद है।"

मेरा फोन हाथ से गिर गया। चेरोन मुझे संभालने का प्रयास कर रही थी, पर मैं स्वयं को छुड़ाकर भाग पड़ा—सीधे कब्रिस्तान की ओर। मैं पिताजी का नाम पुकारते हुए रोता रहा। मृत लोग पुकार का उत्तर नहीं देते, फिर भी मुझे आशा थी—शायद वे सुन लें। मैं क्षमा माँगना चाहता था। अपने अंतिम क्षणों में वे अकेले थे। जिस क्षण उन्हें सब याद आया, उस समय मैं उनके पास नहीं था।

आँसूओं से धुँधली दृष्टि के साथ मैं कब्रों के बीच उन्हें खोजता रहा। माँ उन्हें मृत्यु से छोड़ गई थीं, और मैंने उन्हें अपनी उपेक्षा से। मैं कब इतना स्वार्थी हो गया?

लगभग एक घंटे की खोज के बाद मुझे वह समाधि मिली—

श्री जॉन स्मिथ

3 अगस्त 1964 – 13 सितम्बर 2018

उनकी मृत्यु को अब छह वर्ष बीत चुके हैं। चेरोन और मैं अलग हो चुके हैं। इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी; वास्तव में मैं उसके योग्य ही नहीं था। वह अब विवाहित है और उसकी एक छोटी बेटी है।

मैं आज भी उस वृद्धाश्रम में जाता हूँ—अब अपने पिता के लिए नहीं, बल्कि उन वृद्ध लोगों के लिए, जो अल्ज़ाइमर से पीड़ित हैं और जिन्हें उनके परिवार ने छोड़ दिया है। मैं उनसे बात करता हूँ, उनसे संबंध बनाने का

प्रयास करता हूँ, और उन्हें यह एहसास दिलाने की कोशिश करता हूँ कि वे अकेले नहीं हैं।
शायद यह मेरे प्रायश्चित का एक प्रयास है।
फिर भी, हर बार जब मैं उस वृद्धाश्रम से बाहर निकलता हूँ, मेरे भीतर वही भावना रह जाती है—एक स्वार्थी बेटे की, जो अब भी अपने भीतर के उस खालीपन को भरने की कोशिश कर रहा है, जिसे कभी भरा नहीं जा सकता।

एक ख़त पिता के नाम



श्रीमती बबिता
सहायक निदेशक (राजभाषा)

एक स्तम्भ जिस पर था गर्व सारा
घर का आंगन वही अहाता वही और बगीचा भी वही है
पर वो स्तम्भ अब कही नज़र क्यों नहीं आता ॥

कभी गरजता,कभी बरसता इस नादान परिंदे का अम्बर,
स्वाद का खारा, लफ्जों का अनमोल,
वो मोतियों का समंदर लौटकर क्यों नहीं आता ॥

जिसने अपने जीवन के सारे रंग छोड़कर
मेरे भविष्य की सुनहरी तस्वीर बनायी
वो इस तस्वीर में नया रंग भरने वापस क्यों नहीं आता ॥

जहाँ अपनों के साथ जिए ख़ुशी और गम के लम्हे
बिताए खूबसूरत दिन और रात साथ हमने
अब वहाँ वो खुशियों भरा रविवार क्यों नहीं आता ॥

जो हमारा वजूद, हमारा अभिमान, हमारा धर्म,
इस घर की छत, दीवार और आधार था
वो अब इस खण्डहर को फिर से घर बानने क्यों नहीं आता ॥

थोड़ी परवाह कुछ बाते हंसी के पल और उनकी सीख
हमें हमारे कर्तव्य का बोध कराती उनकी कड़क आवाज
वो शब्द, वो गुजरा हुआ दौर फिर लौटकर आ क्यों नहीं आता

संदेश भेजे भी तो कहाँ भेजे बुलाए भी तो कैसे बुलाए,
अब वो दर –ओ –दीवार, वो पता कही नज़र क्यों नहीं आता ॥

शेयर मार्केट



श्री बिनय कुमार
(लेखापरीक्षक)

शेयर मार्केट पैसों का है एक ऐसा खजाना,
जिसका आजकल हर कोई है दीवाना...
कम समय में ज्यादा मुनाफा कैसे है कमाना,
यह एक कुशल ट्रेडर ने ही है जाना!!

कोई हर्षद मेहता तो कोई राकेश झुनझुनवाला बनना चाहता है,
और मार्केट का जरा सा करेक्शन दिखाने पे ये सूखे पत्तों की
तरह फड़फड़ाने लगता है!!
मार्केट के इस ऊंच नीच के खेल में कोई इन्वेस्टर तो कोई ट्रेडर
बनकर खूब है कमाया,
तो कईयों ने गलत ट्रेड के चक्कर में अपनी लुटिया है डुबाया!!

ऑफिस की कैंटीन से लेकर चौराहे की कुल्हड़ तक,
हर जगह होती है इसकी चर्चा,
UPI आने से बढ़ गया है लोगों का खर्चा!!

IPO जब से बाजार में आया है,
हर किसी ने अपना चांस आजमाया है!!
वैसे तो इसका फुल फॉर्म Initial Public Offering होता है,
लेकिन Retailers की नजरों में ये Instant Profit देता है!!

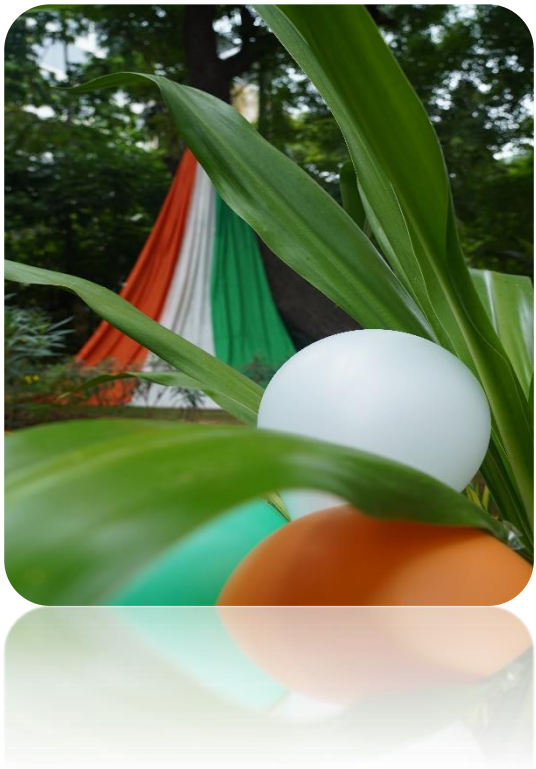
कोई GMP के भरोसे रहता है,
तो कोई फंडामेंटल देख के अप्लाई करने को कहता है!!
किसी का 1 में से 1 लग जाता है,
तो कोई 10 अप्लाई करने पर भी हाथ मलता रह जाता है!!
यह एक सप्ताह में पैसा डबल कर देता है, और जिसको
100% लिस्टिंग देने वाला IPO ना मिले वो चैन को नींद कहां सोता है!!

SME IPO का भी गजब है बोलबाला,
रिटेलर्स ने 400-500 गुना सब्सक्राइब कर डाला,
और जिसका भी एक बार लग गया,
उसका लाइफ झींगालाला बना डाला!!

F&O एक गजब की है माया, जिसपर पड़ी है इसकी साया,
उसने खुद के साथ साथ अपने दादा-परदादा की जमीन भी है गंवाया!!
लोग इसमें कभी अपने लिए कार, तो कभी बीवी के लिए हार खरीदने की उम्मीद से आते हैं,
और F&O के इस माया जाल में ऐसे पड़ जाते हैं,
थोड़े दिन बाद ही गुमसुम और विलुप्त नज़र आते हैं!!
लोगों पर Call और Put का ऐसा नशा चढ़ा है,
कोई रेड कैंडल तो कोई ग्रीन कैंडल में फंसा पड़ा है!!

सरकारी कर्मचारियों के लिए इसमें 6 महीने की बेसिक और लॉन्गटर्म की सुविधा है,
अगर इससे अधिक हो गया तो बड़ी दुविधा है!!
इसलिए दोस्तों, रिश्तेदारों के नाम से ID खोले जा रहे हैं,
और कम समय में ज्यादा पैसे कमा रहे हैं!!

अंत में मेरा बस यही है कहना,
अगर तुमको है इस मार्केट में रहना,
तो तुम्हें समझदारी और संयम है दिखाना
तभी तुम इस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हो,
और दूसरों से ज्यादा पैसे बना सकते हो!!



पिता



श्रीमती विद्या अय्यर
(पर्यवेक्षक)

मेरे पिता सब से प्यारे.

सच करते सपने सारे।

कभी अभिमान तो कभी,

स्वाभिमान है मेरे पिता।

मेरे छोटी से ख़ुशी के लिए,

बहुत सह जाते मेरे पिता।

कभी धरती है तो कभी,

पूरा आसमान है मेरे पिता।

जन्म दिया है मेरी माँ ने

मगर जग में पहचान है मेरे पिता।

कभी हंसी है, कभी गम है तो,

कभी अनुशासन है मेरे पिता।

कभी मौन अवतार है,

कभी भाषण है मेरे पिता।

कभी आँसूओं में छिपी ज़िम्मेदारी,

कभी ज़िम्मेदारी में छिपे मेरे पिता।

खुद गरीब, मगर बनाते है,

बच्चो को अमीर मेरे पिता।

मेरे आँखों का नूर मेरे पिता,

मेरे दिल की धड़कन मेरे पिता।

नहीं भूल पाती कभी भी मैं,

बहुत याद आते है मेरे पिता॥

आज नहीं, कल से पक्का



श्री दिपेश कुमार गुप्ता
(व.ले.प.)

आज करेंगे — कल से पक्का, यह मंत्र बड़ा निराला है,
हर टाले हुए काम के पीछे, यही बहाना डाला है।
सुबह सोचा — अभी करेंगे, पर चाय ने रोका ज़रा,
बिस्कुट बोले — "पहले हमें", और काम बेचारा रह गया धरा।
फाइल बोली — खोलो मुझको, मन बोला — थोड़ी देर,
घड़ी ने टोका — अब तो चलो, मन फिर बोला — थोड़ी देर
दोपहर आई, भूख ने घेरा, काम ने फिर से हार मानी,
थाली बोली — पहले मुझे, फिर देखेंगे कहानी।
शाम हुई तो थकान आई, रात ने नींद बिछाई,
और मन ने फिर समझाया — "कल से पक्का, भाई!"
कल की थाली में परोस दिए, आज के सारे काम,
और खुद को दे दी तसल्ली, कि हम हैं बड़े महान!
डायरी बोली — झूठ मत लिखो, घड़ी ने भी टोका धीरे,
पर मन का आलस बोला — "भाई, कल है पूरे तेरे!"
कल आया तो फिर समझाया, आज का दिन बड़ा भारी है,
फिर वही पुराना संवाद, आदत कितनी प्यारी है!

पर इस टालमटोल के पीछे भी, एक डर छुपा है गहरा,
गलती की आशंका से शायद, रुक जाता है हर पहरा।
डर कहता — मत छुओ अभी, काम बड़ा भारी है,
पर मन बोले — डर से ही तो, हर जीत हमारी है।
जब हिम्मत ने एक दिन, डर का हाथ पकड़ छोड़ा,
“कल” ने “आज” से दोस्ती की, और टालमटोल का रिश्ता तोड़ा।
तब जाना — काम का बोझ नहीं, डर ही सबसे भारी था,
एक कदम आगे बढ़ाते ही, सब कुछ आसान सा था।
अब भी दिल कभी-कभी बोले — “आज नहीं, कल से पक्का”,
पर आत्मा हँसकर कह देती — “चलो, अभी से अच्छा!”
क्योंकि जो टलता रोज़-रोज़, वह सपना बन नहीं पाता है,
और जो आज में जी ले इंसान, वही जीवन को जीत जाता है।

अंत अभी बाक़ी है



सुश्री मिनाक्षी कुमारी
(बहन श्री ऋषव कुमार मिश्रा)
(लेखापरीक्षक)

रात के अँधेरे में
तारों की छाओं में
ढलते चांद की
चमक अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है

सुबह की लालिमा में
चिड़ियों की चहचहाहट में
उगते सूरज की किरणो में
रात का तिमिर अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है

जिंदगी की किताब में
पन्नो के अनुराग में
पुरानी स्याही के कुछ
धब्बे अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है
अध लिखी कविता में
कवि की कलम से
चीखती भावनाओं का

शोर अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है

सूखते पेड़ की टहनियों में
झड़ते पत्तों की सरसराहट में
क्षीण होते जीवन में
जीने की ललक अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है

जलते कोयलों की राख में
बुझते चूल्हे की आंच में
ठंडी हो रही आग में
कुछ तपन अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है

बढ़ती उम्र की राह में
हल्के हो रहे घाव में
पुराने हो रहे ज़ख्मों की
चुभन अभी बाक़ी है
अंत अभी बाक़ी है

प्यासी धरती की पुकार



श्री अनिल ओड
(डी.ई.ओ.)

सूख गए हैं ताल-तलैया, नदियों की धड़कन थम-सी गई,
मिट्टी की फटी हुई लकीरों में जीवन की हर आस जम-सी गई।

पेड़ जो थे छांव का घर, काट दिए बिना डरे,
बूंद-बूंद को मोहताज हैं, आज गाँव, नगर और डेरा।

धूप कहर बनकर उतरी, साँसें रुकती धूल में,
धरती माँ पूछे हमसे – “कहाँ गए तुम भूल में?”

जहाँ कभी हरियाली हँसती थी, और पत्तों में संगीत बसता था,
आज वहीं वीरानी बैठी है, और हर सपना सिसकता है।

हवाओं में अब वो ठंडक नहीं, जो मन को शांति दे जाती थी,
अब हर झोंका धूल बनकर बस आँखों को भर जाता है।

धरती माँ आज पुकार रही है, अपने ही बच्चों से पूछ रही है—
“मैंने तो तुमको जीवन सौंपा, फिर क्यों मेरी गोद सूख रही है?”

मैंने ही खेतों को लहराया, मैंने ही फूलों को जन्म दिया,
तुम्हारी हर साँस के बदले, अपने कण-कण को अर्पण किया।

पर तुमने मेरी ममता के बदले, बस घावों का संसार दिया,
मेरे हरे-भरे आँचल को, धुएँ और राख में बदल दिया।

हिम के पर्वत रो रहे हैं, नदियाँ अपना मार्ग भूल रही हैं,
कहीं प्रलय का दृश्य बना है, कहीं बूँदें भी अनमोल हुई हैं।

यह प्रकृति का मौन विलाप है, या आने वाले समय की चेतावनी,
अगर अब भी तुम न जागे, तो मिट जाएगी जीवन की कहानी।

पर अभी भी सब कुछ खोया नहीं, अभी भी उम्मीद ज़िंदा है,
अगर तुम प्रेम से हाथ बढ़ाओ, तो हर घाव का मरहम ज़िंदा है।

एक छोटा-सा बीज लगाओ, फिर से जंगल मुस्कुराएंगे,
सूखी धरती के सूने होठों पर, फिर से गीत खिल जाएंगे।

आओ, आज एक वचन करें, धरती को फिर से जीवन दें,
उसकी हर पीड़ा को अपनाकर, उसके घावों को हम स्पंदन दें।

जब धरती फिर से हरी होगी,
तभी जीवन का अर्थ बचेगा,
और जब माँ फिर से मुस्कुराएगी,
तभी भविष्य सुरक्षित रहेगा।

चले जा रहे है



श्री चिंटू एम. गुसा
(व.ले.प.)

मिट रही है रिश्तो की मिठास
फासले अब बढ़ते चले जा रहे है,

हवा में घुस रही है बेरुखी
सब अपने –अपने में सिमटते चले जा रहे है,

कहने को तो सब साथ है, मगर...

सब दूर चले जा रहे है,

पहली नजर में दिखाई देने वाली हकीकत
अब सत्य में परे होते चले जा रहे है,

जिसकी मस्ती जिंदा है उसकी हस्ती जिंदा है,

वरना यूं समझ लो कि वह जबरदस्ती जिए चले जा रहें है,

बेकार है करना खुशामद इन कमबख्त रास्तों की ...
वो अपने पांव ही होते है जो सफर में चले जा रहे है,

इंसान को थोडा मस्तीखोर रहना चाहिए
सीरियस लोग तो हॉस्पिटल में भी मिलते चले जा रहे है,

जिंदगी का सफर भी अजीब है बिना कुछ लिए आते है...
हर चीज के लिए लड़ते है और अंत में सबकुछ छोड़कर चले जा रहे है..!

नारी ना होती तो क्या होता



श्री जयन्त
(स.ले.प.अ.)

नारी ना होती तो क्या होता, क्या होता गर नारी ना होती.....
ना जननी होती ना जीवन होता, कौन कोख में रख तुम्हें, उम्र सारी कलेजे में अपने रखता ।।
नारी ना होती तो क्या होता, क्या होता गर नारी ना होती।
नारी गर ना होती तो ना माँ की ममता होती, ना अर्धांगिनी का निश्चल समर्पण, ना बड़ी बहन सा लाड़, ना होती छोटी बहन की अठखेलियां होती, ना बिटिया के नन्हें कदमों में माँ लक्ष्मी की आहट होती।
नारी ना होती तो क्या होता, क्या होता गर नारी ना होती।
ना माता सीता होती ना ही त्याग और मर्यादा परिभाषा होती, मीरा ना होती अगर तो निश्छल प्रेम को क्या जग कभी जान पाता
नारी ना होती तो क्या होता, क्या होता गर नारी ना होती।
अहिल्या ना होती, गर लक्ष्मीबाई ना होती कौन भला शौर्य, साहस और पराक्रम की नई सीमा बनाता, मदर टेरेसा अगर ना होती तो कौन भला ममता और करुणा की पहचान बन पाता।
ना होती नारी तो ना सृष्टि होती ना होता सृष्टि का सृजन, बाती बिन लौ ना होती, ना जल बिन जीवन॥

शीर्षक: जीवन की सीख



श्रीमती ममता
(पत्नी श्री राहुल वर्मा)
(स.ले.प.अ)

मनुष्य अपने हृदय में एक अभिलाषा रखता है,
हर पल वह अपने जीवन को सुखमय जीना चाहता है।
उसकी हर राह में उजाला ही उजाला हो,
हर सपना उसका सच बनकर सामने खड़ा हो।

वह चाहे जो उसे सहज ही मिल जाए,
हर मंजिल तक उसका कदम खुद चल जाए।
पर जीवन इतना आसान कहाँ होता है,
हर ख्वाब पूरा हर बार कहाँ होता है।

सुख-दुख साथ-साथ चलते हैं,
यही जीवन के असली अर्थ समझाते हैं।
इनसे ही इंसान हर पल सीखता है,
गिरकर संभलकर आगे बढ़ता है।

जब समय से वो सीख लेता है,
तो निखर कर और भी बेहतर बनता है।
उसे होती है सही-गलत की पहचान,
और समझ आता है दुनिया का असली ज्ञान।

फिर वह अपने लक्ष्य की ओर निडर बढ़ता है,
हर चुनौती को हँसकर पार करता है।
तब मिलती है उसे जीवन में सच्ची शांति,
और मन में बसती है गहरी, अटूट संतुष्टि।

बेटियों की जिंदगी...

श्रीमती लक्ष्मी कुमारी,
(पत्नी श्री बिनय कुमार)
(लेखापरीक्षक)

बेटी भगवान का सबसे प्यारा उपहार होती है,
बेटी जब जन्म लेती है तो उसकी मुस्कान से माता-पिता की दुनिया सज जाती है।
बेटी एक नन्ही परी की तरह होती है जो घर को खुशियाँ देती है,
जिस घर में बेटी होती है वहां खुशियाँ हमेशा मुस्कुराती है।

एक मीठी सी मुस्कान है बेटी, यह सच है कि मेहमान है बेटी,
उस घर की पहचान बनने चली, जिस घर से अंजान है बेटी।

हम बेटियां कब इतनी बड़ी हो जाती है पता ही नहीं चलता,
कब माता-पिता की गोद में और वहां की आंगन में खेलते...
ना जाने कब ससुराल की आंगन को सजाने लगती है पता ही नहीं चलता।

वो हमारा बचपन, सारा दिन अपने सहेलियों के साथ पढने-खेलने में गुजर जाता पता ही नहीं चला और कब आज हम इतने बड़े हो गये कि ससुराल के कामों में सारा दिन निकल जाता है पता ही नहीं चलता।

हम बेटियां मां के लिए स्वर्ग से आई होती हैं लेकिन सच तो ये है,
हम उनकी ही परछाई होती है, जो हर कदम पर हम उनसे सिखते हैं।

मां, बेटी की पहली दोस्त और पहला सहारा होती है,
बचपन में हमें हर सुबह मां उठाया करती थी, उठ जा कितना सोयेगी सुबह हो गई है,
और अब जिम्मेदारियां खुद उठा देती हैं कि उठ जा काम करना है।

माँ की आँखों का सपना होती है बेटी
दिल के हर कोने में बसती है बेटी
जब भी मुस्कुराती है माँ की गोद में
जन्नत का एहसास पैदा करती है बेटी

बचपन से ही बेटियों को प्यार संस्कार और जिमेदारियों के साथ बड़ा किया जाता है,
लेकिन जैसे-जैसे वो बड़ी होती है उसके जीवन में शादी का एक ऐसा मोड़ आता है,
जो उसकी पूरी दुनिया बदल देती है शादी के बाद बेटियों की जिंदगी में कई नये अनुभव, जिम्मेदारियां, चिंताएं और खुशियां शामिल हो जाती हैं जिसे उसे प्यार और सम्मान के साथ अपनानी होती है।

बेटियां जब शादी के बाद पहली बार मायके से ससुराल जाती है तो वो पल जीवन का सबसे भावुक पल होता है, इस पल को ब्यान करना बहुत मुश्किल है। ये वो पल होते हैं जहां एक बेटी के मां बाप को भी लगता है कि उनकी बेटी जहां जन्म लेती है जिनके गोद में खेली, जिनकी उंगली पकड़ के चलना सीखी वो अब उनके आंगन की तुलसी से किसी और के आंगन की तुलसी बनने चली।
बेटी की विदाई पर एक मां बाप सिर्फ अपनी बेटी नहीं देते बल्कि वो अपने दिल का टुकड़ा किसी और को दे देते हैं। बेटी विदा के बाद

भले ही किसी और के घर चली जाए लेकिन अपने पिता के लिए वह एक राजकुमारी ही होती है। बेटी चाहे कितनी बड़ी क्यूँ ना हो जाए लेकिन अपनी माता-पिता के लिए वह हमेशा छोटी बच्ची ही रहती है और हम बेटियों को उस वक्त एहसास होता है जिस घर में हम जन्म के लिए जहां हमने अपनी पहली साँस ली थी, जहां हम पले बढ़े होते हैं वो घर ही अब हमारा नहीं रहा।

शादी के बाद नए घर, नए लोग के बीच रहना पड़ता है। ससुराल में बेटियों को नए रिश्ते के साथ ताल-मेल बिठाना पड़ता है। जैसे सास ससुर, देवर-ननद और पति इत्यादि।

हर घर का अपना नियम और कुछ परम्पराएं होती है, जिन्हे समझने और अपनाने में समय लगता है।

कई बार तो यह आसन लगता है लेकिन कभी-कभी तो ये कठिन भी हो जाती है। अब उसे केवल अपने बारे में नहीं बल्कि पुरे परिवार के बारे में सोचना होता है। घर के काम, परिवार के सदस्यों की जरूरतें, रिश्तों को संभालना इत्यादि ये सब उसकी रोज की जिंदगी का एक हिस्सा बन जाता है। अगर वह कामकाजी महिला है तो नौकरी के साथ-साथ घर की भी जिम्मेदरियों को संभालना पड़ता है, आज के समय में अच्छी बात यह है कि बहुत से घर में पति भी घर के कामों में महिलाओं की मदद कर देते हैं जिससे उसपर बोझ थोड़ा कम रहता है।

शादी के बाद पति-पत्नी का रिश्ता बेटियों की जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

पति के साथ विश्वास, सम्मान और समझदारी का रिश्ता बनाना बहुत जरूरी होता है।

जब पति-पत्नी एक-दूसरे को समझते हैं और एक-दूसरे का साथ देते हैं तो शादी-शुदा जिंदगी खुशहाल बन जाती है। पति का सहयोग और

सम्मान पत्नी के आत्मविश्वास को बढ़ाता है वही अगर रिश्ते में समझ की कमी हो तो जीवन में तनाव भी आ जाता है। इसलिए दोनों के बीच आपसी समझ बहुत जरूरी होता है।

शादी के बाद घर और लोग कितने भी अच्छे क्यों ना मिल जाए लेकिन हम बेटियों का मन आज भी वही बचपन की गलियों एवं हर छोटी-छोटी चीजों को खोजती है, जहां वो अपना पूरा दिन गुजार दिया करती थी। वह उन खुशियां को खोजती है जो उसके गुड़िया और खिलोनों मैं छुपी होती थी। वो भाई-बहन की खट्टी-मीठी तकरार, बिना मतलब वाले झगड़े आज भी हमारा मन उन चीजों के लिए लालायित रहता है। कौन कहता है बेटियों की विदाई एक बार होती है, मां के घर से वापस आते वक्त हर बार दिल चुपके से वही दर्द महसूस करता है। पता नहीं हम बेटियां क्यों इतनी जल्दी बड़ी हो जाती है, क्यों हमसे वो हमारा आंगन छीना जाता है, जहां हमें किसी भी मर्यादाओं का पालन नहीं करना पड़ता था, जहां हम बिना घूंघट के आजाद परिंदे की तरह रहा करते थे। क्यूँ सिर्फ हम बेटियों को ही उसके पिता और ससुर में फर्क बताया जाता है, क्यूँ हमें ससुर के सामने घूंघट लेने को बोला जाता है, हम भी तो उनकी बेटी जैसी ही है फिर हम बेटियों को ही क्यों मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है। वहाँ के आंगन वहाँ की चीज बस याद बन के रह जाती है। शादी के बाद बेटी भले ही ससुराल में रहती हो लेकिन मायके से उसका रिश्ता कभी खत्म नहीं होता होता।

बात अगर सिर्फ एक घर बदलने की होती तो एक लड़की कभी नहीं रोती,

लेकिन बेटियों की तो पूरी जिंदगी ही बदल जाती है।

आज की बेटियां पढ़ी-लिखी और आत्मनिर्भर बन रही है शादी के बाद भी वो अपने करियर को जारी रखना चाहती है, लेकिन यह आसान तो नहीं होता। अगर परिवार का प्यार, पति का सहयोग और समाज की समझ मिले तो यह जीवन बहुत खूबसूरत बन जाता है। आजकल के बहुत से परिवार अब इस बात को समझने लगे हैं कि एक महिला की पहचान सिर्फ घर के चार दीवारों तक सिमित नहीं होनी चाहिए। जब पति और परिवार दोनों का सहयोग मिलता है तो महिलाएँ घर और करियर दोनों में सफल हो जाती हैं। इससे सिर्फ बेटियों का आत्मविश्वास ही नहीं बढ़ता बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति भी मजबूत हो जाती है। बेटियां शादी के बाद केवल किसी दुसरे के घर की सदस्य ही नहीं बनती बल्कि वह दो परिवार को जोड़ने वाली एक कड़ी बन जाती है। बेटियों की खुशियां, सपनों और सम्मान का ख्याल रखना हर परिवार की ज़िम्मेदारी है। जब बेटियों को सम्मान, प्यार और स्वतंत्रता मिलती है तो वो अपने जीवन के हर क्षेत्र में अपने परिवार, राज्य और देश को गौरवान्वित करने का हिम्मत रखती है।

बेटियां होती हैं जिंदगी में बेहद खास,
उनके साथ अनोखा होता है एहसास,
हर किसी को होना चाहिए इस पर नाज़,
क्योंकि बेटी है जीवन का साज।

॥ मेरा भारत : मेरा अभिमान ॥



श्री नरेश सिंह
(स.ले.प.अ.)

भाषा अनेक, पर भाव एक,
धर्म अनेक, पर भाव एक,
पहनावे अनेक, पर संस्कृति एक,
देशों में देश भारत सबसे नेक।

एक ज्योति, एक शक्ति,
एक भाव, एक जुड़ाव,
एक ज्ञान, एक विज्ञान,
मेरा भारत सब देशों से महान।

एक रीत, एक प्रीत,
हर कोने गूँजें देशभक्ति के गीत,
सत्यमेव जयते है जिसके प्राण,
मेरा भारत, मेरा अभिमान।

एक गगन, एक ध्वज, एक निशान,
सबके हाथ, सबके साथ,

अटूट विश्वास इसकी पहचान,
मेरा भारत मेरा अभिमान।

एक सुर, एक ताल,
एक कदम, एक ही चाल,
राष्ट्रगान इसका यशोगान,
कोई यूँ ही नहीं कहता भारत महान।

एक लक्ष्य, एक संकल्प,
अटल राह, अविरल चाह,
विकसित भारत हो ये सबका कर्म,
राष्ट्रधर्म इसका सर्वोच्च धर्म।

एक लगन, एक मगन,
एक ध्येय, एक अक्षय,
हर का संकल्प हो सबका कल्याण,
मेरा भारत मेरा अभिमान।

एक अकेला, चले अकेला,
पड़ोसी मुल्क लेते रोज इम्तहान,
290 करोड़ भुजाओं का कारवां इसका,
फिर क्यों ना हो मेरा भारत महान।

हम भारतीयों का प्रचंड साहस,
हँसकर देने को बलिदान,

विजय पथ पर सदा अडिग,
तभी तो कहते भारत महान।

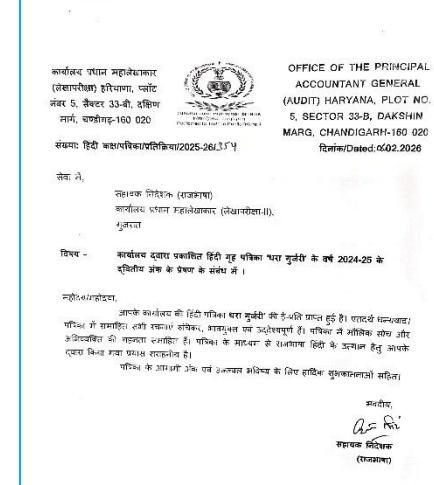
हर सैनिक खुद एक सेना,
सब गाते सैनिकों का गुणगान,
प्राणों की आहुति को सदा ही तत्पर,
मेरा भारत मेरा अभिमान।

इतिहास गवाह और इसकी गाथा,
हर मजहब है इसका माथा,
सदा बढ़े कर माथा ऊँचा और सीना तान,
मेरा भारत मेरा अभिमान।

एक बात, एक जज़्बात,
एक राह, एक निगाह,
कदम मिलाकर बढ़ते जाएँ,
आओ भारत को जग-सिरमौर बनाएँ।

हिमालय का ताज, इसका नाज़,
भारतीयों का वतन और उन्हीं का चमन,
शीश झुका कर सब करते नमन,
चूमे तिरंगा ज़मीन-आसमान,
गर्व से कहो भारत महान,
मेरा भारत मेरा अभिमान।

धरा गुर्जरी के वर्ष 2025-26 के द्वितीय अंक के संबंध में विभिन्न कार्यालयो से प्राप्त प्रतिभाव व प्रशंसा पत्र हेतु सभी कार्यालयों का सह्रदय धन्यवाद एवं आभार ।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट
नंबर 5, सैक्टर 33-बी, दक्षिण
मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT) HARYANA, PLOT NO.
5, SECTOR 33-B, DAKSHIN
MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/35५

दिनांक/Dated: 06.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
गुजरात

विषय - **कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'धरा गुर्जरी' के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक के प्रेषण के संबंध में ।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **धरा गुर्जरी** की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक, कार्यकुशल एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका ने मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की सशक्त झलक प्रस्तुत की है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग
एम.जी. रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001

OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
M.G Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदी/सम्पर्क/35/पत्रिका से संबंधित पत्राचार/2021/635

दिनांक: 05.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
गुजरात, अहमदाबाद - 380 009.

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका - **धरा गुर्जरी** के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की पावती के संबंध में।

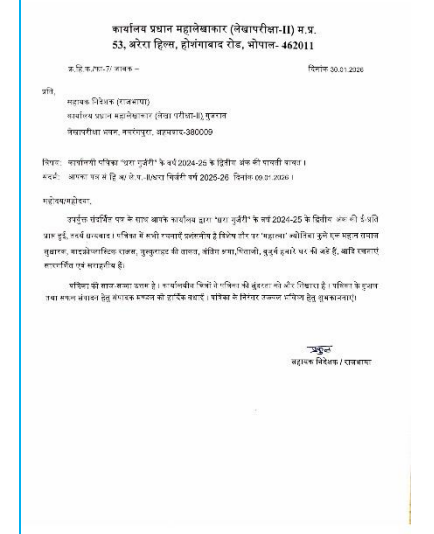
महोदया/महोदय,

कार्यालय शिक्षण एवं राज भाषा के हि.प्र.से.प. - II/धरा-गुर्जरी/वर्ष 2025-26, दिनांक 04.01.2026 द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - **धरा गुर्जरी** के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की ई-प्रति हमें प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का शीर्षक आकर्षक आवरण आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं जानकारीप्रद, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल सदस्यों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - **धरा गुर्जरी** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क.हि.क.पत्र-7/ जनवरी –

दिनांक 30.01.2026

प्रति,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-II), गुजरात
लेखापरीक्षा भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009

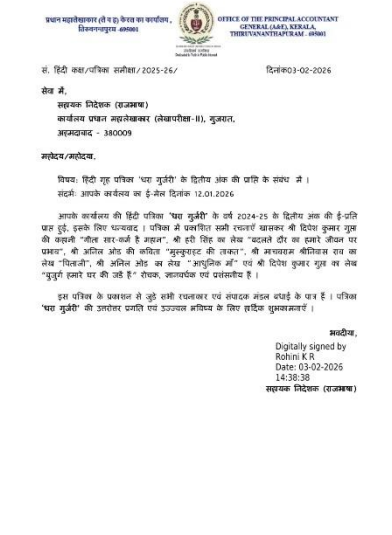
विषय: वार्षिकी पत्रिका 'धरा गुर्जरी' के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की पावती भेजना।
संदर्भ: आपका पत्र सं हि.अ.से.प.-II/धरा पत्रिकी/ वर्ष 2025-26 दिनांक 09.01.2026।

महोदया/महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा 'धरा गुर्जरी' के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, हर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ उत्साहवर्धक है विशेष तौर पर 'महात्मा' श्रीविजा कुले एक महान समाज सुधारक, बाह्यप्रेमाश्रित राखल, तुलसीदास की वाणी, संविता शर्मा, पिताजी, कुलदीप सेंगर की रचनाएँ, आदि रचनाएं ज्ञानवर्धित एवं मार्गदर्शक है।

पत्रिका की सफल सज्जा प्रशंसनीय है। कार्यालयीन चित्रों से पत्रिका की खूबसूरती और निखार है। पत्रिका के सुचारु तथा सफल संचालन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। शीर्षक के नियमित उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

सहायक निदेशक / राजभाषा



प्रधान महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम -695001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/ 2025-26/

दिनांक03-02-2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), गुजरात,
अहमदाबाद - 380009

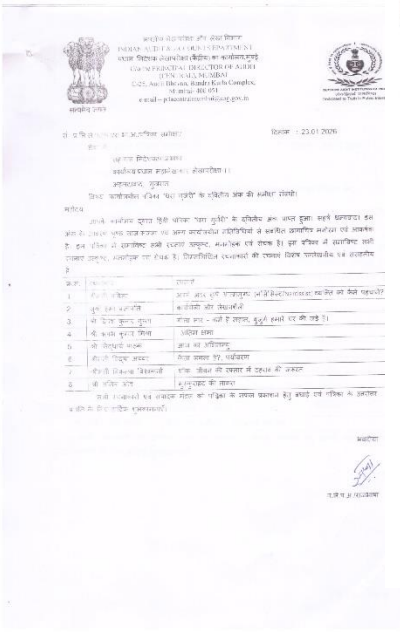
महोदय/महोदया,

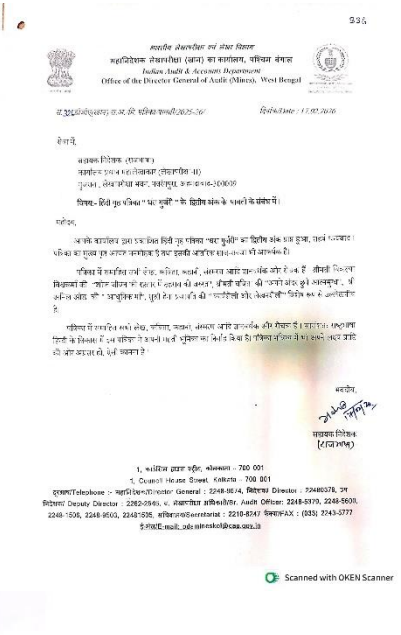
विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'धरा गुर्जरी' के द्वितीय अंक की प्राप्ति के संबंध में ।
संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 12.01.2026

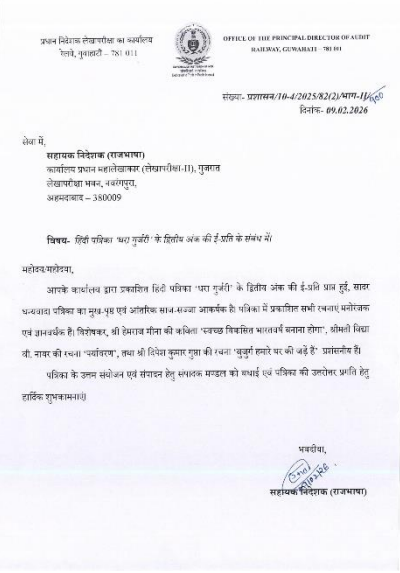
आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'धरा गुर्जरी'** के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री दिपेश कुमार गुप्त की कहानी "नील स्वर-वर्ण है मगन", श्री हरी सिंह का लेख "बदलते दौर का हमारे जीवन पर प्रभाव", श्री अनिल ओठ की कविता "मुल्कुगढ़ की ताकत", श्री मत्यमय श्रीनिवास राव का लेख "पितजी", श्री अनिल ओठ का लेख "आधुनिक माँ" एवं श्री दिपेश कुमार गुप्त का लेख "मुझमें हमारे घर की जड़ें हैं" रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

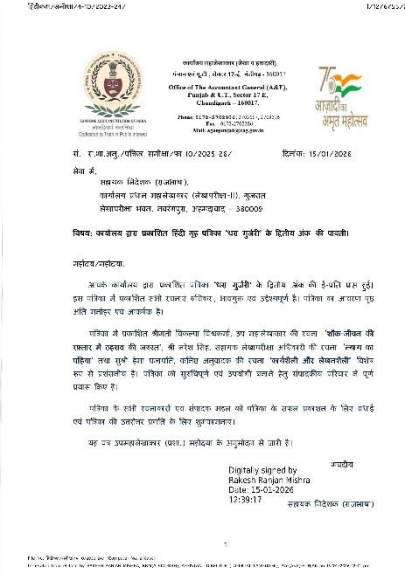
इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका **'धरा गुर्जरी'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,
Digitally signed by Rohini K R
Date: 03-02-2026 14:38:38
सहायक निदेशक (राजभाषा)









सं/हिंदी अनुभाग/वाह्यपत्रिका ऑपरप्रतिक्रिया//2022-23 I/1291972/2026

कार्यालय- मह्यलेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, मह्यराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001
सं.हि.अनु./म.ले.प.(ले.प.-II)/प्रतिक्रिया/20/2025-26/ज.क्र. दिनांक: 30/01/2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II),
गुजरात अहमदाबाद

विषय:- हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री नरेश सिंह स.ले.प.अ. का लेख 'न्याय का पहिया', श्री ऋषभ कुमार मिश्रा, ले.प. की कविता 'अंतिम क्षमा', श्री सिद्धार्थ पाठक, आशुलिपिक की कविता 'अपूरापन', आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उप मह्यलेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीया,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 30-01-2026
11:20:34

सहायक निदेशक/राजभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे, गोरखपुर-273012
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
Railway, Gorakhpur-273012

सं.प्रशा./10-4/पारिजात/01/19/660 दिनांक- 18.03.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
गुजरात, अहमदाबाद- 380009

विषय- कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च कोटि की एवं सारगर्भित हैं। पत्रिका में प्रकाशित श्री सतीश गणाजी वाघ'निक', वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशा. महोदय का लेख "महात्मा ज्योतिबा फुले एक महान समाज सुधारक", धीमती विकल्पा चिंचकर्षा, उपमहालेखाकार महोदया का लेख "शौक-जीवन की रफ्तार में ठहराव की जरूरत" एवं सुश्री हेमा प्रजापति का लेख "कार्यशैली और लेखनशैली", श्री हरि सिंह का लेख "बदलते दौर का हमारे जीवन पर प्रभाव" एवं श्री विनय कुमार का लेख "बायोमेट्रिक" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की अधिकाधिक प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)



माधवपुर मेला

गुजरात के पोरबंदर जिले से लगभग 60 किमी दूर तटीय गांव माधवपुर में आयोजित **यह मेला** भगवान कृष्ण और रुक्मिणी के पौराणिक विवाह का एक भव्य सांस्कृतिक उत्सव है। यह मेला **चैत्र सुद नोम (राम नवमी)** से शुरू होकर पांच दिनों तक चलता है, जो अरुणाचल प्रदेश की मिसमी जनजाति (रुक्मिणी के मायके) और गुजरात (कृष्ण की कर्मभूमि) के बीच 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की अनूठी एकता का प्रतीक है। लोक मान्यताओं के अनुसार, विदर्भ की राजकुमारी रुक्मिणी ने कृष्ण को अपना वर चुना था, लेकिन उनके भाई रुक्मी इसके खिलाफ थे। कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया और माधवपुर में उनसे विवाह किया, जिसे 'राक्षस विवाह' के रूप में जाना जाता है, लेकिन यह प्रेम और आस्था से जुड़ा है। माधवपुर में **माधवराय मंदिर (15वीं-16वीं शताब्दी)** इस दिव्य विवाह का ऐतिहासिक प्रतीक है। यह मेला अरुणाचल प्रदेश की मिसमी जनजाति को रुक्मिणी के मायके के रूप में सम्मानित करता है और हर साल पूर्वोत्तर से लेकर गुजरात तक के सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अनूठा उत्सव मनाता है। यह मेला न केवल धार्मिक आस्था का, बल्कि भारतीय संस्कृति और पूर्व-पश्चिम भारत के गहरे ऐतिहासिक संबंधों का जीवंत उदाहरण है।



रोगन कला

रोगन कला एक प्राचीन चित्रकला शैली है जिसका अभ्यास भारत के गुजरात राज्य के कच्छ क्षेत्र में 300 वर्षों से अधिक समय से किया जा रहा है। रोगन शब्द फारसी भाषा से आया है, जिसका अर्थ है "पराग" या "तेल"। यह रोगन कला के मूल तत्व को दर्शाता है—प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त तेल-आधारित रंगों का उपयोग। जटिल पैटर्न में अक्सर फूलों के रूपांकन, पशु और स्थानीय लोक कला के तत्व शामिल होते हैं । रोगन पेंटिंग अरंडी के तेल और वनस्पति रंगों से बनता है। तेल को कई घंटों तक गर्म करके उबाला जाता है जब तक कि वह गाढ़ा होकर चिपचिपा पेस्ट न बन जाए। ठंडा होने के बाद, इस पेस्ट को प्राकृतिक रंगों के साथ मिलाकर रोगन कला के विशिष्ट चमकीले रंग तैयार किए जाते हैं।कलाकार स्टाइलस को रोगन पेस्ट में डुबोते हैं और सावधानीपूर्वक कपड़े पर पतले, धागे जैसे रंग की लकीरें बनाते हैं। डिज़ाइन बिना किसी प्रारंभिक रेखाचित्र या रूपरेखा के, मुक्त हाथ से बनाए जाते हैं।